रूस की लोक कथाऐं–4

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Roos Ki Lok Kathayen-4 (Folktales of Russia-4)
Cover Page picture: Kremlin Star, Moscow
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Russia

विंडसर, कैनेडा
फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
रूस की लोक कथाऐं–4 5
1 दुखी बोगोटिर 7
2 दिमियॉ किसान 19
3 सोने का पहाड़ 22
4 पिता पाला 32
5 सोने के अंडों वाली बतख की कहानी 40
6 बेवकूफ इमैल्यान 58
7 ल्युबिम ज़ारेविच और पंखों वाला भेड़िया 82
8 किसान के बेटे इवान की कहानी 101
9 सीधा आदमी और उसकी चालाक पत्नी 117
10 शैम्याका का न्याय 127
11 सोने की चाभी वाले राजकुमार पीटर और राजकुमारी मैगिलैन की कहानी 133

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2018

रूस की लोक कथाऐं–4

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। इस तरह एशिया संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते है जनसंख्या में दो देश – चीन और भारत और क्षेत्रफल में रूस। चीन अकेले की जनसंख्या **1355** मिलियन से ज़्यादा है।

सारा रूस देश बहुत ठंडा है पर इसका उत्तरी हिस्सा तो बहुत ही ज़्यादा ठंडा है। इसका उत्तरी हिस्सा टुण्ड्रा[1] कहलाता है और इसके साइबेरिया[2] नाम के क्षेत्र में आता है। यहॉ के कोणधारी वन बहुत मशहूर हैं। रूस की पूरी आबादी केवल **40** मिलियन है और साइबेरिया की जनसंख्या तो बहुत ही कम है।

इस देश में **9** समय के क्षेत्र हैं यानी इसके पूर्वी और पश्चिमी सीमा के समय में **9** घंटे का अन्तर रहता है। जैसे कैनेडा में **5** घंटे का अन्तर है और उत्तरी अमेरिका में **4** घंटे का। इसकी दूसरी ख़ास बात यह है कि इस देश में सब तरह की जलवायु पायी जाती है सिवाय उष्ण जलवायु[3] के। वह भी इसलिये कि इसका कोई हिस्सा उष्ण जलवायु के क्षेत्र में नहीं आता।

रूस के तीन मुख्य शहर हैं – मास्को, सेन्ट पीटर्सबर्ग और व्लाडीवोस्टक[4]। इसमें दो नदियॉ बहुत प्रसिद्ध हैं – यूराल और वोल्गा। यूराल नदी यूराल पहाड़ से निकलती है और उत्तर में आर्कटिक सागर में जा कर गिरती है।[5] वोल्गा नदी यूरोप से आती है और रूस के काफी बड़े हिस्से से गुजरती हुई कैस्पियन सागर में गिर जाती है। इसमें दो मुख्य पहाड़ हैं – यूराल पर्वत और अल्टाई पर्वत। इसमें एक बहुत पुरानी मुख्य रेलवे लाइन जाती है जिसका नाम है ट्रान्स साइबेरियन रेलवे[6]। यह पूर्व से ले कर पश्चिम तक पूरे साइबेरिया में जाती है। यह दुनियॉ की सबसे लम्बी रेलवे लाइन है। यहॉ पेट्रोल बहुत होता है जिसको रूस पूरे यूरोप को बेचता है।

तुम सोच रहे होगे कि रूस तो उत्तरी अमेरिका से बहुत दूर है पर ऐसा नहीं है। उत्तरी अमेरिका की एक स्टेट अलास्का जो कैनेडा देश के सुदूर पश्चिम में है और रूस का सुदूर पूर्वी किनारा जो अलास्का के पास है उनमें आपस में सबसे कम दूरी केवल ढाई मील है। इस तरह से रूस और उत्तरी अमेरिका तो दो गॉवों से भी ज़्यादा पास हैं।

---

[1] Tundra

[2] Siberia – is a district of Russia and its a region too which stretches from its Ural River in the West to Mongolia in the East.

[3] Tropical Climate

[4] (1) Moscow is the capital. (2) St Petersburg (later known as Petrograd and Leningrad) is a port city on Baltic Sea. It is a European kind of most modern city of Russia. (3) Vladivostok

[5] Ural River comes out from Ural Mountains and falls in Arctic Sea in North.

[6] Trans-Siberian Railway is a network of railways connecting Moscow with the Russian Far East and the Sea of Japan. With a length of 5,772 miles (9,289 kms), it is the longest railway line in the world. There are connecting branch lines into Mongolia, China and North Korea. It has connected Moscow with Vladivostok since 1916, and is still being expanded.

रूस की लोक कथाओं के तीन संकलन हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं – "रूस की लोक कथाऐं–**1**" "रूस की लोक कथाऐं–**2**" और "रूस की लोक कथाऐं–**3**"। हमको तुम सबको यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि वे तीनों ही संकलन तुम सबको बहुत पसन्द आये और वे बहुत लोकप्रिय हुए। इसी से उत्साहित हो कर हम रूस की लोक कथाओं का यह चौथा संकलन "रूस की लोक कथाऐं–**4**" प्रकाशित कर रहे हैं। हमें पूरी आशा है कि पिछले दोनों संकलनों की तरह से यह संकलन भी तुम सब लोगों को बहुत पसन्द आयेगा और रूस के बारे में तुम्हारी जानकारी बढ़ायेगा।

संसार के सात महाद्वीप

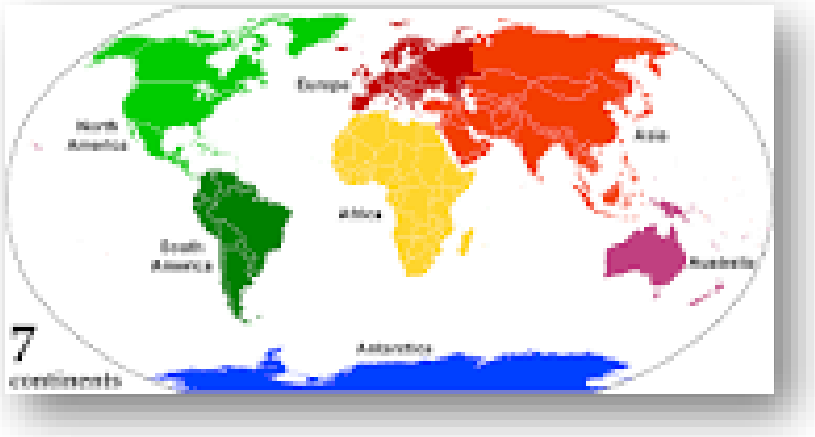

1 दुखी बोगोटिर[7]

एक बहुत छोटे से गॉव में, बस मुझसे यह मत पूछो कि कहॉ पर, पर रूस में ही, दो भाई रहते थे। इनमें से एक भाई अमीर था और दूसरा भाई गरीब था।

अमीर भाई की किस्मत अच्छी थी वह जो कोई भी काम करता उसको उसी में कामयाबी मिलती और उसको फायदा होता। जबकि गरीब भाई कितनी मुश्किलों से कोई काम करता पर उसको उसमें कुछ हासिल नहीं होता।

इस तरह से अमीर भाई और अमीर होता जा रहा था और अब वह एक अमीर आदमियों वाले शहर में चला गया था वहॉ उसने एक बड़ा मकान भी खरीद लिया था।

गरीब भाई अभी भी गरीब था और इतना गरीब था कि अक्सर उसके केबिन में डबल रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं होता था। उसके बच्चे बेचारे बहुत ही दुखी से खाने के लिये चिल्लाते रहते थे।

[7] Woe Bogotir – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap05.htm
From the Book “Folk Tales from the Russian”, by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales.

एक दिन गरीब भाई का धीरज छूट गया और वह अपनी बदकिस्मती की बड़े ज़ोर ज़ोर से रो कर शिकायत करने लगा कि वह अब क्या करे। असल में अब उसकी सारी हिम्मत टूट गयी थी और उसका सिर उसकी छाती पर लटक गया था।

सो एक दिन उसने अपने अमीर भाई के घर जाने का और उससे कुछ सहायता माँगने का फैसला किया। वह उसके घर गया और उससे बोला — "भाई मेरे ऊपर दया करो। क्योंकि अब मेरे पास बिल्कुल भी पैसे नहीं है।"

अमीर भाई बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। हम लोग कुछ ऐसे काम जरूर कर सकते हैं। हमारे पास पैसा है। पर देखो करने के लिये काम भी बहुत है। तुम मेरे घर पर ही रहो और मेरे काम में मेरा हाथ बॅटाओ।"

गरीब भाई राजी हो गया "ठीक है।" कह कर उसने तुरन्त ही अपने अमीर भाई के घर में काम करना शुरू कर दिया। वह उसका बड़ा सा मैदान साफ करता उसके घोड़ों की देखभाल करता कुॅए से पानी खींच कर लाता और लकड़ी काटता।

काम करते करते उसे एक हफ्ता बीत गया, दो हफ्ते बीत गये। तब उसके भाई ने उसको पच्चीस कोपैक्स[8] दिये। जिसका

[8] Copeck is a monetary unit of Russia and some other countries of the former Soviet Union, equal to one hundredth of a ruble – which means only 13 cents.

मतलब था केवल तेरह सैन्ट। उसने उसको काली राई[9] की एक डबल रोटी भी दी।

गरीब भाई ने उसे ले लिया और नम्रतापूर्वक बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहॉ से अपने बदकिस्मत घर को जाने ही वाला था कि अमीर भाई की आत्मा कचोट उठी और उसने अपने गरीब भाई को वापस बुलाया और कहा — "अरे इतनी जल्दी भी क्या है। कल मेरा जन्मदिन है दावत खा कर जाना।"

यह सुन कर गरीब भाई रुक गया। पर इस खुशी के मौके पर भी उस बदकिस्मत की किस्मत अच्छी नहीं निकली। उसका अमीर भाई अपने मेहमानों और तारीफ करने वालों के स्वागत में बहुत ज़्यादा व्यस्त था जो आते जा रहे थे और कहते जा रहे थे कि वह कितना अच्छा था और वे उसको कितना प्यार करते थे।

अमीर भाई उन सबको उनके प्यार के लिये धन्यवाद दे रहा था और बहुत नीचे झुक झुक कर उन सबको खाने पीने और आनन्द करने के लिये कह रहा था।

पर उसके पास अपने भाई के लिये कोई समय नहीं था।

जब अमीर भाई ने उसको बिल्कुल ही अनदेखा कर दिया तो गरीब भाई एक कोने में जा कर बैठ गया। उसको न खाने के लिये पूछा गया और न पीने को।

[9] Rye is a kind of grain which is used to make bread etc.

जब सारी भीड़ जाने के लिये तैयार हुई तो जाने से पहले उन खुश लोगों ने अपने मेजबान को सिर झुकाया और बहुत अच्छी अच्छी बातें कहीं। तो गरीब भाई ने भी ऐसा ही किया। बल्कि उसने उन लोगों से भी ज़्यादा नीचा सिर झुकाया और अपने अमीर भाई को और ज़्यादा धन्यवाद दिया।

मेहमान लोग अपनी अपनी किसानों वाली गाड़ियों में बैठ कर गाते हुए अपने अपने घर चले गये। गरीब भाई भूखा और दुखी अपने रास्ते चल दिया कि तभी उसके दिमाग में एक विचार आया।

"क्या हो अगर मैं भी खुशी का गीत गाऊँ। लोग सोचेंगे कि मैंने भी अपने भाई के घर में कुछ अच्छा समय गुजारा और मैं भी अब अपने घर खुशी खुशी जा रहा हूँ।"

उसने अपना गाना शुरू किया ही था कि वह तो बेहोश हो कर नीचे गिरने ही वाला था क्योंकि उसने अपने पीछे साफ साफ अपनी ही धुन किसी दूसरे की आवाज में चीखने की आवाज में सुनी।

उसने तुरन्त ही अपना गाना रोक दिया तो उस आवाज ने भी गाना रोक दिया। उसने फिर गाना शुरू किया तो उस आवाज ने भी गाना शुरू कर दिया।

गरीब भाई अपने बराबर में देख कर चिल्लाया — "कौन है वहाँ, तुरन्त बाहर आओ।"

"हा हा हा हा।" एक राक्षस[10] वहॉ फटे कपड़े पहने प्रगट हुआ पतला सा पीला सा बिल्कुल एक ढॉचे जैसा।

वह बेचारा गरीब आदमी उसे देख कर डर गया पर हिम्मत से उसने क्रास का निशान बनाया और बोला — "तू कौन है?"

वह बोला — "मैं "बहुत ज़्यादा दुखी"[11] हूॅ। मैं एक रूसी हीरो हूॅ। मेरा नाम दुखी बोगोटिर[12] है। मैं सब कमजोर लोगों पर दया करता हूॅ। मुझे तुझ पर भी दया आती है। मैं चलते चलते तेरी भी सहायता करूॅगा।"

"ठीक है ओ बहुत ज़्यादा दुखी। चलो हम लोग एक दूसरे की बॉह में बॉह डाल कर चलते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है इस दुनियॉ में मेरा और कोई दोस्त ही नहीं है।"

राक्षस हॅस कर बोला — "चल सवारी करते हैं ओ भले आदमी। मैं हमेशा तेरा वफादार साथी रहूॅगा।"

"धन्यवाद पर हम सवारी किस पर करेंगे?"

"मुझे तेरा तो पता नहीं कि तू किस पर सवार होगा पर मैं तुझ पर सवारी करूॅगा।" कह कर वह उस बदकिस्मत आदमी के कन्धों पर बैठ गया।

अब उस बेचारे गरीब आदमी के अन्दर तो ताकत ही नहीं थी कि वह उसको अपने कन्धे पर से उतार फेंके। वह बेचारा बहुत

[10] Translated for the word "Monster"
[11] Translated for the words "Bitter Woe"
[12] Woe Bogotir

ज़्यादा दुखी को अपने कन्धे पर बिठा कर अपने रास्ते पर रेंगता हुआ सा चलता रहा।

वह गरीब आदमी तो बेचारा बहुत धीरे से चल पा रहा था पर बहुत ज़्यादा दुखी गाता हुआ सीटी बजाता हुआ उसको चाबुक मारता हुआ चला जा रहा था।

जब भी गरीब आदमी एक लम्बी साँस भरता तो बहुत ज़्यादा दुखी पूछता — "मास्टर इतने दुखी क्यों हो। मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें एक गीत सिखाता हूँ। यह मेरा बहुत प्यारा छोटा सा गीत है —

मैं बहादुर बहुत ज़्यादा दुखी हूँ मैं बहादुर बहुत ज़्यादा दुखी हूँ
जो मेरे साथ रहता है उसके दुख उसके काबू में रहते हैं
और जब पैसा नहीं होता तो मैं उसके लिये सोना ढूँढ लेता हूँ

ध्यान रखना मास्टर। तुम्हारे पास पच्चीस कोपैक्स हैं। चलो चल कर थोड़ी सी शराब खरीदते हैं। थोड़ा सा आनन्द मनाते हैं।"

गरीब आदमी ने उसकी बात मान ली। वे गये और उन्होंने सारे पैसों की शराब खरीद ली। शराब पीने के बाद यह बदकिस्मत आदमी बहुत ज़्यादा दुखी को अपने कन्धे पर लादे लादे अपने घर आया।

घर में उसकी पत्नी दुखी थी। उसके बच्चे भूखे थे और रो रहे थे। पर वह बहुत ज़्यादा दुखी और शराब के असर में गा रहा था और नाच रहा था।

अगले दिन बहुत ज़्यादा दुखी ने एक लम्बी सॉस भरी और बोला — "मुझे पीने की इच्छा हो रही है चलो चल कर पीते हैं।"

गरीब आदमी बोला — "पर मेरे पास पैसे नहीं है।"

"क्या तुम मेरा बताया गीत भूल गये हो? चलो तुम्हारे खेती के यन्त्र बेच कर उनके पैसे से शराब पीते हैं और कुछ अच्छा समय बिताते हैं।"

"ठीक है।"

बेचारा गरीब आदमी उसको मना करने की हिम्मत भी नहीं कर सका और सबसे ज़्यादा दुखी बोगोटिर उसका मालिक बन बैठा। वे एक शराब की दूकान पर गये वहॉ जा कर शराब पी गाया और कुछ समय अच्छे से गुजारा।

अगले दिन सबसे ज़्यादा दुखी ने फिर एक लम्बी सॉस भरी ओर बोला "चलो चल कर पीते हैं। कुछ समय अच्छे से बिताते हैं। अबकी बार हम अपने आपको छोड़ कर सब बेच देते हैं।"

गरीब आदमी ने समझ लिया कि बस अब तो अपनी बरबादी ही है सो उसने सबसे ज़्यादा दुखी को धोखा देने का निश्चय किया।

सो वह बोला — "मैंने एक बार अपने बड़े बूढ़ों से सुना था कि गॉव के पीछे घने जंगल के पास एक खजाना गड़ा है। पर वह खजाना एक बहुत बड़े भारी पत्थर के नीचे दबा है। वह पत्थर इतना भारी है कि एक आदमी से तो हिल भी नहीं सकता।

अगर हम दोनों मिल कर उस पत्थर हटाने में कामयाब हो जायें यानी तुम और मैं तो ओ सबसे ज़यादा दुखी बोगोटिर तो हम उस पैसे से खूब पी सकते हैं और अच्छा समय गुजार सकते हैं।"

बोगोटिर चिल्लाया — "चलो चलो जल्दी करो। सबसे ज़्यादा दुखी तो अभी इतना ताकतवर है कि पत्थर हटाने से भी ज़्यादा मुश्किल काम कर सकता है।"

सो वे गॉव के पीछे एक चौराहे की तरफ गये तो वहॉ जा कर उन्होंने एक बहुत बड़ा पत्थर देखा। वह पत्थर इतना भारी लग रहा था कि उसको हिलाने के लिये कम से कम पॉच छह किसान तो चाहिये। पर हमारे गरीब आदमी ने अपने साथी बहुत ज़्यादा दुखी बोगोटिर की सहायता से उसको तुरन्त ही हटा लिया।

पत्थर हटा कर उन्होंने उसके नीचे देखा तो उसके नीचे एक गड्ढा था – अॅधेरा गहरा गड्ढा। उस गड्ढे की तली में कुछ चमक रहा था।

किसान ने दुखी से कहा — "ओ बहादुर दुखी अब तुम इसके अन्दर कूदो और इसका सोना मुझे बाहर निकाल कर फेंको। तब तक मैं पत्थर पकड़ता हूॅ।"

दुखी गड्ढे के अन्दर कूद गया और फिर बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "मैं बता रहा हूॅ मास्टर कि सोने का तो यहॉ कोई अन्त ही नहीं है। यहॉ तो सोने से भरे बीस से भी ज़्यादा बरतन हैं।" और दुखी ने एक बरतन उस गरीब आदमी को पकड़ा दिया।

गरीब आदमी ने जल्दी से वह बरतन दुखी से लिया और अपने कमीज के अन्दर छिपा लिया और वह भारी पत्थर उसकी पुरानी जगह खिसका दिया।

इस तरह वह सबसे ज़्यादा दुखी उस गड्ढे के अन्दर ही रह गया और किसान ने सोचा कि मेरे साथी के लिये यही जगह ठीक है क्योंकि ऐसे साथी के साथ तो सोना भी कड़वा लगेगा।

सो उस चालाक आदमी ने क्रास का निशान बनाया और जल्दी जल्दी वहॉ से घर की तरफ चल दिया।

अब तो वह एक नया आदमी बन गया था हिम्मतवाला नम्र और मेहनती। उसने अब फलों का एक बागीचा खरीद लिया था। अपना घर भी नया करवा लिया था। और एक नया व्यापार भी शुरू कर दिया था।

अब वह बहुत कामयाब हो गया था। एक साल के अन्दर अन्दर उसने बहुत पैसा कमा लिया था। पुरानी झोंपड़ी की जगह अब उसने एक नया केबिन बनवा लिया था।

एक सुन्दर दिन वह अपने भाई के बारे में जानने के लिये अपनी पत्नी और बच्चों के साथ शहर गया ताकि वह उसको अपने घर उस दावत में बुला सके जो वह अपने नये घर में देने वाला था।

अमीर भाई बोला — "यह तो कुछ मजाक सा लगता है। ओ बेवकूफ जेब में एक रूबल के बिना भी तू अमीरों की नकल करता है।" और यह कह कर उसका अमीर भाई हॅसता रहा हॅसता रहा।

पर वह साथ में यह भी सोचता रहा कि उसके गरीब भाई के साथ ऐसा कैसे हुआ कि वह इतनी जल्दी अमीर बन गया सो वह तुरन्त ही अपने गरीब भाई के नये घर गया।

उसको तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसका वह गरीब भाई तो बहुत अमीर हो गया था। शायद उससे भी ज़्यादा। उसके घर की हर चीज़ में पैसा बोल रहा था।

गरीब भाई ने अपने अमीर भाई और उसके परिवार का बहुत ही नम्रता से स्वागत किया और बहुत अच्छी तरह से खातिरदारी की। उसने उनको बहुत अच्छा खाना खिलाया और शहद पीने को दिया। सब लोग बहुत देर तक बातें करते रहे।

गरीब भाई ने दुखी के बारे में अपने अमीर भाई को सब बता दिया कि उसने कैसे उसको धोखा देने का निश्चय किया था और फिर कैसे उस बोझे से बच कर वह एक खुश आदमी बना।

यह सब सुन कर अमीर भाई की उत्सुकता बढ़ती गयी। उसने सोचा "क्या वह बेवकूफ है कि इतने सारे बरतनों में से वह केवल एक ही बरतन ले कर आया। वह तो वाकई बेवकूफ है बिल्कुल ही बेवकूफ। अगर किसी के पास पैसा है तो वह दुखी भी बुरा नहीं है।"

सो तुरन्त ही उसने उस पत्थर की खोज में जाने का, उसको हटाने का, सारे खजाने को लेने का और दुखी बोगोटिर को अपने भाई के पास वापस भेजने का विचार बनाया।

जितना जल्दी इसको सोचा गया उससे कहीं ज़्यादा जल्दी कर लिया गया। अमीर भाई ने अपने गरीब भाई को विदा कहा और वहॉ से चला गया।

पर वहॉ से वह अपने घर नहीं गया वह जल्दी से पत्थर की तरफ भागा। उसको पत्थर तो मिल गया पर उसको हटाने के लिये उसको बहुत मेहनत करनी पड़ी।

जैसे ही उसने उसको बहुत थोड़ा सा हटाया कि उसने तुरन्त ही उसके नीचे देखा। लगा कि दुखी बोगोटिर उसका इन्तजार ही कर रहा था वह कूद कर बाहर आ गया और उसके कन्धे पर बैठ गया।

अमीर आदमी को वह बोझ लगा तो उसके मुॅह से निकला "ओह कितना भारी बोझ है।" तो देखा तो उस राक्षस को अपने कन्धे पर बैठा पाया।

वह राक्षस उसके कान में फुसफुसा रहा था "तू तो बहुत होशियार निकला। तू मुझे उस गड्ढे में मरने के लिये छोड़ गया। पर अब मेरे प्यारे अबकी बार तू मुझसे छुटकारा नहीं पा सकता। अब हम साथ साथ रहेंगे।"

अमीर आदमी बोला — "ओ बेवकूफ दुखी, वह मैं नहीं था जो तुझे इस पत्थर के नीचे छोड़ गया था वह तो मेरा भाई था तू उसी के पास जा।"

पर नहीं वह दुखी तो उसके भाई के पास नहीं जायेगा। वह राक्षस तो बस फिर हॅसता ही रहा हॅसता ही रहा। उसने अमीर आदमी से कहा — "एक ही बात है। अब से हम एक दूसरे के साथी रहेंगे।"

अमीर आदमी उस बदकिस्मती देने वाले राक्षस का भारी बोझ उठाये हुए अपने घर चला गया। उस राक्षस की वजह से उसका सारा पैसा चला गया।

उसके भाई के सिवाय कौन जानता था कि उस दुखी से छुटकारा कैसे पाया जाये। और वह अब तक अमीर था।

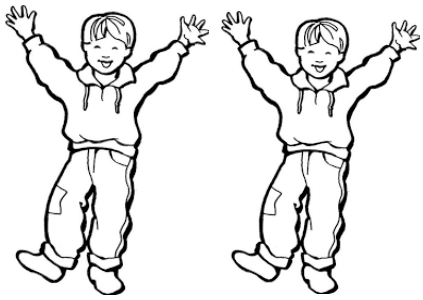

2 दिमियॉ किसान[13]

यह बहुत पहले की बात नहीं है, या कहो तो शायद बहुत पुरानी बात हो, मैं बहुत यकीन के साथ नहीं कह सकता पर रूस में कहीं पर एक गॉव में एक किसान रहता था – मूजिक[14]।

यह किसान बहुत जिद्दी था और इसको गुस्सा भी बहुत जल्दी आता था। इसका नाम था दिमियॉ। यह स्वभाव से ही बहुत कठोर स्वभाव का था और चाहता था कि सारे काम उसी की मरजी से हों और उसी तरह से हों जैसे वह चाहता हो।

अगर कोई उसके खिलाफ कुछ करता हो या कहता हो तो वह उसका जवाब अपने घूँसे से देने को तैयार रहता था। उदाहरण के लिये कभी कभी वह अपने पड़ोसी को बुलाता तो उसकी बहुत अच्छी अच्छी खाने पीने की चीज़ों से खातिरदारी करता।

पड़ोसी अपने पुराने रीति रिवाज निभाने के लिये उनको मना करने का बहाना करता तो दिमियॉ बस उससे लड़ पड़ता। वह उससे कहता कि उसको मेजबान का कहना मानना चाहिये।

एक बार एक बहुत ही चतुर आदमी उसके घर आया तो हमारे मूजिक दिमियॉ ने मेज पर अपने सबसे अच्छे खाने लगा दिये और

---

[13] Dimian the Peasant – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap07.htm
From the Book “Folk Tales from the Russian”, by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales.

[14] Moujik means peasant

अच्छा समय गुजारा। मेहमान ने भी उसका लगाया सारा सामान जल्दी जल्दी खा लिया।

दिमियॉ तो यह देख कर दंग रह गया पर वह उसको छोड़ने वाला थोड़े ही था। वह अपना नया काफ्तान निकाल लाया और अपने मेहमान से कहा — "तुम अपनी यह भेड़ की खाल उतार दो और लो मेरा यह नया काफ्तान पहन लो।"

जब वह उससे यह कह रहा था तो वह सोच रहा था "मैं इस बार शर्त लगाता हूॅ कि यह इसको स्वीकार करने की हिम्मत नहीं करेगा। और अगर इसने इसको वाकई स्वीकार नहीं किया तो फिर मैं इसको सबक सिखाता हूॅ।

पर उसके उस मेहमान ने तो तुरन्त ही उसका वह नया काफ्तान पहन लिया उसकी पेटी बॉध ली अपने घुॅघराले बालों वाला सिर हिलाया और बोला — "इस भेंट के लिये बहुत बहुत धन्यवाद चाचा जी। मैं इसको न लेने की हिम्मत कैसे कर सकता था। लोगों को अपने मेजबान का कहा तो मानना ही चाहिये।"

अन्दर ही अन्दर दिमियॉ का गुस्सा ऊपर चढ़ता जा रहा था। क्योंकि वह तो उसे अपने तरीके से ही व्यवहार करवाना चाह रहा था। मगर क्या करता।

वह तुरन्त ही अपने अस्तबल की तरफ दौड़ा वहॉ से अपना सबसे अच्छा घोड़ा निकाल कर लाया और अपने मेहमान से बोला — "तुम मेरी सारी चीज़ें ले सकते हो।"

पर मन में उसने सोचा "इस बार यह जरूर ही मना कर देगा तब मेरी बारी आयेगी।"

पर आश्चर्य उसने तो मना ही नहीं किया।

वह मुस्कुराते हुए बोला — "अपने घर में तो आप ही राजा हैं चाचा जी।" कह कर वह तुरन्त ही उस घोड़े पर कूद कर बैठ गया और दिमियॉ किसान पर चिल्ला कर बोला — "विदा मास्टर आपको किसी दूसरे ने जाल में नहीं फॉसा सिवाय आपने खुद ने।"

और यह कह कर वह वहॉ से चला गया। दिमियॉ उसके पीछे देखता रह गया। फिर बोला — "मैंने गलत आदमी पर निशाना लगाया।"

3 सोने का पहाड़[15]

एक बार की बात है कि एक सौदागर के बेटे ने काफी पैसा खर्च करके वहुत दिन तक बहुत आनन्द किया। पर फिर एक दिन ऐसा भी आया जब उसने देखा कि वह तो वरबाद हो गया है उसका तो सारा पैसा खर्च हो गया है। उसके पास तो अब खाने पीने के लिये भी पैसा नहीं है।

तब उसने एक फावड़ा उठाया और बाजार की तरफ चल दिया यह देखने के लिये कि शायद कोई उसको मजदूर की तरह ही काम पर रख ले।

एक अमीर घमंडी सौदागर जिसकी कई हजारों की हैसियत थी आदमी सुनहरी गाड़ी में वहॉ आया। उसको देखते ही बाजार में बैठे सब लोग इधर उधर भागने लगे और जा कर कोनों में छिप गये। केवल एक ही आदमी वहॉ बचा खड़ा था और वह था हमारे सौदागर का गरीब बेटा।

उस अमीर सौदागर ने जब उसको देखा तो बोला — "क्या तुम यहॉ काम ढूँढ रहे हो? चलो मैं तुमको काम पर रखता हूँ।"

"ठीक है। मैं यहॉ इसी लिये आया था।"

---

[15] The Golden Mountain – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap08.htm
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales.

"तुम क्या मजदूरी लोगे?"

"सौ रूबल[16] रोज के मेरे लिये काफी रहेंगे।"

"इतने ज़्यादा क्यों?"

सौदागर का बेटा बोला — "अगर ये पैसे आपको ज़्यादा लगते हैं तो कोई और आदमी देख लीजिये। यहॉ तो बहुत सारे लोग थे पर जब उन्होंने आपको आते देखा तो वे सब यहॉ से भाग गये।"

अमीर सौदागर बोला — "ठीक है कल बन्दरगाह पर आ जाना।"

अगले दिन सुबह सवेरे जब सौदागर का गरीब बेटा बन्दरगाह पर पहुॅचा तो वह अमीर सौदागर पहले से ही वहॉ मौजूद था और उसका इन्तजार कर रहा था।

वे लोग एक जहाज़ पर चढ़े और समुद्र में चल दिये। वे लोग काफी समय तक उस जहाज़ में चलते रहे। आखिर वे एक टापू पर आ गये। उस टापू पर बहुत ऊॅचे ऊॅचे पहाड़ थे।

किनारे के पास ही अपने सौदागर के गरीब बेटे को आग जलती दिखायी दी तो उसने अमीर सौदागर से कहा — "यह तो यहॉ पर आग सी दिखायी दे रही है।"

अमीर सौदागर बोला — "नहीं यह आग नहीं है। यह मेरा सोने का महल है।"

[16] Rouble is the currency of Russia

वे उस टापू पर उतर कर किनारे पर आये। तो देखो तो उस अमीर सौदागर की पत्नी तुरन्त ही उसका स्वागत करने के लिये उस महल से बाहर आयी। साथ में उमकी छोटी बेटी भी थी – बहुत सुन्दर। इतनी प्यारी जितनी कि तुम सोचना तो दूर सपने में भी न देख सको।

परिवार आपस में मिला और फिर सब महल के अन्दर चले गये। साथ में गया उनका नया काम करने वाला भी। वे सब एक ओक की मेज के चारों तरफ बैठे। वहॉ उन्होंने खाया पिया और सब बहुत खुश थे।

अमीर सौदागर ने कहा — "एक दिन कोई खास मायने नहीं रखता। आज छोड़ो कल से काम शुरू करेंगे।"

अपना नौजवान काम करने वाला एक सुन्दर और बहादुर आदमी था। वह देखने में एक शाही परिवार का लगता था सो अमरि सौदागर की बेटी उसको पसन्द करने लगी।

जब वह उस कमरे से गयी तो इशारे से उस नौजवान को अपने पीछे आने का इशारा करती गयी। उसका इशारा पा कर वह उसके पीछे पीछे चला गया।

उसने उसको एक पारस पत्थर और एक चकमक पत्थर[17] दिया और कहा — "लो ये ले लो। जरूरत पड़ने पर ये तुम्हारे काम आयेंगे।"

[17] She gave him one Touchstone and one Flint stone.

अगले दिन वह अमीर सौदागर अपने नये मजदूर के साथ एक ऊँचे सोने के पहाड़ पर गया। हमारे नौजवान आदमी ने देखा कि उस पहाड़ पर चढ़ने का तो छोड़ो रेंग कर जाना भी मुमकिन नहीं था।

अमीर सौदागर बोला — "हिम्मत के लिये हम थोड़ा सा कुछ पी लेते हैं।" कह कर उसने नौजवान को एक नींद लाने वाला पेय पीने के लिये दिया। नौजवान ने वह पी लिया और वह सो गया।

अमीर सौदागर ने एक तेज़ चाकू लिया एक घोड़े को मारा उसे काट कर खोला और उस नौजवान को और उसके फावड़े को उसके अन्दर रख दिया। फिर उसने घोड़े की खाल को सिल दिया और खुद वहीं पास की झाड़ी में छिप कर बैठ गया।

कुछ पल बाद ही वहॉ कौए आ गये – काले कौए जिनकी लोहे की चोंचें थीं। तुरन्त ही उन्होंने घोड़े को खाना शुरू कर दिया। घोड़े को खा कर वे सौदागर के बेटे को खाने ही वाले थे कि वह जाग गया।

उसने हाथ से कौओं को दूर भगाया चारों तरफ देखा और फिर ज़ोर से बोला "मैं कहॉ हूँ?"

अमीर सौदागर जो नीचे खड़ा था बोला — "तुम एक सोने के पहाड़ पर हो। अपना फावड़ा उठाओ और सोना खोदो।"

नौजवान ने अपना फावड़ा उठाया और सोना खोदना शुरू कर दिया। जितना भी सोना उसने खोदा सब उसने नीचे फेंक दिया। अमीर सौदागर ने उसे उठा कर अपनी गाड़ियों में भर लिया।

बाद में मास्टर चिल्लाया — "बस काफी हो गया। तुम्हारी सहायता के लिये धन्यवाद। अब विदा।"

"और अब मैं उतरूँगा कैसे?"

"जैसे भी तुमको खुशी हो। वहाँ पर अब तक तुम्हारे जैसे निन्यानवे लोग मर चुके हैं। तुम्हारे साथ अब उन मरने वालों की गिनती सौ हो जायेगी।" कह कर वह घमंडी अमीर सौदागर वहाँ से चला गया।

गरीब सौदागर के बेटे ने सोचा "अब मैं क्या करूँ। यहाँ से नीचे जाना तो नामुमकिन है पर अगर मैं यहाँ ठहर गया तब तो मैं मर ही जाऊँगा और वह भी बड़ी बेरहम मौत से – भूख से।"

और हमारा नौजवान वहीं उस सोने के पहाड़ पर ही खड़ा रह गया। उसके सिर के ऊपर अभी भी वे काले कौए मँडरा रहे थे – वे काले कौए जिनकी लोहे की चोंच थी। उनको ऐसा लग रहा था कि उनका शिकार अभी भी वहाँ मौजूद था।

फिर उस नौजवान ने सोचना शुरू किया कि यह सब हुआ कैसे। तब उसे याद आयी वह सुन्दर लड़की और उसका कहा हुआ जब उसने उसको पारस पत्थर और चकमक पत्थर दिये थे। उसे यह

भी याद आया कि उसने ये शब्द कैसे कहे थे — "लो ये ले लो। जरूरत पड़ने पर ये तुम्हारे काम आयेंगे।"

मुझे लगता है कि उस समय उसके दिमाग में जरूर कुछ होगा। उनको इस्तेमाल करके देखता हूँ।

सो गरीब सौदागर के बेटे ने पारस पत्थर निकाला और चकमक पत्थर निकाला। उन दोनों को एक बार मारा कि उनमें से दो बहादुर आदमी उसके सामने खड़े हुए थे।

उन्होंने उससे पूछा — "तुम्हारी क्या इच्छा है। तुम्हारा क्या हुकुम है।"

"मुझे इस पहाड़ से नीचे समुद्र के किनारे ले चलो।" तुरन्त ही उन्होंने उसको उठाया और सँभाल कर नीचे ले आये।

अब हमारा हीरो समुद्र के किनारे चक्कर काट रहा था कि तभी उसने एक जहाज़ उस टापू की तरफ आते देखा। जब वह जहाज़ टापू की तरफ आया तो उसने उस जहाज़ के लोगों से कहा — "ओ भले लोगों मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

उन्होंने कहा — "हमारे पास रुकने का समय नहीं है।" और वे अपना जहाज़ खेते हुए वहाँ से चले गये।

तभी बहुत ज़ोर से हवाऐं चलने लगीं तूफान भारी था। यह देख कर जहाज़ वालों ने सोचा "लगता है कि यह टापू वाला आदमी कोई मामूली आदमी नहीं था। अच्छा हो कि हम लोग वापस जा कर उसको अपने साथ ले लें।"

सो उन्होंने अपना जहाज़ टापू की तरफ मोड़ दिया। वहॉ जा कर उन्होंने जहाज़ रोका। उस आदमी को वहॉ से लिया और उसको उसके शहर छोड़ दिया।

काफी दिनों बाद या फिर केवल कुछ समय बाद ही – कौन बता सकता है, सौदागर के गरीब बेटे ने फिर से अपना फावड़ा उठाया और फिर से काम ढूँढने के लिये बाजार में जा कर बैठ गया।

वही अमीर सौदागर अपनी सुनहरी गाड़ी में फिर से वहॉ आया और फिर से पहले की तरह से वहॉ बैठे सब लोग वहॉ से भाग गये। गरीब सौदागर का बेटा ही वहॉ अकेला रह गया।

"क्या तुम मेरा काम करना पसन्द करोगे?"

"मुझे दो सौ रूबल एक दिन का चाहिये। अगर आप दे सकते हैं तो मैं आपके साथ चलता हूँ।"

"तुम तो बहुत मॅहगे मजदूर हो।"

"अगर मैं आपको बहुत मॅहगा लगता हूँ तो किसी दूसरे को ले लीजिये जो आपके लिये सस्ते में काम कर दे। अभी तो यहॉ बहुत सारे लोग बैठे हुए थे पर आपको आते देखते ही वे सब यहॉ से भाग गये। अब तो यहॉ एक भी आदमी नहीं है।"

"ठीक है कल बन्दरगाह पर आ जाना।"

अगले दिन सुबह ही सौदागर का गरीब बेटा बन्दरगाह पर पहुँच गया। वहॉ वे एक जहाज़ पर चढ़े और उसी टापू की तरफ चल

दिये जिसकी तरफ वे पहले गये थे। पहला दिन उन्होंने उस टापू पर आनन्द से मनाया। अगले दिन दोनों मास्टर और मजदूर काम पर गये।

जब वे उस सोने के पहाड़ के पास पहुँचे तो अमीर सौदागर ने अपने मजदूर को एक गिलास में शराब पीने को दी और कहा — "काम करने से पहले इसे पी लो। इसको पीने से तुम काम करने में अच्छा महसूस करोगे।"

"ज़रा रुकिये मालिक। आप मालिक हैं पहले इसे आप पीजिये। इस बार मैं आपको पिलाता हूँ।"

नौजवान ने पहले से ही एक सुलाने वाला पेय तैयार करके रखा हुआ था सो उसने जल्दी से उसे शराब में मिला दिया और मास्टर को वह शराब दे दी। घमंडी सौदागर उसको पी गया और जल्दी ही सो गया।

हमारे नौजवान ने भी एक घोड़ा मारा उसे काट कर खोला और अपने मास्टर और फावड़े को उसमें धकेल दिया। घोड़े की खाल को सिला और खुद एक झाड़ी में छिप कर बैठ गया।

तुरन्त ही वहाँ कौए उड़ते हुए आ गये – लोहे की चोंच वाले काले कौए। उन्होंने सौदागर रखे मरे हुए घोड़े को उठाया और पहाड़ पर ले गये और अपने शिकार की हड्डियाँ खाने लगे।

जब सौदागर की आँख खुली तो उसने इधर देखा उधर देखा ऊपर देखा नीचे देखा और चिल्लाया "मैं कहाँ हूँ?"

"सोने के पहाड़ पर। अब अगर आप में आराम करने के बाद कुछ ताकत आ गयी हो तो आप अपना समय बरबाद मत कीजिये फावड़ा उठाइये और सोना खोदना शुरू कीजिये। और हॉ जल्दी जल्दी खोदिये फिर मैं आपको बताता हूँ कि आपको नीचे कैसे आना है।

अब उस घमंडी अमीर सौदागर के पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपने नौजवान मजदूर की बात मानता सो उसने फावड़ा उठाया और सोना खोदना शुरू किया। बारह गाड़ी सोना खोदा गया।

गरीब सौदागर का बेटा नीचे से चिल्लाया — "बस काफी है। इसके लिये आपको बहुत बहुत धन्यवाद। अब विदा।"

यह सुन कर वह घमंडी अमीर सौदागर बोला — "और मैं? मैं नीचे कैसे आऊँगा?"

"आपकी जैसी इच्छा हो आप वैसा कर सकते हैं। निन्यानवे लोग तो वहॉ पहले ही मर चुके हैं और अब आप मर जायेंगे तो पूरे सौ हो जायेंगे।"

कह कर सौदागर के गरीब बेटे ने वे बारह गाड़ी भरा सोना लिया और सोने के महल आ पहुँचा। वहॉ आ कर उसने अमीर सौदागर की सुन्दर लड़की से शादी की।

अमीर सौदागर की बेटी अब अपने पिता की जायदाद और पैसे की अकेली मालिक बन चुकी थी।

गरीब सौदागर का बेटा जो अब गरीब नहीं रह गया था अपने परिवार के साथ एक बड़े शहर में रहने के लिये चला गया।

पर उस घमंडी अमीर सौदागर का क्या हुआ?

अपने दूसरे शिकारों की तरह से वह खुद सोने के पहाड़ पर काले कौओं का शिकार बन गया – वे काले कौए जिनकी लोहे की चोंचें थीं।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि कोई जाल किसी और के लिये फेंका जाता है पर वह अपने ऊपर ही आ कर पड़ जाता है। ऐसा ही कुछ इस घमंडी अमीर सौदागर के साथ भी हुआ। वह मारना तो चाहता था उस नौजवान को पर बेचारा खुद ही मर गया।

4 पिता पाला[18]

एक बार की बात है कि एक बहुत दूर के देश में, रूस में ही कहीं किसी जगह एक सौतेली मॉ रहती थी जिसके एक सौतेली बेटी थी और एक उसकी अपनी बेटी थी।

उसको अपनी बेटी बहुत प्यारी थी। वह जो भी करती उसकी मॉ पहली होती जो उसके उस काम की तारीफ करती। उसको शाबाशी देती पर सौतेली बेटी को कोई तारीफ या शाबाशी नहीं मिलती।

हालॉकि वह बहुत अच्छी और दयालु थी फिर भी उसको सिवाय बुरे शब्दों के और कुछ नहीं मिलता। अब इसके लिये क्या किया जा सकता था।

हवा का काम है चलना पर फिर भी कभी कभी वह रुक जाती है। पर वह बुरी औरत यह नहीं जानती थी कि वह अपने बुरेपन को कैसे रोके।

एक दिन बहुत ठंडा दिन था तो उस सौतेली मॉ ने अपने पति से कहा — "ओ बूढ़े मैं चाहती हूॅ कि तुम अपनी बेटी को मेरी नजरों से दूर ले जाओ मेरे कानों से दूर ले जाओ।

---

[18] The Father Frost – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap09.htm
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales.

तुम उसे अपने लोगों में किसी गरम जगह नहीं ले जाओगे। तुम उसे किसी खुले हुए बड़े मैदान में ले जाओगे जहॉ जानतोड़ पाला पड़ता है।"

यह सुन कर लड़की का पिता बहुत दुखी हुआ। यहॉ तक कि वह रो पड़ा पर फिर भी उसने उसको स्ले[19] में बिठाया और खुले मैदान की तरफ ले चला।

उसकी इच्छा थी कि वह उसको ठंड से बचाने के लिये भेड़ की खाल ओढ़ा दे पर फिर भी वह यह नहीं कर सका क्योंकि उसकी पत्नी खिड़की से उसे देख रही थी।

सो वह अपनी प्यारी बेटी को ले कर एक बहुत खुले हुए मैदान में चला गया। जंगल के पास उसको अकेला छोड़ा और तुरन्त ही वहॉ से जल्दी जल्दी चला आया। वह एक बहुत अच्छा आदमी था वह अपनी बेटी की मौत नहीं देख सकता था।

वह बेचारी प्यारी सी बेटी वहॉ अकेली बिल्कुल अकेली खड़ी रह गयी। उसका दिल टूट गया था वह बहुत डरी हुई थी। उसने जल्दी जल्दी जितनी भी प्रार्थनाऐं उसको याद थीं वे सब बोलीं।

पिता पाला[20] जो वहॉ का अकेला राजा था जो फ़र में लिपटा हुआ था जिसकी बहुत लम्बी सफेद दाढ़ी थी जिसके सिर पर

[19] Sleigh is wheelless carriage drawn by special dogs or deer espaecially in icy regions where other normal vehicles cannot run – see its picture above.

[20] Translated for the words "Father Frost"

चमकीला सफेद ताज था वह उसके पास और और पास आया। उसने अपने सुन्दर छोटे मेहमान की तरफ देखा और पूछा — "क्या तू मुझे जानती है? मैं लाल नाक वाला पाला।"

लड़की बड़ी नम्रता से बोली — "आपका स्वागत है पिता पाले। मुझे लगता है कि मेरे भगवान ने आपको मेरी पापपूर्ण आत्मा के लिये भेजा है।"

पाले ने फिर पूछा — "मेरी प्यारे बच्ची क्या तू यहाँ ठीक से है?" वह उसके प्यारी सी सूरत और कोमल स्वभाव से बहुत खुश था।

लड़की ठंड से ठीक से साँस भी नहीं ले पा रही थी फिर भी वह बोली — "हाँ पिता पाले मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

खुश और शानदार पाला पेड़ों की शाखाओं में कड़कता रहा और लड़की ठंडी होने के बावजूद यह कहती रही "मैं बिल्कुल ठीक हूँ मेरे प्रिय पिता पाले मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

पर पिता पाला आदमियों की कमजोरियों को जानता था। वह जानता था कि केवल कुछ आदमी ही ऐसे होते हैं जो अच्छे और दयालु होते हैं पर वह किसी ऐसे आदमी को नहीं जानता था जो बहुत देर तक ठंड सह सकता हो या पाले की ताकत का मुकाबला कर सकता हो।

छोटी लड़की का दया भाव और उसकी नम्रता उसको इतनी प्रभावित कर गयी कि उसने सोचा कि वह उससे दूसरे लोगों की

तुलना में कुछ अलग तरीके से बरताव करेगा सो उसने उसको एक बड़ा बक्सा भर के बहुत सारी बहुत सुन्दर सुन्दर चीज़ें दीं।

उसने उसको एक बहुत ही कीमती शूबा[21] दिया जिसके नीचे फ़र लगा हुआ था। उसने उसको रेशम की रजाइयॉ दीं जो पंखों की तरह से मुलायम थीं और मॉ की गोद की तरह से गरम थीं। उसने उसको और भी बहुत सारे सुन्दर और कीमती कपड़े दिये।

इन सब चीज़ों को पा कर वह तो क्या ही अमीर बच्ची बन गयी। और इस सबके अलावा बूढ़े पाले ने उसको नीले रंग का एक सैराफान[22] भी दिया जिस पर चॉदी और मोतियों का काम हो रखा था।

जब उस लड़की ने उसको पहना तो वह तो इतनी सुन्दर लड़की हो गयी कि सूरज भी उसको देख कर मुस्कुरा दिया।

अब हम उसकी सौतेली मॉ के पास चलते हैं। उसकी सौतेली मॉ रसोईघर में काम कर रही थी। वह घर के लिये पैनकेक बनाने में लगी हुई थी।

रूस में यह रिवाज है कि किसी की मौत के बाद ये पैनकेक पुजारी जी को खिलाये जाते हैं।

[21] Schouba is a large Russian type of fur-lined coat

[22] Sarafan is the Russian national costume for women

पत्नी ने पति से कहा — "अब ओ बूढ़े तुम उस बड़े मैदान में जाओ और अपनी बेटी की लाश ले कर आओ। हम उसको दफ़ना देंगे।"

बूढ़ा यह सुन कर चला गया और उनका छोटा कुत्ता जो वहीं एक कोने में बैठा था अपनी पूँछ हिला कर बोला — "भौं भौं भौं भौं। बूढ़े की बेटी तो घर वापस आ रही है। वह इतनी खुश है और इतनी सुन्दर हो गयी है जितनी पहले कभी नहीं थी। और नीच मॉ की बेटी उतनी ही बुरी है जितनी कि वह पहले थी।"

यह सुन कर सौतेली मॉ ने उसको मारा और चिल्लायी — "चुप रह ओ बेवकूफ जंगली जानवर चुप रह। ले यह पैनकेक ले और इसे खा और कह "बुढ़िया की बेटी की शादी बहुत जल्दी होगी और बूढ़े की बेटी जल्दी ही दफ़नायी जायेगी।" कह कर उसने एक पैनकेक उसकी तरफ फेंक दिया।

अब उस कुत्ते ने कुछ नया कहना शुरू किया — "भौं भौं भौं भौं। बूढ़े की बेटी अमीर और खुश हो कर जल्दी ही घर आ रही है जैसी वह पहले कभी नहीं थी। और बुढ़िया की बेटी अभी भी घरेलू और बुरी है जैसी कि वह पहले थी।"

बुढ़िया को कुत्ते पर बहुत ज़ोर से गुस्सा आ गया उसने फिर से उसको पैनकेक दिया और मारा पर पेनकेक देने और मारने के बावजूद वह कुत्ता वही शब्द बार बार दोहराता रहा। न तो वह चुप हुआ और न अपने कहे शब्द ही बदले।

तभी किसी ने घर का फाटक खोला। पत्नी को किसी की हॅसी की और बात करने की अवाज सुनायी पड़ी तो बुढ़िया ने बाहर झॉक कर देखा तो आश्चर्य में डूबी वहीं की वहीं बैठ गयी।

उसकी सौतेली बेटी तो राजकुमारी की तरह बहुत सुन्दर कपड़ों में सजी धजी चली आ रही थी। और उसका बूढ़ा पिता बड़ी मुश्किल से उसका वह भारी बक्सा उठा कर ला पा रहा था जिसमें उसकी बेटी के पहनने के कपड़े रखे थे।

सौतेली मॉ तो यह देख कर एक तरफ तो दुखी हो गयी कि उसकी सौतेली बेटी इतनी सरदी में भी इतनी देर तक रहने के बाद भी ज़िन्दा ही घर वापस चली आ रही थी। पर दूसरी तरफ उसको सजी धजी देख कर जल उठी कि यह सब उसकी अपनी बेटी की किस्मत में भी तो हो सकता था।

सो उसने बड़ी बेचैनी से कहा — "ओ बूढ़े अपने सबसे अच्छे घोड़ों को अपनी सबसे अच्छी स्ले में जोतो और मेरी बेटी को भी वहीं उसी जगह ले जाओ बड़े बड़े खुले मैदान में जहॉ तुम अपनी बेटी को छोड़ कर आये थे।"

बूढ़े ने एक बार फिर अपनी पत्नी का कहना माना जैसे कि वह पहले मानता था और अपनी सौतेली बेटी को भी वहीं ले गया जहॉ वह अपनी बेटी को छोड़ कर आया था और उसको वहीं छोड़ कर घर आ गया।

बूढ़ा पाला अभी भी वहीं था। उसने अपने नये मेहमान को देखा।

लाल नाक वाले पाले ने उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की क्या तुम ठीक हो?"

लड़की ने बड़े गुस्से से जवाब दिया — "मुझे अकेला छोड़ दो। क्या तुम्हें दिखायी नहीं दे रहा कि मेरे हाथ पॉव ठंड से अकड़े जा रहे हैं?"

खुश और शानदार पाला पेड़ों की शाखाओं में कड़कता रहा और उस लड़की से कुछ सवाल पूछता रहा पर उससे उसे कोई नम्र जवाब नहीं मिला। इससे वह गुस्सा हो गया और उसने उसको ठंड में जमा कर मार दिया।

इधर कुछ देर बाद सौतेली मॉ ने अपने पति से कहा — "ओ बूढ़े जाओ और जा कर मेरी बेटी को ले कर आओ। उसके लिये सबसे अच्छे घोड़े ले कर जाना। स्ले चलाते समय खयाल रखना कि स्ले कहीं उलट पलट न हो जाये। और वह बक्सा जो वह साथ ले कर आयेगी उसका भी खयाल रखना।"

और कोने में बैठा कुत्ता बोला — "भौं भौं भौं भौं। बूढ़े की बेटी की शादी जल्दी होगी। और बुढ़िया की बेटी जल्दी ही दफ़नायी जायेगी।"

बुढ़िया यह सुन कर गुस्से में बोली — "झूठ मत बोल। ले यह केक ले और खा और बोल कि "बुढ़िया की बेटी चॉदी और सोने लिपटी आयेगी।"

तभी घर का फाटक खुला।

बुढ़िया घर से बाहर भागी गयी और अपनी बेटी की जमी हुई अकड़ी हुई लाश के ठंडे होठों को चूमा। वह उसको देख देख कर बहुत देर तक रोती रही पर अब उसकी सहायता कौन करता।

आखिर उसने यह भी समझ लिया कि उसकी और उसकी बेटी की नीचता ओर जलन ने ही उसकी बेटी की जान ली है। पर अब क्या हो सकता था।

5 सोने के अंडों वाली बतख की कहानी[23]

एक बार की बात है कि रूस में एक बूढ़ा रहता था जिसका नाम अब्रोसिम था। उसके साथ उसकी एक पत्नी रहती थी जिसका नाम था फ़तीनिया और पन्द्रह साल का एक बेटा रहता था जिसका नाम था इवानुष्का।[24] वे लोग बहुत गरीब थे।

एक दिन बूढ़ा अब्रोसिम अपनी पत्नी और बेटे के लिये एक रोटी का टुकड़ा ले कर आया और उसको काटने ही वाला था कि चूल्हे के पीछे से "दुख"[25] निकल आया और उसके हाथों से वह रोटी छीन ली और भाग गया।

यह देख कर बूढ़े ने दुख को सिर झुकाया और उससे अपनी रोटी वापस देने की भीख माँगी क्योंकि अगर उसने उसकी वह रोटी नहीं दी तो उनके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं था।

बूढ़ा दुख बोला — "मैं तुमको तुम्हारी रोटी नहीं दूँगा बल्कि मैं तुमको एक बतख दूँगा जो एक सोने का अंडा रोज देती है।"

---

[23] Story of the Duck With Golden Eggs – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_9.html
From the Book "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets.

[24] Abrosim, Fetinia and Ivanushka – the old man, his wife and his 15-year old son

[25] Translated for the word "Krutchina"

अब्रोसिम बोला — "यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं रोज ही बिना खाना खाये सोने जाता हूँ। तुम अबकी बार मुझे धोखा मत देना। बताओ मुझे वह बतख कहाँ मिलेगी।"

दुख बोला — "सुबह सवेरे जब तुम उठो तो शहर जाना तो वहाँ एक तालाब में तुमको एक बतख दिखायी देगी। उसे तुम पकड़ लेना और अपने घर ले आना।"

जब अब्रोसिम ने यह सब सुना तो वह सोने चला गया। अगले दिन वह बूढ़ा सुबह सवेरे जल्दी उठा और शहर की तरफ चल दिया। वह सीधा तालाब पर पहुँचा तो यह देख कर बहुत खुश हो गया कि उस तालाब में तो एक बतख तैर रही थी।

उसने उसको बुलाना शुरू किया और जल्दी ही पकड़ लिया। पकड़ कर वह उसको घर ले आया। घर आ कर उसने उस बतख को फ़तीनिया को दे दिया।

फ़तीनिया ने बतख को रख लिया और अपने पति को बताया कि वह अंडा देने वाली है। अब्रोसिम और फ़तीनिया दोनों बहुत खुश थे। फ़तीनिया ने बतख को एक बड़े बरतन में रख दिया था और एक चलनी से ढक दिया था।

उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उस बतख ने सोने का एक अंडा दिया। उन्होंने बतख को कुछ देर तक फर्श पर घूमने

दिया और फिर अब्रोसिम उसका अंडा ले कर उसे बेचने के लिये शहर चला गया जहॉ उसने उसे सौ रूबल[26] का बेचा।

पैसे ले कर वह बाजार चला गया जहॉ से उसने बहुत सारी सब्जियॉ खरीदीं और घर वापस आ गया।

अगले दिन बतख ने एक और सोने का अंडा दिया। अब्रोसिम ने यह अंडा भी बेच दिया। इस तरह से बतख अंडे देती रही अब्रोसिम उन्हें बेचता रहा। धीरे धीरे वह बहुत अमीर हो गया।

अब उसने अपने लिये एक बहुत बड़ा मकान बनवा लिया। कई सारी दूकानें खरीद लीं। बेचने के लिये बहुत सारा सामान खरीद लिया और व्यापार करने लगा।

अब कुछ ऐसा हुआ कि फ़तीनिया की एक नौजवान दूकान वाले से दोस्ती हो गयी जो उस बूढ़ी फ़तीनिया की परवाह तो बिल्कुल भी नहीं करता था पर उसके पीछे पड़ कर वह उससे पैसे ले लेता था।

एक दिन जब अब्रोसिम अपने व्यापार के लिये कुछ सामान खरीदने के लिये बाहर गया हुआ था फ़तीनिया ने उस दूकानदार को गप मारने के लिये अपने घर बुलाया।

नौजवान दूकानदार ने इत्तफाक से उस बतख को देख लिया तो उसे अपने हाथ में उठा लिया तो उसने उसके पंखों के नीचे सुनहरे

[26] Rouble is the currency of Russia

अक्षरों में लिखा देखा "जो इस बतख को खायेगा वह ज़ार[27] बन जायेगा।"

उस नौजवान ने फ़तीनिया से इस बारे में तो कुछ नहीं कहा पर अपने प्यार की खातिर उससे उस बतख को भूनने के लिये कहा ताकि वह उसे खा सके। तो फ़तीनिया ने उसे बताया कि वह उस बतख को नहीं मार सकती थी क्योंकि उनकी सारी खुशकिस्मती उसी बतख के ऊपर निर्भर थी।

यह सुनने के बाद भी वह नौजवान दूकानदार उससे उस बतख को और जल्दी मारने की जिद करता रहा। अखिर उसके नम्रता भरे शब्द और खुशामद से फ़तीनिया राजी हो गयी। उसने बतख को मार दिया और उसको स्टोव में भुनने के लिये रख दिया।

इसके बाद दूकानदार ने यह कह कर फ़तीनिया से विदा ली कि वह जल्दी ही लौट कर आता है। फ़तीनिया भी फिर शहर चली गयी।

ठीक इसी समय इवानुष्का घर लौटा तो उसको बहुत भूख लगी थी। उसने खाने के लिये इधर उधर कुछ ढूँढा तो इत्तफाक से उसको स्टोव में भुनी हुई बतख रखी दिखायी दे गयी।

उसने उसको बाहर निकाला और उसको सारी की सारी खा गया और अपने काम पर लौट गया।

[27] Tzar or Tsar is the title for the King of Russia before 1917.

उसके जाने के थोड़ी देर बाद ही दूकानदार लौट कर आया और फ़तीनिया को पुकार कर उससे बतख बाहर निकालने के लिये कहा। फ़तीनिया ओवन के पास दौड़ी गयी तो उसने देखा कि वहॉ तो ओवन खाली पड़ा है। उसमें तो कोई बतख नहीं है।

यह देख कर वह डर गयी और दूकानदार को बताया कि बतख तो वहॉ से गायब हो गयी।

इस पर दूकानदार उससे बहुत नाराज हुआ और बोला — "अगर यह बतख तुमने खायी है तो मैं इसका तुमसे बदला लूँगा।" कह कर वह तुरन्त ही वहॉ से चला गया।

रात को अब्रासिम और उसका बेटा इवानुष्का घर लौटे और बतख को बेकार ही ढूँढते रहे। अब्रासिम ने अपनी पत्नी से भी पूछा कि बतख का क्या हुआ।

फ़तीनिया ने झूठ बोला कि वह बतख के बारे में कुछ नहीं जानती कि वह कहॉ है पर इवानुष्का बोला — "मेरे पिता और मॉ, जब मैं शाम को खाना खाने के लिये घर आया तो मॉ घर पर नहीं थी।

मुझे बहुत भूख लगी थी मैंने ओवन में झॉक कर देखा तो वहॉ मुझे एक भुनी हुई बतख दिखायी दी। मैने उसको निकाला और खा लिया। पर सचमुच में मुझको यह नहीं पता था कि वह बतख हमारी वाली थी या कोई और थी।"

यह सुन कर अब्रोसिम को अपनी पत्नी पर गुस्सा आ गया और उसको इतना पीटा कि वह अधमरी हो गयी। और अपने बेटे को घर से बाहर निकाल दिया। छोटा इवान बेचारा सड़क पर घूमता फिरा। जहॉ जहॉ उसको रास्ता दिखायी देता गया वह उसी तरफ चलता गया।

इस तरह से वह दस दिन और दस रात तक चलता रहा। आखिरकार वह एक बड़े शहर के फाटक पर आ गया।

जैसे ही वह उस फाटक के अन्दर घुस रहा था तो उसने देखा कि वहॉ बहुत बड़ी भीड़ जमा थी। पता चला कि वहॉ का ज़ार मर गया था और वे लोग यह तय नहीं कर पा रहे थे कि अब वे अपना ज़ार किसे चुनें।

तब उन्होंने यह तय किया कि जो कोई भी शहर के फाटक के अन्दर सबसे पहले घुसेगा वे उसी को अपना ज़ार चुनेंगे। और बस इसी समय अपना छोटा इवान शहर के फाटक में घुसा। जैसे ही वह फाटक में घुसा सब लोग चिल्लाये "हमारा ज़ार आ गया। हमारा ज़ार आ गया।"

वहॉ के लोगों में से बड़े आदमी इवानुष्का को हाथ पकड़ कर शाही महल में ले गये। वहॉ उसको ज़ार के कपड़े पहनाये उसको ज़ार की गद्दी पर बिठाया ज़ार की तरह से उसकी इज़्ज़त की और उसका हुकुम लेने के लिये खड़े हो गये।

इवानुष्का को तो लगा कि वह कोई सपना देख रहा है। पर जब वह अपने आप में आया तो उसको लगा कि यह सपना नहीं बल्कि यह तो सच था कि वह ज़ार बन चुका था।

फिर तो वह दिल से खुशियॉ मनाने लगा और बोला — "मेरे वफादार नौकरों और बहादुर नाइट लूगा[28] मेरी एक सेवा करो। तुम लोग मेरे देश जाओ, सीधे उस देश के राजा के पास जाओ। उनसे मेरी नमस्ते कहना और उनसे प्रार्थना करना कि वह अब्रोसिम व्यापारी को और उसकी पत्नी को मेरे पास भेज दें।

अगर वह उनको दे देता है तो उनको वहॉ से मेरे पास ले आओ। और अगर नहीं देता है तो उसको धमकी देना कि मैं उसका राज्य आग और तलवार से बरबाद कर दूँगा और उसको बन्दी बना लूँगा।

सो वे इवानुष्का के देश आये और वहॉ के ज़ार के पास गये। उन्होंने उससे अब्रोसिम और फ़तीनिया को देने के लिये कहा।

वहॉ के ज़ार को पता था कि अब्रोसिम वहॉ का एक बहुत ही अमीर व्यापारी था और उसी के शहर में रहता था सो वह उसको जाने नहीं देना चाहता था।

पर उसे यह भी पता था कि इवानुष्का का राज्य उसके राज्य से कहीं ज़्यादा बड़ा और ताकतवर था इसलिये उसका विरोध करना ठीक नहीं था सो उसने इन दोनों को नाइट लूगा को दे दिया।

[2828] Brave Knight Luga

नाइट लूगा ने उन दोनों को ज़ार से लिया और उनको ले कर अपने राज्य वापस लौट आया।

जब वह उनको इवानुष्का के सामने लाया तो ज़ार उनसे बोला — "यह सच है कि आपने मुझे अपने घर से निकाल दिया पर मैं आज आपका अपने घर में स्वागत कर रहा हूँ। आप और माँ अब ज़िन्दगी भर मेरे साथ खुशी से रहें।"

अब्रोसिम और फ़तीनिया यह देख कर बहुत खुश हुए कि उनका बेटा अब ज़ार बन गया है। वे उसके साथ बहुत सालों तक रहे फिर मर गये।

इवानुष्का ने भी वहाँ तीस साल तक राज किया। वह तन्दुरुस्त और खुश रहा। उसकी प्रजा उसको उसके आखिरी समय तक प्यार करती रही।

6 मुरोम का इलिया और डाकू नाइटिन्गेल[29]

एक मशहूर शहर मुरोम में एक बार इवान तीमोफ़ेयेविच[30] नाम का एक किसान रहता था। इवान के एक बेटा था जिसका नाम था इलिया। वह उसको बहुत प्यार करता था।

वह तीस साल तक की उम्र तक चल नहीं सका पर तीस साल के बाद अचानक ही उसमें इतनी सारी ताकत आ गयी कि न केवल वह भाग सका बल्कि उसने अपने लिये एक जिरहबख्तर भी बना लिया और एक लोहे का भाला भी।

उसने घोड़े पर जीन कसी और अपने माता पिता के पास गया और उनसे आशीर्वाद माँगा — "माँ और पिता जी मेहरबानी करके मुझे मशहूर शहर कीव[31] जाने की इजाज़त दीजिये।"

उसके माता पिता ने उसको कीव जाने की इजाज़त दे दी और यह कहते हुए विदा किया — "बेटे सीधे कीव जाना। सीधे चरनीगोव शहर[32] जाना। कहीं किसी दूसरे रास्ते पर जाने की गलती नहीं करना। और न ही बेकार में किसी ईसाई का खून बहाना।"

---

[29] Iliya of Murom and the Robber Nightingale – a folktale from Russia, Asia.
Taken from the Web Site :
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_6.html
From the Book "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets.

[30] Ivan Timofeyeivich named countryman lived in Murom city.

[31] Kiev is famous city of Russia

[32] Chernigov city

इस तरह से मुरोम के इलिया ने अपने माता पिता से विदा ली और अपना सफर शुरू किया। वह घने जंगलों से हो कर गया कि वह डाकुओं के एक कैम्प में आ पहुँचा।

जब डाकुओं ने उसको देखा तो उनको उसके कुलीन घोड़े को लेने का मन कर आया। सो उन्होंने आपस में सलाह की कि वे इलिया को मार देंगे और उसका घोड़ा ले लेंगे।

सो वे सब पच्चीस आदमी मुरोम के इलिया के ऊपर टूट पड़े पर मुरोम के इलिया ने अपने मुँह से घोड़े की रास पकड़ी और एक हाथ से अपने तरकस से तीर निकाला उसको अपनी कमान पर रखा और उसको जमीन में मार दिया। इससे वहाँ की मिट्टी तीन तीन एकड़ तक की दूरी में बिखर गयी।

जब डाकुओं ने यह देखा तो उनकी तो डर के मारे बोली ही नहीं निकली। वे अपने घुटनों पर गिर पड़े और बोले — "ओ हमारे पिता और मालिक, प्यारे भले नौजवान, हमसे गलती हो गयी। हमारे इस जुर्म की सजा देने के लिये तुम हमारा सारा खजाना ले लो हमारे सारे अच्छे कपड़े ले लो और जितने चाहो घोड़े ले लो पर हमें छोड़ दो।"

इलिया यह सुन कर हँसा और बोला — "मैं तुम्हारा खजाना ले कर क्या करूँगा। पर हाँ अगर तुम्हारे दिल में अपनी ज़िन्दगी की कोई इज़्ज़त हो तो इससे पहले कि ऐसा कोई खतरा मोल लो भविष्य में ज़रा सावधान रहना।"

और ऐसा कह कर वह फिर मशहूर शहर कीव की तरफ चल दिया। रास्ते में वह चरनीगोव शहर में आया जिसे अनगिनत पागन[33] सेना ने कब्जा कर रखा था और धमकी दे रखी थी कि वे उसके घर और चर्च सब बरबाद कर देंगे और उसके सारे राजकुमारों को अपना गुलाम बना कर रखेंगे।

मुरोम का इलिया तो इतनी सारी सेना को देख कर घबरा गया। फिर भी उसने हिम्मत बटोरी और अपने धर्म के लिये मरने का निश्चय किया। सो एक बहादुर दिल और एक मजबूत भाले के साथ उसने अपने दुश्मन पर हमला बोल दिया।

उसने उनको हवा की तरह से चारों तरफ बिखरा दिया उनके नेता को बन्दी बना लिया और उसको जीत के तौर पर चरनीगोव ले चला।

शहर के लोग अपने गवर्नर और कुलीन लोगों के साथ उसका स्वागत करने के लिये बाहर आये और उसको उनको आजाद कराने के लिये धन्यवाद दिया। फिर वे इलिया को महल में ले गये और उसको बहुत बढ़िया दावत खिलायी।

इसके बाद मुरोम का इलिया फिर आगे चला और उसने कीव जाने वाली सीधी सड़क ली। इस सड़क को डाकू नाइटिन्गेल ने तीस साल से कब्जा रखा था। वह उस सड़क पर किसी को भी नहीं जाने देता था चाहे वह पैदल हो या फिर घोड़े पर।

[33] A person holding religious beliefs other than those of the main world religions.

वह उस सड़क पर चलने वाले को सबको मार देता था – तलवार से नहीं बल्कि डाकू की सीटी से।

जब इलिया खुले मैदान में आया तो वह ब्रियान्स्की जंगल[34] में से स्मारोदियन्का नदी[35] की तरफ को ऐल्डर की लकड़ी के पुल पर से हो कर दलदल में से गुजरा।

दूर से डाकू नाइटिन्गेल ने उसे आते देखा तो अपनी डाकुओं वाली सीटी बजायी पर हमारे हीरो के दिल पर उसका कोई असर नहीं हुआ पर तब क्या होता अगर उस डाकू नाइटिन्गेल ने जहॉ से अपनी सीटी बजायी थी वहॉ से वह दस वर्स्त[36] के अन्दर अन्दर होता तब तो इलिया को घोड़ा बेचारा अपने घुटनों पर ही गिर गया होता।

तब मुरोम का इलिया उस घोंसले के पास गया जो बारह ओक के ऊपर बना था। तब डाकू नाइटिन्गेल ने रूस के हीरो की तरफ देखा और अपनी पूरी ताकत लगा कर सीटी बजायी और मारने की कोशिश की।

पर इलिया ने अपनी कमान उठायी उस पर अपना तीर रखा और सीधा उस घोंसले को निशाना बना कर डाकू नाइटिन्गेल की दॉयी ऑख में मारा। तो वह तो वहॉ से ओट्स की बाली की तरह गिर पड़ा। तुरन्त ही मुरोम के इलिया ने डाकू नाइटिन्गेल को अपने

[34] Brianski Forest

[35] Smarodienka River

[36] Verst is a Russian measure of length – 0.66 mile or 1.1 Kms.

घोड़े पर अपने जूते रखने की जगह से कस कर बॉध दिया ताकि वह हिल भी न सके और कीव की तरफ चल दिया।

रास्ते में डाकू नाइटिन्गेल का महल पड़ा जहॉ उसने डाकू की बेटियों को खिड़की में बैठे देखा। उनमें से उसकी सबसे छोटी बेटी चिल्लायी — "देखो हमारे पिता जी घोड़े पर सवार वले आ रहे हैं।"

डाकू की सबसे बड़ी बेटी ने इलिया को ज़्यादा पास से देखा तो बहुत ज़ोर से रो पड़ी और बोली — "नहीं यह हमारे पिता जी नहीं हैं यह तो कोई अजनबी है जो हमारे पिता जी को बन्दी बना कर लिये आ रहा है।"

फिर उन्होंने अपने अपने पतियों को ज़ोर से पुकारा कि वे बाहर आ कर उस अजनबी से मिलें और उनके पिता को उससे छुड़ा कर लायें।

उनके पति बहुत ही मशहूर घुड़सवार थे। वे अपने अपने मजबूत भाले ले कर रूसी घुड़सवार से मिलने और उसको मारने के लिये निकल पड़े।

पर डाकू नाइटिन्गेल उन्हें आते देख कर चिल्लाया — "ओ मेरे बच्चों इतने बहादुर घुड़सवार को तुम अपने आपको मारने के लिये उकसा कर तुम अपनी बेइज़्ज़ती मत कराओ। बल्कि उसको अपने महल में एक गिलास वोदका[37] पीने के लिये बुलाओ।"

[37] Vodka is a famous Russian liquor.

पर वे नहीं माने और इलिया से लड़े और अधमरे से हो कर गिर पड़े। तब उन्होंने इलिया को वोदका पीने के लिये महल में बुलाया।

इलिया जब उनके महल की तरफ जाने के लिये मुड़ा तो उसको तो अन्दाज ही नहीं था कि कितना बड़ा खतरा उसका इन्तजार कर रहा था। क्योंकि डाकू नाइटिन्गेल की सबसे बड़ी बेटी ने एक जंजीर से एक तख्ता खींच रखा था ताकि जब इलिया महल के फाटक में घुसे तो वह गिर जाये और मर जाये। पर इलिया ने उसका यह जाल पहले ही देख लिया और उसको अपने भाले से मार दिया।

उसके बाद वह फिर कीव की तरफ चल दिया और महल की तरफ जाते हुए उसने प्रार्थना की और कुलीन लोगों को सैल्यूट मारा। कीव के राजकुमार ने इलिया से कहा — "ओ बहादुर नौजवान बताओ तो तुम्हारा नाम क्या है और तुम यहाँ कब आये हो।"

इलिया बोला — "मेरे मालिक, मेरा नाम इलीयुष्का है। मैं मुरोम शहर में पैदा हुआ था।"

तब राजकुमार ने पूछा — "तुम किस रास्ते से आये हो।"

इलिया बोला — "पहले मैं मुरोम से चरनीगोव गया जहाँ मैंने पागन की अनगिनत सेना को मारा और शहर को उनसे आजाद कराया। उसके बाद मैं सीधा यहीं आ रहा हूँ।

वहॉ से आते हुए रास्ते में मुझको डाकू नाइटिन्गेल मिल गया था तो उसको पकड़ा और उसको बन्दी बना कर अपने घोड़े की जीन के पंजे से बॉध कर ला रहा हूँ।"

यह सुन कर पहले तो राजकुमार गुस्सा हो गया क्योंकि उसने सोचा कि इलिया उसको धोखा दे रहा है पर तब उसके दो नाइट्स अलेशा पोपोविच और दोब्रिन्जा निकितिच[38] इस सच को देखने के लिये गये तो उन्होंने देखा कि सचमुच में ही इलिया डाकू नाइटिन्गेल को पकड़ लाया है।

जब राजकुमार को विश्वास हो गया कि हॉ वाकई इलिया डाकू नाइटिन्गेल को पकड़ लाया है तो उसने बहादुर नौजवान इलिया के लिये वोदका का एक गिलास मॅगवाया और उससे डाकू नाइटिन्गेल की सीटी की एक आवाज सुनवाने की प्रार्थना की।

सो मुरोम के इलिया ने राजकुमार और राजकुमारी को अपनी बॉहों में दबाया उनको अपने कोट में लपेटा और डाकू नाइटिन्गेल को हल्के से सीटी बजाने को लिये कहा।

पर डाकू ने इतनी ज़ोर से सीटी बजायी कि उसने तो वहॉ मौजूद सारे नाइट्स[39] को ही चौंका दिया। वे तो वहॉ फर्श पर चौपट ही गिर पड़े।

[38] Alescha Popovich and Dobrinja Nikitivich – names of the two Knights of the Prince of Kiev

[39] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity – see its picture above.

इस पर मुरोम के इलिया को इतना गुस्सा आया कि उसने उसको वहीं मार दिया।

इसके बाद मुरोम के इलिया की दोब्रिन्जा निकितिच से बहुत अच्छी दोस्ती हो गयी सो दोनों ने अपने अपने घोड़ों पर जीन कसी और घूमने चल दिये। वे बिना किसी दुश्मन का सामना किये हुए तीन महीनों तक चलते रहे।

चलते चलते आखिर उनको एक लॅगड़ा आदमी मिला जिसके कोट का वजन पचास पूड[40] था उसके बोनैट का वजन नौ पूड था और उसकी बैसाखी छह फीट लम्बी थी।

मुरोम का इलिया उसकी हिम्मत देखने के लिये उसके पास गया पर वह लॅगड़ा बोला — "ओ मुरोम के इलिया क्या तुमको मेरी याद नहीं है कि हम लोग एक ही स्कूल में साथ साथ पढ़ते थे और अब तुम मुझे मारना चाहते हो – एक गरीब मजबूर लॅगड़े को।

क्या तुम्हें मालूम नहीं कि कीव शहर पर एक बहुत बड़ी मुसीबत आ पड़ी है। एक ऐसा नाइट जिसका सिर बीयर के बैरल[41] की तरह से बड़ा है जिसकी भौंहें एक बालिश्त की दूरी पर हैं और जिसके कन्धे छह फीट चौड़े हैं उस शहर के अन्दर घुस गया है।

[40] Pood is a unit of mass equal to 40 funt (Russian pound). Plural: pudi or pudy. It is approximately 36.11 pounds (16.38 kilograms).

[41] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter – see its picture above.

वह एक बैल एक बार में खा जाता है और एक बैरल बीयर एक घूँट में पी जाता है। इसलिये राजकुमार को तुम्हारी कमी बहुत महसूस हो रही है।"

मुरोम के इलिया ने उस लॅगड़े का कोट उससे लिया अपने चारों तरफ लपेटा और कीव की तरफ चल दिया। वह सीधे राजकुमार के महल की तरफ जा कर ज़ोर से चिल्लाया — "ओ कीव के राजकुमार, एक गरीब लॅगड़े को भीख दो।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह बोला — "आओ मेरे महल के अन्दर आओ। मैं तुम्हें खाना भी खिलाऊँगा और शराब भी पिलाऊँगा और तुम्हारे सफर के लिये पैसे भी दूँगा।"

यह सुन कर इलिया महल के अन्दर गया और अॅगीठी के पास जा कर बैठ गया और पास में बैठा वह मूर्ति पूजने वाला जिसने उसको खाने और शराब के लिये बुलाया था।

उसके बाद नौकर उसके लिये एक भुना हुआ बैल ले कर आये जिसको उसने उसकी हड्डियों तक खा लिया। फिर सत्ताईस लोग उसके लिये एक बैरल बीयर ले कर आये जिसको उसने एक ही घूँट में पी लिया।

तब मुरोम के इलिया ने कहा — "मेरे पिता के पास एक बार एक लालची घोड़ा था जो इतना खाता था कि एक बार वह फट गया।"

यह सुन कर उस मूर्ति पूजा वाले नाइट को बहुत गुस्सा आ गया वह बोला — "तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मुझे इस तरह की बातें करके उकसाओ, ओ बदकिस्मत लॅगड़े। क्या तुम मेरे बराबर के भी हो? देखो तो मैं तुमको अपनी हथेली पर भी रख सकता हूँ और तुम्हें सन्तरे की तरह से निचोड़ सकता हूँ।

तुम्हारे अपने देश में एक बहुत ही शानदार हीरो था मुरोम का इलिया जिसके साथ मैं एक बार बेकार ही लड़ा पर तुम तो सचमुच में..."

लॅगड़े ने अपना टोप उतार दिया और बोला "यह रहा मुरोम का इलिया।" और उसके सिर पर ज़ोर से मारा, हालॉकि वह बहुत ज़ोर से नहीं था फिर भी उसके उस मारने ने उसको महल की दीवार में घुसा दिया।

फिर इलिया ने उसका शरीर उठाया और महल के बाहर फेंक दिया। राजकुमार ने इलिया को बहुत सारा इनाम दिया और उसको अपने सबसे ज़्यादा बहादुर नाइट की तरह से शाही दरबार में रख लिया।

6 बेवकूफ इमैल्यान[42]

एक बार की बात है कि एक बहुत दूर के देश में, रूस में ही कहीं किसी जगह एक किसान रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके दो बेटे तो होशियार थे पर उसका तीसरा बेटा जिसका नाम इमैल्यान था कुछ बेवकूफ सा था।

किसान बहुत दिनों तक जिया और जब वह बहुत बूढ़ा हो गया तो उसने अपने तीनों बेटों को अपने पास बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बच्चों मुझे लगता है कि अब मैं जल्दी ही मर जाऊँगा सो मैं तुमको अपना घर और जानवर देता हूँ जिन्हें तुम तीनों आपस में बराबर बराबर बाँट लेना। मैंने तुम तीनों को सौ सौ रूबल[43] और भी दिये हैं।"

इसके कुछ दिन बाद ही वह बूढ़ा मर गया। उसके तीनों बेटों ने उसको दफ़ना दिया और कुछ दिन आराम से रहते रहे।

कुछ अमय बाद इमैल्यान के दोनों बड़े भाइयों का मन किया कि वे शहर जायें और अपने पिता के दिये हुए सौ रूबल से कुछ व्यापार करें। सो उन्होंने इमैल्यान से कहा — "ओ बेवकूफ हम

---

[42] Emelyan the Fool – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_13.html
From the Book "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets.
This tale is just like "Bevakoof Ivan Aur Pike Machhlee" given in "Roos Ki Lok Kathayen-1" by Sushma Gupta in Hindi language.

[43] Rouble is the Russian currency.

लोग व्यापार करने शहर जा रहे हैं इसलिये हम तेरे सौ रूबल भी अपने साथ लिये जा रहे हैं। अगर हम अपने व्यापार में कामयाब हो गये तो हम तेरे लिये एक लाल कोट एक जोड़ी लाल बूट और एक लाल टोपी ले कर आयेंगे।

पर तू इस सारा समय घर पर ही रहना और जब हमारी पत्नियॉ यानी तेरी भाभियॉ तुझसे कोई काम करने के लिये कहें तो तू उनका काम कर देना।"

उस बेवकूफ को लाल कोट लाल जूते और लाल टोपी बहुत अच्छी लगती थी सो वह उनका कहा मानने के लिये तैयार हो गया कि वह घर पर ही रहेगा और अपनी भाभियों का कहा सारा काम कर देगा।

इस तरह उसके दोनों भाई व्यापार करने शहर चले गये और वह अपनी भाभियों के पास घर में ही रह गया।

एक दिन जब जाड़ा आने वाला था और ठंड बहुत पड़ रही थी तो उसकी भाभियों ने उससे कहा कि वह उनके लिये पानी ले आये। पर वह तो अपनी अॅगीठी पर ही लेटा रहा और बोला — "अरे तुम हो कौन?"

इस पर उसकी भाभियों ने उसको बहुत डॉटा और कहा — "हम क्या हैं यह तुम अब देखोगे ओ बेवकूफ। तुम्हें पता है न कि कितनी ठंड पड़ रही है और पानी लाना तो आदमी का काम है।"

"पर मुझे बहुत आलस आ रहा है।"

उसकी भाभियॉ बोलीं — "तुमने क्या कहा कि तुम आलसी हो। तो क्या तुमको खाना नहीं खाना? अगर हमारे पास पानी नहीं है तो हम खाना नहीं बना सकते।

पर कोई बात नहीं जब हमारे पति आयेंगे तो हम उनसे कह देंगे कि वह इसको इसके लिये लाया हुआ लाल कोट और और सब सामान न दें।"

नेबकूफ ने जब यह सब सुना जो उन्होंने कहा तो उसको लगा कि उसको उनके लिये पानी लाने जाना ही चाहिये क्योंकि उसको लाल कोट और लाल टोपी पहनने की बहुत इच्छा थी।

सो वह अॅगीठी के ऊपर से नीचे उतरा और बाहर जाने के लिये अपने जूते मोजे पहनने शुरू किये। तैयार होने पर उसने अपनी कुल्हाड़ी और बालटियॉ उठायीं और पास की नदी की तरफ पानी लाने के लिये चल दिया।

नदी पर पहॅुच कर उसने नदी में एक बहुत बड़ा सा छेद खोदा और अपनी बालटियों में पानी भरने लगा और उनको बरफ पर रखने लगा। फिर उसने वहीं खड़े खड़े उस छेद के पानी की तरफ देखा तो उसने देखा कि बड़ी सी पाइक मछली उस पानी में तैर रही थी।

अब इमैल्यान कितना भी बेवकूफ था पर उसकी इच्छा हुई कि वह इस पाइक मछली को पकड़ ले। उसने तुरन्त ही हाथ बढ़ा कर उसको पकड़ लिया और पानी से बाहर निकाल लिया।

उसको उसने अपनी छाती के पास रख लिया और उसको ले कर घर की तरफ जल्दी जल्दी चल दिया।

तो पाइक मछली चिल्लायी — "तुमने मुझे क्यों पकड़ा?"

"तुमको घर ले जाने के लिये और अपनी भाभियों को देने के लिये ताकि वे तुमको पका सकें।"

"ओ बेवकूफ मुझे अपने घर मत ले जाओ मुझे तुम पानी में ही फेंक दो। मैं तुम्हें बहुत अमीर बना दूँगी।"

पर बेवकूफ इस बात के लिये तैयार ही नहीं हुआ और कूदता हुआ अपने घर की तरफ चलता चला गया।

जब पाइक ने देखा कि वह बेवकूफ तो उसको जाने ही नहीं दे रहा तो वह फिर बोली — "अरे बेवकूफ तू मुझे वापस पानी में छोड़ दे मैं तेरे लिये वह सब कुछ करूँगी जो तू खुद नहीं करना चाहता। तुझको केवल यह इच्छा प्रगट करनी होगी कि तुझे क्या करवाना है और तेरा काम हो जायेगा।"

यह सुन कर वह बेवकूफ बहुत बहुत बहुत खुश हो गया क्योंकि वह खुद तो बहुत ही आलसी था। उसका काम कोई और कर दे इससे अच्छी बात उसके लिये और क्या हो सकती थी।

उसने सोचा "अगर पाइक मेरा वह सब काम कर दे जो मैं नहीं करना चाहता या जिसमें मुझको बहुत मेहनत लगती है तो यह तो बहुत ही अच्छा है।"

सो उसने पाइक से कहा — "मैं तुमको पानी में जरूर फेंक देता हूँ अगर तुम वह सब करो जिसका तुमने वायदा किया है।"

पाइक बोली — "पहले मुझे जाने दो उसके बाद ही मैं अपना वायदा निभाऊँगी।"

बेवकूफ बोला — "नहीं पहले तुम अपना वायदा निभाओ तभी मैं तुमको वहाँ छोड़ूँगा।"

जब पाइक ने देखा कि इमैल्यान उसको पानी में नहीं छोड़ रहा तो वह बोली — "अगर तुमको मुझसे कोई काम कराना है तो तुमको उस इच्छा को पहले मुझसे कहना पड़ेगा।"

यह सुन कर वह बेवकूफ बोला — "मेरी इच्छा है कि मेरी पानी की बालटियाँ बिना पानी छलकाये नदी से पहाड़ी के ऊपर अपने आप चल कर पहुँच जायें।"

इस पर पाइक बोली — "इस तरह से नहीं। अब सुनो और इन शब्दों को याद रखना जो मैं अब तुमसे कहती हूँ तभी तुम अपनी इच्छा पूरी करवा सकोगे – "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से बालटियों तुम अपने आप पहाड़ी पर जाओ।"

इमैल्यान ने जैसे ही पाइक के ये शब्द दोहराये तो बालटियाँ उठ कर अपने आप पहाड़ी के ऊपर चल दीं। वह तो यह देख कर हक्का बक्का रह गया। उसने पाइक से पूछा — "क्या ऐसा हर बार होता रहेगा?"

पाइक बोली — "हॉ जब भी तुम कोई भी इच्छा प्रगट करोगे तुम्हारी वह इच्छा उसी समय पूरी हो जायेगी। पर तुम उन शब्दों को हमेशा याद रखना जो मैंने तुम्हें बताये हैं तभी तुम्हारी वह इच्छा पूरी होगी।"

तब इमैल्यान ने मछली को पानी में छोड़ दिया और अपनी बालटियों के पीछे पीछे अपने घर चला गया।

उसके पड़ोसी तो यह तमाशा देख कर आश्चर्य में पड़ गये। वे एक दूसरे से कहने लगे — "इस बेवकूफ की बालटियॉ तो नदी से घर तक अपने आप ही चल कर आ गयी हैं और यह खुद उनके पीछे पीछे आराम से चल कर आ रहा है।"

पर इमैल्यान ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और अपने रास्ते अपने घर चला गया। बालटियॉ अब तक घर पहुँच चुकी थीं और अपनी जगह बैन्च पर जा कर बैठ गयी थीं सो बेवकूफ फिर से अपनी अँगीठी पर जा कर लेट गया।

कुछ समय बाद उसकी भाभियों ने उससे फिर कहा — "इमैल्यान तुम वहॉ आलसी बने क्यों पड़े हो। उठो और जा कर थोड़ी सी लकड़ी काट लाओ।"

पर बेवकूफ बोला — "तुम? और तुम होती कौन हो?"

उसकी भाभियॉ बोलीं — "तुमको दिखायी नहीं देता कि जाड़ा आ गया है और अगर तुम लकड़ियॉ नहीं काटोगे तो तुम ठंड से जम जाओगे।"

बेवकूफ बोला — "हॉ मैं आलसी हूँ।"

उसकी भाभियॉ बोलीं — "क्या? तुम आलसी हो। अगर तुम तुरन्त ही लकड़ी काटने नहीं गये तो हम अपने अपने पतियों से कह देंगी कि वे तुमको लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी ला कर न दें।"

अब बेवकूफ की तो बड़ी इच्छा थी कि वह लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी पहने तो उसके लिये उसको लकड़ी काटने के लिये बाहर जाना पड़ेगा और इस समय तो कड़ाके की ठंड पड़ रही थी और वह अपनी अॅगीठी के ऊपर से नीचे नहीं उतरना चाहता था सो उसने दबे मुॅह से पाइक मछली वाले शब्द दोहरा दिये —

"पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से कुल्हाड़ी तुम उठो और लकड़ी काट कर लाओ। और तुम सब लट्ठे अॅगीठी में आ कर अपने आप लग जाओ।"

बस उसका यह कहना था कि उसकी कुल्हाड़ी उठी और कूद कर उनके घर के पीछे के मैदान में लकड़ी काटने चली गयी। उसके काटे हुए लट्ठे अपने आप आ कर घर में अॅगीठी में इकट्ठे होने लगे।

जब उसकी भाभियों ने यह देखा तो वह तो अपने बेवकूफ की होशियारी पर हैरान रह गयीं। और क्योंकि कुल्हाड़ी भी लकड़ी अपने आप ही काट रही थी तो अब इमैल्यान को जब भी मौका मिलता वह काम से आराम पा जाता।

कुछ देर बाद सारी लकड़ी खत्म हो गयी तो उसकी भाभियों ने कहा — "इमैल्यान अब हमारे पास कोई लकड़ी नहीं है सो अब तुम जंगल जाओ और कुछ लकड़ी काट कर लाओ।"

पर बेवकूफ बोला — "अरे तुम हो कौन?"

उसकी भाभियों ने कहा — "जंगल तो बहुत दूर है और आजकल जाड़ा है। हमारे जाने के लिये अब बहुत ठंडा है।"

पर बेवकूफ ने जवाब दिया — "मुझे तो बहुत आलस आ रहा है।"

वे चिल्लायीं — "तुम इतने आलसी क्यों हो? पता है अगर तुम लकड़ी काट कर नहीं लाये तो तुम इस ठंड में जम जाओगे। इसके अलावा हम यह भी देख लेंगे कि जब हमारे पति आयेंगे तो वे तुमको लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी न दें।"

अब क्योंकि बेवकूफ को तो लाल कोट लाल बूट और लाल टोपी चाहिये थी तो उसको लगा कि उसको जंगल लकड़ी काटने जाना ही चाहिये।

सो वह अँगीठी से नीचे उतरा अपने जूते मोजे पहने और कपड़े पहन कर तैयार हुआ। तैयार हो कर बाहर वाले मैदान में गया शैड से स्ले[44] निकाली साथ में एक रस्सी

[44] Sleigh is a wheelless carriage drawn by two or four horses or deer for the people in icy regions.

और एक कुल्हाड़ी ली और अपनी भाभियों से बोला — "फाटक खोलो।"

जब उसकी भाभियों ने देखा कि उनका देवर तो बिना घोड़े जोते ही स्ले को ले कर जा रहा है तो उन्होंने कहा — "अरे इमैल्यान तुम तो स्ले बिना घोड़े जोते ही ले कर जा रहे हो।"

पर उसने जवाब दिया कि उसको घोड़ों की जरूरत ही नहीं थी और उनसे उनसे केवल घर का फाटक खोलने के लिये ही कहा। सो उन्होंने घर का फाटक खोल दिया।

बेवकूफ ने शब्द दोहराये "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से मेरी यह स्ले जंगल की ओर चले।"

स्ले तुरन्त ही मैदान के बाहर इस तेज़ी से कूदी कि गॉव के लोगों ने जब उसे देखा तो वे तो इमैल्यान की बिना घोड़ों की स्ले की सवारी देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गये। और वह स्ले भी इतनी तेज़ी से जा रही थी कि दो घोड़े भी उसको इतनी तेज़ नहीं खींच सकते थे।

बेवकूफ को जंगल शहर के बीच से हो कर जाना था और वह अपनी पूरी गति से जा रहा था।

पर उस बेवकूफ को यह पता नहीं था कि जब वह इतनी तेज़ गति से जा रहा था तो उसको शहर वालों को पहले से ही उसके रास्ते से हट जाने के लिये सावधान कर देना चाहिये था कि "रास्ता छोड़ो।" ताकि वह किसी से टकराये नहीं।

पर वह तो ऐसे ही चला गया सो वह कई लोगों के ऊपर चढ़ कर चला गया। हालॉकि कई लोग उसके पीछे दौड़े भी पर कोई उसको पकड़ नहीं पाया क्योंकि वह बहुत तेज़ जा रहा था और इसलिये उसको वापस भी नहीं ला पाया।

आखिरकार इमैल्यान शहर से बाहर निकल गया और जंगल में आ गया। वहॉ आ कर उसने अपनी स्ले रोक दी और कहा "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से कुल्हाड़ी तुम जाओ और लकड़ी काटो।"

उसके मुॅह से ये शब्द निकले ही थे कि कुल्हाड़ी उठी और जंगल में लकड़ी काटने जा पहुॅची। वहॉ से कटे लट्ठे अपने आप स्ले में आ कर इकट्ठे होने लगे।

जब कुल्हाड़ी ने अपना काम कर लिया तो वह स्ले पर बैठा और बोला "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से अब तुम उठो और घर की तरफ चलो।" और स्ले अपनी सबसे तेज़ गति से दौड़ चली।

जब वह शहर में आया जहॉ उसने कई लोगों को अपनी स्ले से घायल किया था तो उसने देखा कि वहॉ तो उसको पकड़ने के लिये बहुत सारी भीड़ जमा थी। जैसे ही वह शहर के फाटक में घुसा उन्होंने उसे पकड़ लिया।

उन्होंने उसे स्ले में से बाहर खींच लिया और नीचे गिरा कर खूब पीटा। जब बेवकूफ ने देखा कि लोग उसके साथ कैसा बरताव

कर रहे थे तो उसने मुँह ही मुँह में कहा "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से ओ डंडे इन्हें खूब मारो।"

तुरन्त ही डंडा उठा और उसने उनको चारों तरफ से मारना शुरू कर दिया। डंडे की मार खाते ही वे सब लोग वहाँ से भाग गये। उनके वहाँ से भागते ही बेवकूफ भी वहाँ से अपने घर भाग आया। डंडा उनको भगाने के बाद उसके पीछे पीछे घर आ गया। और इमैल्यान अपनी अँगीठी के ऊपर जा कर लेट गया।

जब इमैल्यान शहर से चला गया तो वहाँ के सारे लोग एक दूसरे से आपस में बात करने लगे कि किस तरह से वह बिना घोड़ों की स्ले पर कितनी तेज़ी से जा रहा था। आखिर यह बात राजा के पास भी पहुँची।

और जब राजा ने यह सुना तो उसकी भी उसको देखने की इच्छा हो आयी। उसने अपना एक औफीसर अपने कुछ सिपाहियों के साथ उसको ढूँढने के लिये भेजा। औफीसर तुरन्त ही उसकी खोज में चल दिया।

उसने भी वही रास्ता लिया जो बेवकूफ ने लिया था। वह भी उसी गाँव में आ पहुँचा जिसमें इमैल्यान रहता था। वहाँ वह गाँव के सरदार के पास गया और उससे कहा "मुझे राजा ने फलाँ फलाँ बेवकूफ को लाने के लिये भेजा है।"

सरदार ने तुरन्त ही उसको बेवकूफ का घर दिखा दिया। औफीसर उस घर के अन्दर गया और पूछा कि बेवकूफ कहाँ है।

अब वह तो अपनी रोजमर्रा की जगह याने अँगीठी के ऊपर लेटा हुआ था। उसने वहीं से पूछा "तुम्हें मुझसे क्या चाहिये।"

औफीसर बोला — "क्या? मुझे तुमसे क्या चाहिये। तुम अभी अभी उठो तैयार हो और मेरे साथ राजा के पास चलो।"

इमैल्यान ने पूछा — "मगर क्यों?"

औफीसर उसके इस बदतमीजी के जवाब से बहुत गुस्सा हो गया कि उसने उसके गाल पर एक थप्पड़ मार दिया। बेवकूफ को भी गुस्सा आ गया वह बोला — "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से ओ डंडे उठ और इनको मार।"

डंडा तुरन्त ही उठा और उन सबको चारों तरफ से मारने लगा। औफीसर को भी वहॉ से जितनी तेज़ी से वह भाग सकता था भाग जाना पड़ा। भागता भागता जब वह राजा के सामने आया तो उसने उसे बताया कि कैसे उसको उस बेवकूफ ने डंडे से मारा।

राजा ने उसकी तारीफ तो बहुत की पर उसकी कहानी पर विश्वास नहीं किया।

तब राजा ने अपने एक अक्लमन्द आदमी को बुलाया और उससे उस बेवकूफ को चालाकी से लाने के लिये कहा। अक्लमन्द आदमी इमैल्यान के गॉव गया और उस गॉव के सरदार के पास पहुँचा

उसने उससे कहा — "मुझे तुम्हारे गॉव के बेवकूफ को राजा के पास ले जाने का हुकुम हुआ है। इसलिये मुझे बताओ कि वह किसके साथ रहता है।"

सरदार दौड़ा हुआ गया और बेवकूफ की भाभियों को बुला लाया। अक्लमन्द आदमी ने उनसे पूछा कि बेवकूफ को क्या पसन्द था।

वे बोलीं — "ओ कुलीन जनाब, अगर हमारे बेवकूफ को कोई उसकी पसन्द की कोई चीज़ देना चाहता है तो पहले एक दो बार तो वह बिल्कुल ही मना कर देता है पर हॉ तीसरी बार में वह राजी हो जाता है।

उसके बाद तो आप उससे वह करा सकते हैं जो आप कराना चाहते हैं। हॉ अगर उससे कोई बुरी तरीके से बरताव करे तो उसको अच्छा नहीं लगता।"

राजा के दूत ने उनको विदा किया और उनसे यह कहने को मना कर दिया कि वह उससे यह न कहें कि राजा के दूत ने उससे मिलने से पहले उनको बुलाया था।

उसके बाद उसने कुछ किशमिश कुछ भुने हुए आलूबुखारे और कुछ अंगूर खरीदे और उनको ले कर वह बेवकूफ के पास जा पहुॅचा। वह उस समय भी अपनी ऑगीठी पर लेटा हुआ था।

वहॉ जा कर वह उससे बोला — "अरे इमैल्यान तुम यहॉ क्यों लेटे हुए हो?" कहते हुए उसने उसको किशमिश भुने हुए आलूबुखारे और अंगूर दिये।

वह आगे बोला — "इमैल्यान हम दोनों एक साथ राजा के पास चलेंगे। मैं तुमको अपने साथ ले जाऊॅगा।"

पर बेवकूफ ने जवाब दिया — "मैं यहॉ ठीक से गरम हूॅ।" क्योंकि बेवकूफ को इससे ज़्यादा कुछ और अच्छा लगता ही नहीं था।

तब दूत ने उसकी खुशामद करनी शुरू की — "ओ भले इमैल्यान चलो चलते हैं न। तुमको उनका दरबार बहुत अच्छा लगेगा।"

बेवकूफ बोला — "नहीं मैं बहुत आलसी हूॅ।"

पर दूत ने एक बार उसकी और खुशामद की — "तुम मेरे साथ चलो तो। वहॉ एक और बहुत अच्छा आदमी है। और फिर राजा तुमको एक बहुत बढ़िया लाल कोट लाल टोपी ओर बहुत अच्छे लाल बूट भी तो देगा।"

जैसे ही बेवकूफ ने लाल कोट का नाम सुना तो बोला — "ठीक है तुम आगे आगे चलो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आता हूॅ।" यह सुन कर दूत ने उससे ज़्यादा जिद नहीं की और वहॉ से चला गया।

वह वहॉ से निकल कर उसकी भाभियों के पास गया और उनसे पूछा कि अब ऐसा कोई खतरा तो नहीं था कि वह न आये।

भाभियों ने उसको चिश्वास दिलाया कि नहीं अब ऐसी कोई बात नहीं थी। वह वहॉ जरूर पहुँच जायेगा।

इमैल्यान ने जो अभी तक अॅगीठी के ऊपर लेटा हुआ था सोचा "उफ़ मुझे राजा के पास जाने में बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।" पर फिर एक मिनट के बाद ही कुछ सोच कर वह बोला "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से ओ अॅगीठी तू उठ और शहर चल।"

तुरन्त ही दीवार खुल गयी और अॅगीठी वहॉ से बाहर निकल आयी। अब वह बाहर की तरफ चल दी और जैसे ही उसने घर का मैदान पार किया तो वहॉ से तो वह बहुत तेज़ भाग ली। उसको तो कोई पकड़ ही नहीं सकता था।

तुरन्त ही उसने राजा के दूत को पकड़ लिया और उसके साथ साथ ही राजा के महल में घुस गयी।

जब राजा ने बेवकूफ को आते देखा तो वह और उसके सारे दरबारी उससे मिलने के लिये आगे गये।

जब राजा और उसके दरबारियों ने देखा कि बेवकूफ तो अॅगीठी पर चढ़ कर आया है तो सबने दॉतों तले उॅगली दबा ली। पर बेवकूफ बिना हिले डुले वहीं पड़ा रहा और कुछ बोला भी नहीं।

राजा ने उससे पूछा — "जब तुम जंगल जा रहे थे तो तुमने इतने सारे लोगों को परेशान क्यों किया?"

बेवकूफ बोला — "इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं है यह उन्हीं की गलती है। वे लोग रास्ते से हटे क्यों नहीं?"

इत्तफाक से उसी समय राजा की बेटी अपनी खिड़की पर आ गयी। इमैल्यान ने भी अचानक ही ऊपर देखा तो देखा कि राजकुमारी तो बहुत सुन्दर थी। बस तुरन्त ही वह फुसफुसाया "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से यह सुन्दर लड़की मेरे प्रेम में पड़ जाये।"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे लो वह तो उसके प्रेम में पड़ गयी। उसके बाद वह बोला "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से ओ ॲगीठी अब तुम उठो और घर चलो।"

तुरन्त ही ॲगीठी वहॉ से उठी और शहर में हो कर बेवकूफ के घर की तरफ चल दी। घर जा कर वह अपनी जगह लग गयी और इमैल्यान वहॉ कुछ समय तक शान्ति और खुशी से रहा।

पर अब शहर कुछ अलग हो गया था क्योंकि इमैल्यान के कहने पर राजा की बेटी अब इमैल्यान के प्रेम में पड़ गयी थी। वह अब अपने पिता से जिद कर रही थी कि उसको उस बेवकूफ से शादी करनी थी। और राजा उन दोनों से बहुत गुस्सा था पर नहीं जानता था कि वह बेवकूफ को कैसे पकड़े।

तब उसके मन्त्री ने उसको एक सुझाव दिया कि उसे उसी आदमी को उस बेवकूफ को पकड़ने के लिये सजा के तौर पर फिर से भेजना चाहिये कि क्योंकि पहली बार उसका काम ठीक से नहीं हुआ था इसलिये वह उसको दोबारा वहॉ ले कर आये।

यह सलाह राजा को अच्छी लगी और उसने अपने औफीसर को बुलाया और कहा — "दोस्त, मैंने तुम्हें पहले भी उस बेवकूफ को यहॉ लाने के लिये भेजा था और तुम उसको बिना लिये ही चले आये थे सो अब तुम्हारी सजा यही है कि तुम वहॉ दोबारा जाओ।

अबकी बार अगर तुम उसको ले आये तो मैं तुम्हें इनाम दूँगा और अगर तुम उसको नहीं ला पाये तो मैं तुम्हें सजा दूँगा।"

जब औफीसर ने यह सुना तो वह राजा के पास से तुरन्त ही उस बेवकूफ को ढूँढने चल दिया। जब वह गॉव आया तो वह फिर से गॉव के सरदार से मिला।

उसने उसे कुछ पैसे दिये और कहा — "लो यह पैसे लो और इससे एक बहुत ही बढ़िया खाने का इन्तजाम करो। फिर इमैल्यान को खाना खाने के लिये बुलाओ और जब वह आ जाये तो उसको इतनी पिलाओ कि वह सो जाये।"

सरदार को पता था कि यह औफीसर राजा के पास से आया है इसलिये वह उसका काम करने पर मजबूर था। उसने एक खाने के लिये जो कुछ भी जरूरी था वह सब खरीदा और इमैल्यान को खाना खाने के लिये बुलाया। इमैल्यान ने कहा कि वह आयेगा। यह सुन कर औफीसर बहुत खुश हुआ।

अगले दिन इमैल्यान शाम को सरदार के घर खाना खाने आया। अपने प्लान के अनुसार सरदार ने उसको इतनी पिलायी कि वह सो गया।

जब औफीसर ने यह देखा कि बेवकूफ अब सो गया है तो उसने गाड़ी बुलायी बेवकूफ को उसमें डाला और शहर की तरफ चल दिया। वह सीधा महल पहुँच गया।

जैसे ही राजा ने सुना कि उसका औफीसर बेवकूफ को ले आया है तो उसने तुरन्त ही एक बहुत बड़ा सा बक्सा[45] मँगवाया जो मजबूत लोहे के छल्लों से बँधा हुआ हो।

राजा के हुकुम से बक्सा तुरन्त ही आ गया। जब राजा ने देखा कि वहाँ सब कुछ उसकी मरजी के मुताबिक तैयार है तो उसने हुकुम दिया कि बेवकूफ को और उसकी बेटी को दोनों को उस बक्से में रख दिया जाये। फिर उसको मजबूती से बन्द कर दिया गया और जब यह सब हो गया तो उस बक्से को समुद्र में उसकी उछलती कूदती लहरों की दया पर फेंक दिया गया।

यह सब करके राजा अपने महल वापस लौट गया।

बक्सा समुद्र की लहरों पर नाचता रहा। इस सबके बीच बेवकूफ सोता ही रहा। जब उसकी आँख खुली तो उसने देखा कि उसके चारों तरफ तो अँधेरा ही अँधेरा है। उसको लगा कि वह अकेला ही है तो उसने सोचा "मैं कहाँ हूँ।"।

इस पर राजकुमारी बोली — "तुम एक बक्से में हो इमैल्यान और मैं तुम्हारे साथ इसके अन्दर हूँ।"

[45] Translated for the word "Cask". It might be like a barrel – see its picture above

बेवकूफ ने पूछा — "और तुम कौन हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं राजा की बेटी।" फिर उसने उसको यह भी बताया कि वह उसके साथ वहॉ बन्द क्यों है और उससे प्रार्थना की कि वह अपने आपको और उसे दोनों को उस बक्से में से आजाद करे।

वह बेवकूफ बोला — "पर क्यों? मैं तो बहुत अच्छे से गरम हूॅ।"

राजकुमारी बोली — "ठीक है। तुम यहॉ पर गरम हो तो हो पर मेरा एक काम तो कर दो। मेरे ऑसुओं पर रहम खाओ और कम से कम मुझे तो इससे बाहर निकाल दो।"

इमैल्यान बोला — "ऐसा क्यों? मैं तो बहुत आलसी हूॅ।"

इस पर राजकुमारी ने उसको और ज़्यादा खुश करने की कोशिश की तो वह बोला — "ठीक है ठीक है मैं तुम्हारी खुशी के लिये यह कर देता हूॅ।"

सो उसने बहुत ही धीरे से कहा "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से ओ समुद्र हमको अपने किनारे पर फेंक दो जहॉ हम सूखी जमीन पर रह सकें। पर यह जगह हमारे देश के पास ही होनी चाहिये। और ओ बक्से तू भी किनारे पर जा कर टूट जाना।"

बेवकूफ के मुॅह से ये शब्द निकले ही थे कि लहरें उठीं और उन्होंने बक्से को सूखी जमीन पर ले जा कर फेंक दिया। बक्सा भी वहॉ जा कर अपने आप ही टूट गया।

इमैल्यान उठा और जहॉ वे लोग जा कर पड़े थे उसके आस पास राजकुमारी के साथ इधर उधर घूमा। बेवकूफ ने देखा कि वे तो एक बहुत ही सुन्दर टापू पर उतरे हैं। उस टापू पर बहुत सारे फलों के बहुत सारे पेड़ हैं।

जब राजकुमारी ने यह देखा तो वह तो बहुत ही खुश हो गयी और बोली — "पर इमैल्यान हम रहेंगे कहॉ? यहॉ तो कोई झोंपड़ी भी नहीं है।"

बेवकूफ बोला — "तुमको तो कुछ ज़्यादा ही चाहिये।"

अब तक राजकुमारी को यह पता चल गया था कि वह जो कुछ भी चाहता था वही कर सकता था सो वह बोली — "बस मेरा एक काम और कर दो। कम से कम एक छोटा सा मकान बनवा दो ताकि हम उसमें बारिश से बचने के लिये रह तो सकें।"

पर बेवकूफ बोला "मैं तो आलसी हूँ।" फिर भी राजकुमारी उसकी खुशामद करती ही रही और आखिर इमैल्यान को वही करना पड़ा जो वह चाहती थी।

वह कुछ दूर पर खड़ा हुआ और बोला "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से इस टापू के बीच में राजा के किले से भी अच्छा एक किला बन जाये और यहॉ से राजा के किले तक क्रिस्टल का एक पुल बन जाये। इस किले में एक राजा के लायक जो जो लोग रहते हों वह सब लोग वहॉ आ जायें।"

उसने मुश्किल से ये शब्द बोले होंगे कि वहॉ एक बहुत ही शानदार किला बन कर खड़ा हो गया जहॉ से एक किस्टल का पुल राजा के महल तक जाता था।

बेवकूफ राजकुमारी के साथ किले में दाखिल हुआ और देखा कि महल के कमरे तो सब बहुत अच्छी तरह से सजे हुए थे। बहुत सारे नौकर चाकर लोग और सब तरह के औफीसर उसके हुकुम के इन्तजार में हैं।

जब उसने इन सब आदमियों को आदमियों की तरह देखा तो वह अपने आपको बहुत बदसूरत और बेवकूफ लगा। वह उन सबसे अच्छा बनना चाहता था सो उसने एक बार फिर कहा "पाइक के हुकुम से और मेरी इच्छा से मैं अब इन सबसे सुन्दर और एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी बन जाऊॅ।"

बस जैसे ही उसने ये शब्द बोले कि वह तो एक इतना सुन्दर और अक्लमन्द नौजवान बन गया कि लोग तो उसे देख कर आश्चर्यचकित रह गये।

अब इमैल्यान ने अपना एक नौकर राजा के पास राजा को और उसकी सारे दरबार को अपने यहॉ बुलाने के लिये भेजा। वह नौकर उस किस्टल के पुल पर से हो कर गया था जो बेवकूफ ने अपने किले से ले कर राजा के महल तक बनवाया था।

जब वह नौकर राजा के महल में पहुॅचा तो उसके मन्त्री उसको ले कर राजा के दरबार में गये। वहॉ पहुॅच कर इमैल्यान के दूत ने

कहा — "योर मैजेस्टी हमारे राजा ने आपको खाने को लिये बुलाया है।"

राजा ने पूछा — "और तुम्हारे राजा कौन हैं?"

नौकर बोला — "योर मैजेस्टी मैं आपको अभी अपने मास्टर के बारे में कुछ नहीं बता सकता पर अगर आप उनके साथ खाना खायेंगे तो वह आपको अपने आप बता देंगे कि वह कौन हैं।"

ऐसा उसने इसलिये कहा क्योंकि बेवकूफ ने उसे अपने बारे में बताने से मना किया था।

यह सुन कर राजा की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी ऐसा कौन सा राजा हो सकता है जिसने उसे खाने पर बुलाया है। उसने उस नौकर को बोल दिया कि वह यकीनन वहॉ आयेगा। यह सुन कर नौकर चला गया। राजा भी अपने दरबारियों के साथ क्रिस्टल के पुल से हो कर बेवकूफ के घर चल दिया।

राजा को आते देख कर इमैल्यान उसके स्वागत के लिये आगे आया। उसको अपने सफेद हाथों से अन्दर ले गया उसके चीनी वाले होठों को चूमा और उन सबको ले जा कर ओक की मेजों के चारों तरफ बिठाया जिनके ऊपर बहुत बढ़िया किस्म के मेजपोश बिछे हुए थे और जिनके ऊपर बहुत सारी मिठाइयॉ और बहुत सारे मीठे मीठे पेय रखे हुए थे।

राजा और उसके मन्त्रियों ने खूब खाया पिया और आनन्द मनाया। खा पी कर जब वे सब वहाँ से उठे तो बेवकूफ ने राजा से कहा — "क्या योर मैजेस्टी को पता है कि मैं कौन हूँ?"

अब क्योंकि इमैल्यान ने बहुत ही अच्छे कपड़े पहन रखे थे और साथ में वह बहुत सुन्दर भी हो गया था तो उसको पहचानना किसी भी तरह मुमकिन नहीं था। राजा ने साफ कह दिया कि उसे बहुत अफसोस था कि वह उसको पहचान नहीं सका।

इस पर बेवकूफ बोला — "योर मैजेस्टी को याद होगा कि एक बार एक बेवकूफ अँगीठी पर सवार हो कर आपके महल आया था और आपने उसको अपनी बेटी के साथ एक बक्से में बन्द करवा कर समुद्र में फिंकवा दिया था। तो अब आप मुझे जान लीजिये कि मैं वही बेवकूफ हूँ। मेरा नाम इमैल्यान है।"

जब राजा ने उसको इस तरह देखा तो वह तो डर गया और सोचने लगा कि वह क्या करे। पर बेवकूफ राजकुमारी के पास गया और वह उसको अन्दर से बाहर ले आया।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — "मैंने तुम दोनों के साथ बहुत अन्याय किया है इसलिये अब मैं खुशी से अपनी बेटी तुमको देता हूँ।"

बेवकूफ ने नम्रतापूर्वक उसको धन्यवाद दिया और जब इमैल्यान ने शादी की सब तैयारियाँ कर लीं तो उनकी शादी बड़ी शानदार ढंग से मनायी गयी।

बेवकूफ ने मन्त्रियों और सब लोगों को एक बहुत बड़ी दावत दी। जब सब कुछ खत्म हो गया तो राजा अपना राज्य अपने दामाद को देना चाहता था पर इमैल्यान उसका ताज लेना नहीं चाहता था सो राजा अपने राज्य वापस चला गया और वह बेवकूफ अपने किले में आराम से खुशी खुशी रहा।

7 ल्युबिम ज़ारेविच और पंखों वाला भेड़िया[46]

एक बार की बात है कि एक देश में ऐलीदारोविच नाम का एक ज़ार[47] रहा करता था। इसकी एक पत्नी थी मिलीतीसा इब्राहीमोवना।[48] इनके तीन वेटे थे। बड़े बेटे का नाम था अक्सोफ ज़ारेविच दूसरे बेटे का नाम था हत ज़ारेविच[49] और तीसरे सबसे छोटे बेटे का नाम था ल्यूबिम ज़ारेविच।[50]

उनके तीनों बेटे दिन ब दिन ही नहीं बल्कि हर घंटे बढ़ रहे थे। जब उनका सबसे बड़ा बेटा बीस साल का हो गया तो उसने अपने माता पिता से दूसरे देशों जाने की इजाज़त मॉगी ताकि वह अपने लिये पत्नी ढूँढ सके।

आखिर उसके माता पिता ने उसको जाने की इजाज़त दे दी। उसको अपना आशीर्वाद दिया और उसको चारों दिशाओं में जाने की इजाज़त दे दी

कुछ दिन बाद हत ज़ारेविच ने भी इसी तरह की इच्छा प्रगट की तो ज़ार ऐलीदार और ज़ारीना मिलीतीसा[51] ने उसको भी बड़ी खुशी

---

[46] Story of Lyubim Tzarewich and the Winged Wolf – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_1.html
From the Book "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets.

[47] Tzar or Tsar is the title of the King of Russia before 1923.

[48] Elidarovich was the name of the Tzar and Militissa Ibrahimovna was the name of his wife

[49] Tzarevich means the "son of Tzar"

[50] Tzar had three sons – Aksof Tzarevich, Hut Tzarevich and Lyubim Tzarevich

[51] Tzar's wife is called Tzarina

से जाने की इजाज़त दे दी। सो हत ज़ारेविच भी दुनियॉ घूमने चला गया।

दोनों भाई काफी दिन तक दुनियॉ में घूमते रहे। काफी दिनों के बाद में भी उन दोनों के बारे में कुछ नहीं सुना गया। न किसी ने उनको देखा सो यह समझा गया कि वे दोनों मर गये।

ज़ार और ज़ारीना दोनों ही इस बात से बहुत दुखी थे। वे काफी समय तक उनके लिये रोते रहे पर क्या करते।

इसके बाद उनका सबसे छोटा बेटा ल्यूबिम ज़ारेविच आया और उनकी खुशामद की कि वह अपने दोनों भाइयों को ढूँढने जाना चाहता है।

पर उसके माता पिता ने कहा — "बेटे तुम अभी बहुत छोटे हो तुम अभी इतने लम्बे सफर के लायक भी नहीं हो। और हम तुम्हें जाने भी कैसे दे सकते हैं अब तुम्हीं तो हमारे पास बच गये हो। हम लोग भी अब बूढ़े होते जा रहे हैं अगर तुम्हें कुछ हो गया तो हम अपना राज्य किसको दे कर जायेंगे।"

पर ल्यूबिम ज़ारेविच कहॉ मानने वाला था। वह अपने उद्देश्य में पक्का था। वह बोला — "मॉ और पिता जी इस समय मेरा जाना बहुत जरूरी है। मुझे भी दुनियॉ देखनी चाहिये। क्योंकि अगर मुझे किसी देश पर राज करना है तो मुझे यह काम न्याय के साथ करना चाहिये।"

जब ज़ार ऐलीदार और ज़ारीना मिलितीसा ने अपने बेटे के ये शब्द सुने तो वे बहुत खुश हुए और उन्होंने अपने बेटे को सफर करने की इजाज़त दे दी पर केवल कुछ समय के लिये ही। इसके अलावा उन्होंने उससे यह भी कहा कि वह अपने साथ कोई साथी नहीं लेगा और न ही किसी खतरे में पड़ेगा।

ल्यूबिम ने उनसे विदा ले कर सोचा कि वह सफर पर जाने से पहले कैसे एक नाइट[52] वाला घोड़ा ले और एक जिरहबख्तर[53] ले। वह यह सोचता हुआ शहर की तरफ चल दिया कि रास्ते में उसको एक बुढ़िया मिली। उस बुढ़िया ने उससे पूछा — "बेटा ल्यूबिम ज़ारेविच तुम कुछ दुखी लगते हो क्यों।"

पर उसने उसको कोई जवाब नहीं दिया और बिना कुछ कहे उसके पास से गुजर गया। पर बाद में उसने सोचा कि बूढ़े लोग नौजवानों से ज़्यादा अक्लमन्द होते हैं सो वह लौट पड़ा।

वह उसके पास गया और बोला — "पहली मुलाकात में मॉ मुझे ऐसा लगा कि मुझे आपको अपने दुख के बारे में नहीं बताना चाहिये कि मैं क्यों दुखी हूॅ फिर मेरे दिमाग में आया कि बड़े लोग नौजवानों

[52] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity – see its picture above.
[53] Translated for the word "Armor". Armor is a protective garment normally worn in war. Normally it is made of iron.

से ज़्यादा अक्लमन्द होते हैं इसलिये मुझे आपको यह बताना ही चाहिये।"

बुढ़िया बोली — "अब तुम्हारी समझ में आया न ल्यूबिम ज़ारेविच। तुम बूढ़े लोगों से बच नहीं सकते। तो अब बताओ कि तुम दुखी क्यों हो। बूढ़ी पत्नी को बताओ।"

ल्यूबिम ज़ारेविच बोला — "मेरे पास कोई बढ़िया घोड़ा नहीं है और न ही कोई बढ़िया जिरहबख्तर ही है। फिर भी मुझको अपने भाइयों की खोज में बहुत दूर का सफर करना है।"

इस पर बुढ़िया ने कहा — "तुम क्या सोचते हो? एक घोड़ा और एक जिरहबख्तर तो तुम्हें अपने पिता के वर्जित[54] घास के मैदान में ही मिल जायेंगे। यह घोड़ा उसके बारह फाटक के पीछे बारह जंजीरों से बॅधा हुआ है।

उसी घास के मैदान में एक चौड़ी सी तलवार भी है और एक बढ़िया जिरहबख्तर भी।"

जब ल्यूबिम ज़ारेविच ने यह सुना तो वह तो बहुत खुश हो गया। उसने बुढ़िया को धन्यवाद दिया और तुरन्त ही अपने पिता के वर्जित घास के मैदान की ओर दौड़ गया।

[54] Translated for the word "Forbidden". The "royal forbidden meadows" were those belonging to the Sovereign, the use of which was strictly forbidden to his subjects. When an enemy came into the country they first pitched their camp in these fields, as a declaration of hostilities.

घोड़े के पास पहुँच कर वह रुका और सोचा "मैं ये बारह फाटक कैसे तोड़ूँ?" पर फिर उसने उनको तोड़ने की कोशिश की तो उसने एक फाटक तो उसी समय तोड़ दिया।

उसके एक फाटक तोड़ते ही घोड़े ने बहादुर नौजवान की खुशबू महसूस की तो उसने बहुत कोशिश करके अपनी जंजीरें तोड़ दीं। उसके बाद ल्यूबिम ज़ारेविच ने तीन फाटक और तोड़ दिये। उधर घोड़े ने बाकी बचे फाटक तोड़ दिये।

तब ल्यूबिम ज़ारेविच ने घोड़े को देखा भाला, जिरहबख्तर को ढूँढा, उसे पहना, घोड़े को वहीं घास के मैदान में छोड़ कर अपने घर गया।

वहाँ जा कर अपने माता पिता को ढूँढा और बड़ी खुशी के साथ उनको वह सब बताया जो इसके साथ हुआ था कि कैसे एक बुढ़िया ने उसकी सहायता की थी। फिर अपने सफर के लिये उनसे आशीर्वाद माँगा।

उसके माता पिता ने उसको आशीर्वाद दिया और फिर वह अपने बढ़िया घोड़े पर चढ़ कर वह अपने लम्बे सफर पर चल दिया।

चलते चलते वह एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहाँ तीन सड़कें मिलती थीं। उस चौराहे के बीच में एक खम्भा खड़ा था जिस पर तीन वाक्य लिखे हुए थे।

पहला वाक्य था "जो यहॉ से दॉये को मुड़ेगा उसको बहुत सारा खाना मिलेगा पर उसका घोड़ा भूखा रह जायेगा।"

दूसरा वाक्य था "जो यहॉ से सीधा जायेगा वह खुद भूखा रह जायेगा पर उसके घोड़े के लिये काफी खाना होगा।"

तीसरा वाक्य था "जो यहॉ से बॉये को मुड़ेगा वह पंखों वाले भेड़िये से मारा जायेगा।

जब ल्यूबिम ज़ारेविच ने इसे पढ़ा तो इन तीनों वाक्यों पर विचार किया और निश्चय किया कि वह और कोई सड़क नहीं लेगा बल्कि बॉयी तरफ ही जायेगा।

उस तरफ जा कर या तो पंखों वाले भेड़िये से वह खुद मरेगा या फिर वह खुद पंखों वाले भेड़िये को मारेगा। और इस तरह से वह उन सब लोगों को उस पंखों वाले भेड़िये से छुटकारा दिला देगा जो उस रास्ते से सफर करेंगे।

यही सोच कर वह बॉई तरफ मुड़ गया और चलते चलते एक मैदान में निकल आया। वहॉ उसने अपने आराम करने के लिये एक तम्बू गाड़ दिया। तभी अचानक उसने देखा कि पश्चिम से एक पंखों वाला भेड़िया उसकी तरफ उड़ा चला आ रहा है।

उसने ल्यूबिम ज़ारेविच को चौंका दिया। उसने तुरन्त ही अपना जिरहबख्तर पहना कूद कर अपने घोड़े पर बैठा और भेड़िये की तरफ चल दिया। भेड़िये ने उसको अपने पंखों से इतनी ज़ोर से मारा कि वह अपने घोड़े से गिरते गिरते बचा।

फिर भी ल्यूबिम ज़ारेविच अपनी सीट पर बैठा रहा। पर गुस्से में भर कर उसने अपनी तलवार से उस पंखों वाले भेड़िये का पंख काट डाला जिससे वह भेड़िया नीचे गिर पड़ा। इससे उसका दॉया पंख घायल हो गया जिसकी वजह से वह अब उड़ नहीं सकता था।

जब भेड़िया अपने होश में आया तो वह ल्यूबिम ज़ारेविच से आदमी की आवाज में बोला — "मेहरबानी करके तुम मुझे मत मारो मैं तुम्हारे काम आऊॅगा और तुम्हारे भरोसे का नौकर बन कर तुम्हारी सेवा करूॅगा।"

इस पर ल्यूबिम ज़ारेविच बोला — "क्या तुम्हें पता है कि मेरे भाई कहॉ हैं।"

भेड़िया बोला — "हॉ वे तो बहुत दिन हुए मारे जा चुके हैं पर हम फिर से उनको ज़िन्दा करेंगे जब हम सुन्दर राजकुमारी को जीत लेंगे।"

ल्यूबिम ज़ारेविच बोला — "पर हम यह करेंगे कैसे?"

भेड़िया बोला — "सुनो तुम अपना घोड़ा यहॉ छोड़ दो... ।"

"यह कैसे हो सकता है? बिना घोड़े के मैं क्या करूॅगा?"

"तुम बस मेरी बात सुनो। मैं अपने आपको घोड़े में बदल लूॅगा और तुमको ले चलूॅगा क्योंकि जिस काम के लिये हम जा रहे हैं यह घोड़ा उस काम के लिये ठीक नहीं है।

उस शहर में जहॉ राजकुमारी रहती है वहॉ दीवारों से शहर में लगी सारी घंटियों तक डोरियॉ जाती हैं। और हमें वे सब डोरियॉ

उनको बिना छुए ही कूद कर पार करनी हैं चाहे वह कितनी सी भी छोटी क्यों न हो नहीं तो हम गिरफ्तार हो जायेंगे।"

ल्यूबिम ज़ारेविच को तुरन्त ही यह अहसास हो गया कि भेड़िया अक्लमन्दी की बात कर रहा है सो वह राजी हो गया।

"तो चलो फिर चलते हैं।"

और वे वहॉ से चल दिये जब तक वे शहर की सफेद पत्थर की दीवार के पास आये और ल्यूबिम ज़ारेविच ने उस दीवार को देखा तो वह तो डर गया। उसके मुॅह से निकला — "हम इतनी ऊॅची दीवार को कैसे लॉघेंगे। यह तो नामुमकिन है।"

भेड़िया बोला — "इसको लॉघना मेरे लिये कोई मुश्किल काम नहीं है। पर इसको लॉघने के बाद और नयी मुश्किलें खड़ी हो जायेंगी – जैसे तुम्हारे प्यार में पड़ जाने के बाद।

तब तुम्हें "ज़िन्दगी के पानी में" नहाना पड़ेगा। उसमें से कुछ अपने भाइयों के लिये भी ले जाना पड़ेगा। थोड़ा सा "मौत का पानी" भी लेना पड़ेगा।"

उसके बाद वे सुरक्षित रूप से बिना किसी पत्थर को छुए शहर की दीवार लॉघ गये। ल्यूबिम ज़ारेविच महल के पास रुका और सुन्दर राजकुमारी के महल में गया। जैसे ही वह पहले कमरे में घुसा तो उसने देखा कि बहुत सारी दासियॉ गहरी नींद सोयी हुई हैं पर राजकुमारी वहॉ नहीं है।

फिर वह दूसरे कमरे में घुसा तो वहॉ भी बहुत सारी दासियॉ गहरी नींद सोयी हुई थीं पर राजकुमारी यहॉ भी नहीं थी। इसके बाद ल्यूबिम तीसरे कमरे में गया तो वहॉ उसको राजकुमारी मिली। वह वहॉ सो रही थी।

उसकी सुन्दरता को देख कर तो ल्यूबिम के दिल में आग सी लग गयी। वह तो उसके प्रेम में पड़ गया था कि वहॉ से हिल भी नहीं सका। फिर वह इस डर की वजह से कि कहीं वह पकड़ा न जाये वह वहॉ से ज़िन्दगी और मौत का पानी लाने बागीचे में चला गया।

वहॉ जा कर वह पहले ज़िन्दगी के पानी से नहाया फिर उसने दो डिब्बे भर कर दोनों पानी लिये और अपने भेड़िये के पास लौट आया।

जब वह अपने घोड़े बने भेड़िये पर बैठ रहा था तो भेड़िया बोला — "तुम बहुत भारी हो गये हो। इस तरह से हम वापस दीवार नहीं लॉघ सकते बल्कि उससे टकरा जायेंगे और सबको जगा देंगे। फिर भी तुम उन सबको मार दोगे।

और जब ये सब मर जायेंगे तो एक सफेद घोड़े को पकड़ने का ध्यान रखना। उस समय मैं तुम्हें लड़ने में सहायता करूॅगा। जैसे ही हम अपने तम्बू के पास पहुॅचेंगे तुम अपना घोड़ा ले लेना और मैं सफेद घोड़े पर बैठ जाऊॅगा।

जब हम सारे सिपाहियों को मार देंगे तो राजकुमारी अपने आप ही तुमसे मिलने आयेगी और बहुत ज़्यादा प्यार जताते हुए तुम्हारी पत्नी बनने के लिये कहेगी।"

इसके बाद उन्होंने शहर की दीवार लॉघने की कोशिश की पर उनसे वहॉ की डोरियॉ छू गयीं। बस सारे शहर की घंटियॉ बज उठीं और नगाड़े बज उठे।

हर आदमी जाग उठा और अपने अपने हथियार ले कर कूद कर महल से बाहर आ गया। कुछ लोगों ने महल का दरवाजा खोल दिया ताकि राजकुमारी पर कोई मुसीबत न आ पड़े।

इसी समय राजकुमारी भी जाग गयी और यह देख कर कि एक नौजवान उसके कमरे में था उसने अलार्म बजा दिया। अलार्म सुन कर सारे दरबारी उसके पास आ गये। बहुत सारे नाइट्स भी वहॉ आ गये।

उसने उनसे कहा — "ओ बहादुर योद्धाओ जाओ और उस नौजवान को पकड़ो और उसका सिर काट कर मेरे पास लाओ ताकि उसको उसकी बहादुरी की सजा मिल सके।"

उन बहादुर नाइट्स ने राजकुमारी से वायदा किया और कहा — "हम तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक हम उसको मार नहीं लेंगे और उसका सिर ला कर आपको नहीं दे देंगे चाहे वह किसी सेना के बीच में ही क्यों न हो।"

राजकुमारी ने उनको भेज दिया और खुद ऊपर छज्जे पर चली गयी और अपनी सेना की तरफ देखा और उस अजनबी की तरफ देखा जो उसके कमरे में आने की हिम्मत कर सका और उसको सोते में सहलाने की हिम्मत कर सका।

राजकुमारी ने जब अलार्म बजाया था तब तक ल्यूबिम ज़ारेविच अपने भेड़िये वाले घोड़े पर बहुत दूर जा चुका था। वह अपने तम्बू की तरफ आधे रास्ते तक पहुँच गया था।

जब उसने उनको आते देखा तो वह पलटा और इतने सारे नाइट्स को मैदान में देख कर गुस्से में भर गया। वे सारे लोग उसके ऊपर टूट पड़े पर ल्यूबिम ज़ारेविच उनसे अपनी तलवार से बहुत बहादुरी से लड़ा और उसने बहुतों को मार दिया

उसके घोड़े ने अपने खुरों से उससे ज़्यादा लोगों को मार दिया। उसने करीब करीब सारे छोटे छोटे नाइट्स को खत्म कर दिया।

तब ल्यूबिम ज़ारेविच ने एक अकेला नाइट एक सफेद घोड़े पर सवार देखा जिसका सिर बीयर के एक बैरल[55] के समान था वह उसी की तरफ बढ़ा चला आ रहा था। पर ल्यूबिम ज़ारेविच ने उसको भी मार दिया।

[55] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter – see its picture above.

फिर वह उस सफेद घोड़े पर बैठ गया और उसने अपने भेड़िये घोड़े को आराम करने के लिये छोड़ दिया। जब वे आराम कर चुके तो वे अपने तम्बू की तरफ चले गये।

जब सुन्दर राजकुमारी ने ल्यूबिम ज़ारेविच को अकेले ही इतनी बड़ी सेना को मारते देखा तो उसने और बड़ी सेना इकट्ठी की और उसको उससे लड़ने के लिये भेजा। उसके बाद वह फिर से अपने छज्जे पर चली गयी।

उधर जब ल्यूबिम ज़ारेविच अपने तम्बू में आया तो उसके भेड़िये ने अपने आपको एक ऐसे बहादुर नाइट में बदल लिया जैसा किसी ने न देखा हो सिवाय परियों की कहानियों में सुनने के।

उधर सुन्दर ज़ारेवना की बहुत बड़ी सेना बढ़ी चली आ रही थी जिनके सिपाहियों को गिनना भी मुश्किल था।

ल्यूबिम ज़ारेविच और भेड़िया अपने सफेद घोड़े पर चढ़े और उनके हमले का इन्तजार करने लगे। जब सुन्दर ज़ारेवना की सेना पास आ गयी तो ल्यूबिम ने सेना की दॉयी तरफ लेते हुए भेड़िये को उसकी बॉयी तरफ पर हमला करने के लिये कहा।

तभी उन्होंने अचानक ज़ारेवना की सेना पर भयानक रूप से हमला कर दिया और उनको गाजर मूली की तरह से काटना शुरू कर दिया। वे तब तक ऐसा करते रहे जब तक मैदान में केवल दो ही लोग रह गये। एक तो भेड़िया और दूसरा ल्यूबिम ज़ारेविच।

इस भयानक लड़ाई के बाद बहादुर भेड़िये ने ल्यूबिम ज़ारेविच से कहा — "देखो वह सुन्दर ज़ारेवना यहाँ खुद ही चली आ रही है। अब वह तुमसे शादी करने के लिये कहेगी। अब उससे कुछ ज़्यादा डरने की जरूरत नहीं है।

मैंने अपने बहुत से अपराध अपनी बहादुरी से ढक दिये हैं। अब तुम मुझे विदा दो और मुझे अपने राज्य जाने की इजाज़त दो।"

सो ल्यूबिम ज़ारेविच ने उसकी सलाह और उसकी सेवाओं के लिये उसे धन्यवाद दिया और उसको विदा दी।

उसके बाद भेड़िया गायब हो गया। और जब ल्यूबिम ज़ारेविच ने सुन्दर ज़ारेवन को अपनी तरफ आते देखा तो वह बहुत खुश हुआ और उससे मिलने चला।

उसने उसका हाथ अपने हाथ में लिया उसको गले लगाया और कहा — "अगर मैं तुम्हें प्यार न करता होता तो मैं यहाँ नहीं रहता। पर तुमने देखा कि मेरा प्यार तुम्हारी सेना से ज़्यादा मजबूत था।"

सुन्दर ज़ारेवना बोली — "ओ बहादुर नाइट तुमने मेरी सारी ताकतें जीत लीं मेरे सारे ताकतवर मुख्य मुख्य नाइट मार दिये जिन पर मेरी सारी उम्मीदें टिकी हुई थीं। अब मेरा शहर खाली हो गया है। मैं इसे छोड़ दूँगी और तुम्हारे साथ चलती हूँ। आज से तुम मेरे रक्षक हो।"

ल्यूबिम ज़ारेविच बोला — "मैं खुशी से तुम्हें अपनी पत्नी स्वीकार करता हूँ। आज से मैं तुम्हारी और तुम्हारे राज्य की वफादारी से रक्षा करूँगा।"

इस तरह से बात करते हुए वे अपने तम्बू में घुसे और खाना खाने और आराम करने के लिये बैठ गये।

अगली सुबह सवेरे ही वे अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए और ऐलीदार के राज्य को रवाना हो गये।

रास्ते में ल्यूबिम ज़ारेविच ने कहा — "ओ सुन्दर राजकुमारी, मेरे दो बड़े भाई थे जिन्होंने तुमको पाने की उम्मीद में मुझसे पहले ही घर छोड़ दिया था। वे यहीं कहीं जंगलों में मारे गये।

अब उनके मरे हुए शरीर कहाँ हैं मैं नहीं जानता पर मैं अपने साथ "ज़िन्दगी का पानी" और मौत का पानी" साथ ले कर आया हूँ और उन्हें ज़िन्दा करना चाहता हूँ। वे हमारे रास्ते ज़्यादा दूर नहीं हो सकते।

क्या तुम मेरे साथ उस खम्भे तक चलना पसन्द करोगी जिस पर कुछ लिखा हुआ है और वहाँ मेरा इन्तजार करोगी। मैं तुमको जल्दी ही आ कर मिलता हूँ।"

इतना कह कर ल्यूबिम ज़ारेविच उस सुन्दर राजकुमारी को वहीं छोड़ कर अपने भाइयों के मरे हुए शरीर ढूँढने चला गया। आखिर वे उसको जंगल में पेड़ों के नीचे मिल गये।

मौत का पानी छिड़कने के बाद उनकी हड्डियाँ एक साथ बढ़ने लगीं। उसके बाद उसने उन पर ज़िन्दगी का पानी छिड़क दिया जिससे वे ज़िन्दा हो गये।

तब अक्सोफ़ और हत ज़ारेविच दोनों एक साथ बोले — "भाई हम लोग यहाँ कितनी देर सोते रहे?"

ल्यूबिम ज़ारेविच बोला — "ओह तुम तो यहाँ हमेशा के लिये सोते रहते अगर मैं तुम्हें यहाँ ढूँढने नहीं आता तो।"

तब उसने उनको अपना सारा किस्सा बताया कि कैसे उसने भेड़िये को जीता फिर कैसे सुन्दर राजकुमारी को जीता फिर कैसे उनके लिये जिन्दगी और मौत का पानी ले कर आया।

उसके बाद वे अपने तम्बू में चले गये जहाँ सुन्दर ज़ारेवना उनका इन्तजार कर रही थी। वहाँ पहुँच कर सबने बहुत खुशियाँ मनायीं और बढ़िया खाना खाया।

जब वे सब आराम करने के लिये लेट गये तो अक्सोफ़ ज़ारेविच ने अपने भाई हत ज़ारेविच से कहा — "हम अपने पिता ऐलीदार और माँ मिलीतीसा के पास कैसे जायेंगे? हम उनको जा कर क्या बतायेंगे?

हमारा छोटा भाई तो यह कह सकता है कि वह राजकुमारी को ले कर आया है पर हम? तो हमारे लिये यह बेइज़्ज़ती की बात नहीं होगी? क्या यह अच्छा नहीं होगा कि हम अभी उसको मार दें?"

और बस दोनों ने मिल कर ल्यूबिम ज़ारेविच के टुकड़े टुकड़े कर दिये और उसके टुकड़े हवा में फेंक दिये। फिर उन्होंने राजकुमारी को धमकी दी कि अगर उसने यह भेद किसी पर खोला तो उसका भी यही हाल होगा।

फिर हत ने ज़िन्दगी और मौत का पानी लिया और अक्सोफ़ ने राजकुमारी को लिया।

इस तरह से वे अपने पिता के राज्य को चल दिये। वहॉ आ कर वे "वर्जित घास के मैदान" में गये और वहॉ जा कर अपने तम्बू गाड़ दिये। ज़ार ऐलीदार ने यह जानने के लिये अपने दूत भेजे कि वहॉ किसने अपने तम्बू गाड़े हैं।

इसका जवाब हत ने दिया — "हमारे पिता ज़ार से कहो कि हत और अक्सोफ़ एक सुन्दर राजकुमारी के साथ वापस आ गये हैं और हम लोग अपने साथ ज़िन्दगी और मौत के पानी भी साथ लाये हैं।"

ज़ार का दूत तुरन्त ही दरबार लौट गया और हत का सन्देश ज़ार को जा सुनाया। ज़ार ने पूछा कि क्या उसके तीनों बेटे आ गये हैं। दूत बोला — "योर मैजेस्टी वहॉ तो आपके केवल दो बड़े बेटे ही थे। तीसरा सबसे छोटा बेटा तो कहीं दिखायी नहीं दिया।"

फिर भी ज़ार बहुत खुश हुआ और अपनी पत्नी ज़ारीना को यह बताने गया कि उनके दो बड़े बेटे वापस लौट आये हैं।

ज़ार ऐलीदार और ज़ारीना मिलीतीसा उठे और अपने दोनों बेटों से मिलने चल दिये। उन्होंने उनसे गले मिल कर उनका स्वागत किया और महल आ कर एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया। यह दावत सात दिन और सात रात तक चली।

इसके बाद उन्होंने शादी के बारे में सोचना शुरू किया तो उसकी तैयारी के बारे में, मेहमानों बोयर[56] और सिपाहियों को बुलाने के बारे में भी सोचना शुरू किया।

पंखों वाला भेड़िया जानता था कि ल्यूबिम के भाइयों ने उसको मार डाला है। वह तुरन्त ही भागा गया और ज़िन्दगी और मौत के पानी ले कर आया।

उसने ल्यूबिम के मरे हुए शरीर के हिस्से इकट्ठे किये और उन पर मौत का पानी छिड़क दिया। इससे उसकी हड्डियाँ एक साथ बढ़ने लगीं। फिर उसने उनके ऊपर ज़िन्दगी का पानी छिड़क दिया। ज़िन्दगी का पानी छिड़कते ही वह बहादुर नौजवान उठ कर खड़ा हो गया जैसे कि उसको कुछ हुआ ही नहीं।

वह बोला — "अरे मैं तो कितनी देर तक सोता रहा।"

भेड़िया बोला — "तुम तो हमेशा के लिये सोते रहते अगर मैं तुम्हें जगाने के लिये नहीं आता तो।"

और उसने ल्यूबिम ज़ारेविच को वह सब बता दिया जो उसके भाइयों ने उसके साथ किया था। फिर उसने अपने आपको एक

[56] Boyar is the member of the old aristocracy in Russia, next in rank to a prince

घोड़े में बदला और ल्यूबिम से कहा — "जल्दी चलो। तुम उनको जरूर ही पकड़ लोगे। कल तुम्हारा भाई अक्सोफ़ ज़ारेविच राजकुमारी से शादी कर रहा है।"

ल्यूबिम तुरन्त ही वहॉ से चल दिया और घोड़े के रूप में भेड़िया कुलॉचें मारने लगा। भागते भागते वे ज़ार के शहर आये जहॉ आ कर ल्यूबिम घोड़े से उतर गया।

वहॉ से वह बाजार गया और एक गसली[57] खरीदी और एक ऐसी जगह जा कर बैठ गया जहॉ से राजकुमारी गुजरती।

जब राजकुमारी चर्च ले जायी जा रही थी तो ल्यूबिम ज़ारेविच ने गसली बजा बजा कर उस पर अपनी जवानी की घटनाऐं गानी शुरू कर दीं।

और जब सुन्दर राजकुमारी पास आ गयी तो उसने अपने भाइयों के बारे में गाया कि किस बेरहमी से उन्होंने उसको मारा और किस तरह से उनके पिता को धोखा दिया।

तब राजकुमारी ने अपनी गाड़ी वहॉ रुकवायी और अपनी नौकरानियों से गसली वाले अजनबी को बुलाने के लिये कहा और पूछने के लिये कहा कि वह कौन था और उसका क्या नाम था।

[57] Gusli. plural -s. : a Russian musical instrument of the zither class having approximately 28 gut strings and played with a keyboard – see its picture above.

पर बिना कोई जवाब दिये ल्यूबिम राजकुमारी के पास गया। जैसे ही राजकुमारी ने उसको देखा तो वह बहुत खुश हो गयी। उसने उसको अपनी गाड़ी में बिठा लिया और फिर वे उसके पिता के पास चले।

जब ज़ार ऐलीदार और ज़ारीना मिलीतीसा ने अपने बेटे ल्यूबिम ज़ारेविच को देखा तो खुशी के मारे उनका तो मुँह खुला का खुला रह गया। वे तो कुछ बोल ही न सके।

सुन्दर राजकुमारी ने कहा — "पिता जी वह अक्सोफ़ नहीं था जिसने मुझे जीता बल्कि वह ल्यूबिम ज़ारेविच था और वह भी ल्यूबिम ही था जो ज़िन्दगी और मौत के पानी ले कर आया और आपके दोनों बेटों को ज़िन्दा किया।" तब ल्यूबिम ज़ारेविच ने उनको अपने सफर का सारा हाल सुनाया।

उसके सफर का हाल सुन कर ज़ार ज़ारीना ने अपने दोनों बड़े बेटों अक्सोफ़ और हत को बुलाया और उनसे पूछा कि उन्होंने इस बुरी तरीके से व्यवहार क्यों किया पर उन्होंने इस इलजाम को झूठा बताया।

इस पर ज़ार को बहुत गुस्सा आ गया और उसने उनको फाटक पर मारने का हुकुम दे दिया। ल्यूबिम ज़ारेविच ने सुन्दर राजकुमारी से शादी कर ली और वे जितने साल ज़िन्दा रहे सुख से रहे।

8 किसान के बेटे इवान की कहानी[58]

एक गॉव में एक बहुत ही गरीब किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। उनके तीन साल से कोई बच्चा नहीं था। आखिर उस भली स्त्री के एक बेटा हुआ तो उन्होंने उसका नाम इवान रखा।

बेटा धीरे धीरे बढ़ने लगा। पर जब वह पॉच साल का भी हो गया तो वह चल नहीं पाया। यह देख कर उसके माता पिता बहुत दुखी थे। वे रोज प्रार्थना करते कि उनके बेटे की टॉगें ताकतवर हो जायें और वह चलने लगे पर उनकी प्रार्थनाओं से उनका बेटा बैठने तो लगा पर वह तैंतीस साल की उम्र तक चल नहीं पाया।

एक दिन किसान अपनी पत्नी के साथ चर्च गया। सो जब वह घर पर नहीं था तो उसके घर एक भिखारी आया और उसके मकान की खिड़की पर खड़ा हो कर किसान के बेटे इवान से भीख मॉगने लगा।

इवान बोला — "मैं तुमको खुशी से कुछ दे देता पर मैं अपने स्टूल से उठ नहीं सकता।"

भिखारी बोला — "तुम उठो तो और मुझे कुछ दो। तुम्हारे पैर तो बहुत मजबूत और ताकतवर हैं।"

---

[58] Story of Ivan, the Peasant's Son – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_4.html
From the Book "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets.

यह सुन कर इवान ने उठने की कोशिश की तो वह तो तुरन्त ही उठ गया। अपनी इस नयी ताकत को पा कर तो वह बहुत खुश हो गया। उसने उस आदमी को अपने घर के अन्दर बुलाया और उसे खाना खिलाया।

खाना खा कर भिखारी ने थोड़ी सी बीयर माँगी तो इवान तुरन्त ही उसके लिये बीयर भी ले आया। पर भिखारी ने उसे खुद नहीं पिया बल्कि इवान को ही उस बरतन को खाली करने के लिये कहा। इवान ने उसको पूरा का पूरा पी लिया।

तब भिखारी ने इवान से पूछा — "अब बताओ इवानुष्का इस बीयर को पीने के बाद तुम कितना ताकतवर महसूस कर रहे हो?"

इवान बोला — "बहुत ताकतवर।"

भिखारी बोला — "तब ठीक है अब मैं चलता हूँ।"

और यह कह कर भिखारी तो गायब हो गया और इवान वहीं का वहीं भौंचक्का सा खड़ा का खड़ा रह गया।

कुछ देर बाद उसके माता पिता चर्च से आ गये। जब उन्होंने अपने बेटे को ठीक देखा तो वे आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने उससे पूछा कि यह सब कैसे हुआ। तब इवान ने उनको पूरी कहानी बतायी।

बूढ़े माता पिता ने कहा कि वह कोई भिखारी नहीं था बल्कि कोई संत था जो उनके बेटे को ठीक कर गया। उस दिन उन्होंने बहुत अच्छा खाना खाया और बहुत खुशियाँ मनायीं।

अब इवान ने अपनी ताकत का इम्तिहान लेना चाहा तो वह बाहर निकला रसोईघर के बागीचे में पहुँच कर वहाँ लगा एक खम्भा पकड़ लिया और उसको ऊपर से मार कर उसकी आधी लम्बाई तक नीचे जमीन में गाड़ दिया। फिर उसको अपनी ताकत से उसको घुमाया तो सारा गाँव ही घूम गया।

फिर वह अपने घर में अन्दर चला गया और अपने पिता से बाहर जाने के लिये उनका आशीर्वाद माँगा। जब उसने बाहर जाने की बात की तो उसके बूढ़े माता पिता रोने लगे। उन्होंने उससे कहा कि वह कुछ दिन और रुक जाये।

पर इवान ने उनके आँसुओं पर कोई ध्यान नहीं दिया और कहा — "अगर आप मुझे जाने की इजाज़त नहीं देंगे तो मैं आपकी बिना इजाज़त लिये ही चला जाऊँगा।"

सो उसके माता पिता ने उसको आशीर्वाद दिया इवान ने प्रार्थना की चारों दिशाओं को सिर झुकाया और अपने माता पिता से विदा ली।

वह सीधा बाहर मैदान में गया और जहाँ जहाँ उसको अच्छा लगता रहा वहाँ वहाँ वह दस दिन और दस रात तक घूमता रहा। आखिर में वह एक बहुत बड़े राज्य में आ पहुँचा। वह उस शहर में घुसा ही था कि उसने बहुत ज़ोर का शोर सुना।

इस शोर को सुन कर तो वहॉ का ज़ार[59] भी कॉप उठा और उसको एक मुनादी पिटवानी पड़ी कि जो कोई भी इस शोर को बन्द करेगा वह उसको अपनी बेटी और उसके साथ अपना आधा राज्य दे देगा।

जब इवानुष्का ने यह सुना तो वह ज़ार के दरबार में पहुॅचा और वहॉ के चौकीदार से कहा कि वह ज़ार को खबर करे कि वह उस शोर को शान्त कर देगा।

चौकीदार यह बात कहने के लिये ज़ार के पास अन्दर गया तो ज़ार ने कहा कि उस नौजवान को उसके पास अन्दर लाया जाये।

इवान अन्दर गया तो ज़ार ने पूछा — "जो कुछ तुमने चौकीदार से कहा क्या वह सच है?"

"जी योर मैजेस्टी यह सच है। पर इसके लिये मुझे कोई और इनाम नहीं चाहिये सिवाय उस वजह के जिसकी वजह से यह शोर मच रहा है।"

इस पर ज़ार हॅसा और बोला — "दिया, अगर वह तुम्हारे किसी काम का हो तो।"

सो किसान के बेटे इवान ने ज़ार को सिर झुकाया और उससे विदा ले कर चला गया।

[59] Tzar or Tsar is the title of the King of Russia before 1917.

बाहर जा कर इवान ने चौकीदार से सौ मजदूर माँगे जो उसे तुरन्त ही मिल गये। उसने उन मजदूरों को हुकुम दिया कि वे ज़ार के महल के सामने एक बड़ा गड्ढा खोदें।

जब उन्होंने वहाँ गड्ढा खोदा और उसकी मिट्टी निकाल कर बाहर फेंकनी शुरू की तो उनको वहाँ एक लोहे का दरवाजा दिखायी दिया जिसमे एक ताँबे का छल्ला पड़ा हुआ था।

इवान ने यह दरवाजा केवल एक हाथ से ही उठा लिया। तो उसमें उसने एक बहुत ही बढ़िया घोड़ा देखा जो बहुत ही अच्छा सजा हुआ था और उस पर एक जिरहबख्तर[60] भी था।

जब घोड़े ने इवान को देखा तो वह उसके सामने अपने घुटनों पर गिर पड़ा और आदमी की आवाज में बोला — "ओ बहादुर नौजवान, किसान के बेटे इवान, मशहूर नाइट ल्यूकोपीरो[61] ने मुझे यहाँ रखा हुआ है और मैं बड़ी बेचैनी से तैंतीस साल से तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ।

तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और फिर जहाँ चाहो वहाँ जाओ। मैं तुम्हारी बड़ी वफादारी से सेवा करूँगा जैसी कि एक बार मैंने ल्यूकोपीरो की की थी।"

---

[60] Translated for the word "Armor". Armor is a protective garment normally worn in war. Normally it is made of iron.

[61] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. Knight Lukopero.

इवान ने उस अच्छे घोड़े पर जीन कसी, कढ़ाई की गयी लगाम लगायी और दस बढ़िया रेशम की पेटियॉ बॉधीं। फिर वह उसके ऊपर बैठ गया।

उसने उसको चाबुक मारी तो घोड़ा थोड़ा सा हिला और फिर जमीन से ऊपर उठाना शुरू किया तो जंगल से भी ऊॅचा उठ गया। उसने पहाड़ी छोड़ दी। उसकी पूॅछ से बड़ी बड़ी नदियॉ ढकी जा रही थीं, उसके कानों से बहुत सारी भाप निकल रही थी और उसके नथुनों से आग की लपटें निकल रही थीं।

आखिर इवान एक अनजाने देश में आ गया और उस देश में वह तीस दिन और तीस रात घूमता रहा। उसके बाद वह चीन के एक राज्य में आ गया।

वहॉ वह घोड़े से उतरा और उसको तो मैदान में छोड़ दिया और खुद वह बाजार चला गया जहॉ से उसने एक ब्लैडर[62] खरीदा। उसको अपने सिर पर पहन कर वह ज़ार के महल के चारों तरफ घूमता रहा।

जब लोगों ने वहॉ उसको इस तरह से देखा कि वह वहॉ कब आया, वह किस तरह का आदमी था और उसके माता पिता के क्या नाम थे। पर इवान ने उनके हर सवाल का जवाब यही दिया "मुझे नहीं मालूम।"

[62] Bladder is the part of a body in which urine s collected.

इससे उनको लगा कि यह कोई बेवकूफ है सो वे चीनी ज़ार के पास गये और जा कर उसको उसका हाल बताया। चीनी ज़ार ने उसको अपने पास बुलाया और उससे पूछा कि वह कहॉ से आया है और उसका क्या नाम है।

पर उसने उसको भी वही जवाब दिया "मुझे नहीं मालूम।" तो ज़ार ने उसको अपने दरबार से निकाले जाने का हुकुम दे दिया।

वहॉ की भीड़ में एक माली भी था। उसने ज़ार से प्रार्थना की कि उस आदमी को उसे दे दिया जाये ताकि वह उससे अपने बागीचे में कुछ काम ले सके। ज़ार ने उसको इजाज़त दे दी और वह माली उसको ले कर बागीचे में आ गया।

वहॉ आ कर उसने इवान को बागीचे में से बेकार की घास फूस निकालने का काम दे दिया और खुद बाहर चला गया।

इवान एक पेड़ के नीचे लेट गया और गहरी नींद सो गया। वह रात में उठा और बागीचे के सारे पेड़ तोड़ डाले। सुबह सवेरे जब माली उठा और उसने अपने बागीचे में चारों तरफ देखा तो वह तो उसे देख कर ही डर गया। उसका सारा बागीचा बरबाद हो चुका था।

वह किसान के बेटे इवान के पास गया और उसको गालियॉ देते हुए उससे पूछा — "ये पेड़ किसने गिराये?"

पर इवान ने फिर वही जवाब दिया — "मुझे नहीं मालूम।"

माली इस बात को ज़ार से कहते डरता था पर ज़ार की बेटी ने अपनी खिड़की से बाहर देखा और माली के बागीचे की यह बरबादी देखी तो बड़े आश्चर्य में पड़ गयी।

उसने माली से पूछा कि उसके बागीचे की यह बरबादी किसने की तो उसने जवाब दिया कि यह इस बेवकूफ "मुझे नहीं मालूम" ने उसके इतने अच्छे पेड़ों का सत्यानाश किया है।

पर उसने उससे यह भी प्रार्थना की कि वह यह बात अपने पिता से न कहे। उसने कहा कि वह उस बागीचे को पहले से भी अच्छा बना देगा।

इवान अगली रात सोया नहीं। वह जा कर कुँए से पानी भर कर लाया और उन टूटे पेड़ों में वह पानी डाल दिया। जब सुबह को सूरज उगा तो वे सारे टूटे पेड़ पत्तियों से ढक गये थे और माली का बागीचा पहले से कहीं ज़्यादा अच्छा हो गया था।

जब माली बगीचे में आया तो अचानक ही यह बदलाव देख कर आश्चर्यचकित रह गया पर उसने "मुझे नहीं मालूम" से फिर कोई सवाल नहीं पूछा क्योंकि वह तो जवाब देता ही नहीं था।

और जब ज़ार की बेटी सुबह जागी और अपने बिस्तर से उठी तो उसने फिर माली के बागीचे की तरफ देखा। इस बार तो इसका बागीचा पहले के मुकाबले में बहुत अच्छा लग रहा था।

यह देख कर उसने माली को बुलवाया और उससे पूछा कि रात भर में ही यह सब कैसे हुआ। माली बोला कि यह सब तो वह खुद

भी नहीं समझ सका। और ज़ार की बेटी कि यह "मुझे नहीं मालूम" कोई बहुत ही होशियार और अक्लमन्द आदमी है उससे अपने से भी ज़्यादा प्यार करने लग गयी। वह उसको अपने खाने में से खाना भेजने लगी थी।

चीनी ज़ार की तीन बेटियॉ थीं और उसकी तीनों ही बेटियॉ बहुत सुन्दर थीं।

उसकी सबसे बड़ी बेटी का नाम था दुआसा उसकी दूसरी बेटी का नाम था स्काओ और तीसरी सबसे छोटी बेटी जो किसान के बेटे के प्रेम में पड़ गयी थी उसका नाम था लोताओ।[63]

एक दिन ज़ार ने अपनी तीनों बेटियों को बुलाया ओर उनसे कहा — "मेरी प्यारी बेटियों, सुन्दर राजकुमारियों, अब समय आ गया है जब तुमको शादी कर लेनी चाहिये। मैंने तुमको यही कहने के लिये यहॉ बुलाया है कि तुम लोग अब अपने लिये देश विदेश के राजकुमारों में से अपना पति चुन लो।"

यह सुन कर ज़ार की दो सबसे बड़ी बेटियों ने दो ज़ारेविच[64] के नाम लिये जिनसे वे प्यार करती थीं। पर उसकी सबसे छोटी बेटी रो पड़ी और उसने अपने पिता से प्रार्थना की कि वह उसको "मुझे नहीं मालूम" को दे दें।

[63] Tzar's three daughters were – the eldest daughter was Duasa, the middle one was Scao and the youngest one was Lotao.

[64] Tzarevich means "the son of a Tzar" – means the son of a king , a prince.

अपनी तीसरी बेटी की यह प्रार्थना सुन कर ज़ार आश्चर्यचकित रह गया। वह बोला — "बेटी क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है कि तुम एक बेवकूफ "मुझे नहीं मालूम" से शादी करना चाहती हो जो एक शब्द भी नहीं बोल सकता?"

बेटी बोली — "वह चाहे कितना भी बेवकूफ क्यों न हो पर मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे उससे शादी करने की इजाज़त दे दें।"

ज़ार ने दुखी होते हुए कहा — "अगर तुम्हें और कुछ खुश नहीं करता तो तुम उसी से शादी कर लो। उससे शादी करने की मेरी तुम्हें इजाज़त है।"

ज़ार ने जल्दी ही उन राजकुमारों को बुलवा लिया जिनको उसकी बड़ी बेटियों ने पसन्द किया था। उन्होंने ज़ार का बुलावा तुरन्त ही स्वीकार कर लिया और वे बहुत जल्दी ही चीन चले आये। ज़ार की दोनों बेटियों की शादी धूमधाम से उनसे कर दी गयी।

राजकुमारी लोताओ की शादी इवान से कर दी गयी। उसकी बड़ी बहिनें उसके इस बेवकूफ को पति चुनने पर बहुत हँसीं।

कुछ समय बाद ही एक बड़ी सेना ने देश पर हमला कर दिया और उसके नाइट पोलकान[65] ने ज़ार से उसकी सुन्दर बेटी लोताओ से शादी की माँग की।

[65] Knight Polkan who invaded the country

उसने उसको धमकी दी कि अगर उसने उसको अपने बेटी राजी से नहीं दी तो वह उसके सारे देश में आग लगा देगा, तलवार से सब लोगों को मार देगा, ज़ार और ज़ारीना को जेल में डाल देगा और उसकी बेटी को जबरदस्ती ले जायेगा।

ये धमकियॉ सुन कर तो ज़ार बहुत डर गया। उसने तुरन्त ही अपनी सेना को इकट्ठा होने का हुकुम दिया और उसके दो बेटे उसको ले कर पोलकान से लड़ने गये। दोनों सेनाऐं आपस में मिलीं और दोनों में घमासान युद्ध हुआ। पोलकान की सेना ने चीन के ज़ार की सेना को हरा दिया।

इस समय राजकुमारी अपने पति किसान के बेटे इवान के पास आयी और बोली — "मेरे प्यारे दोस्त "मुझे नहीं मालूम"। वे लोग मुझे तुमसे छीनना चाहते हैं। नाइट पोलकान ने अपनी सेना के साथ हमारे देश पर हमला कर दिया है और अपनी तलवार से हमारी सेना को पछाड़ दिया है।"

इवान ने राजकुमारी से कहा कि वह उसको अकेला छोड़ दे और वह खुद खिड़की से कूद कर बाहर खुले मैदान में चला गया। वहॉ जा कर वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया —

सिवका बुरका हे, वसन्त के लोमड़े आ
घास के पत्ते की तरह यहॉ मेरे सामने खड़े हो

तभी एक घोड़े ने जमीन के अन्दर से कुदान लगायी जिससे सारी जमीन कॉप गयी। उसके कानों से भाप निकल रही थी और नथुनों से आग की लपटें।

किसान का बेटा उसके एक कान में से अन्दर घुसा और दूसरे कान में से एक ऐसा बहादुर नाइट बन कर बाहर निकल आया जिसके बारे में किसी की कलम ने न लिखा होगा और किसी कहानी में भी न कहा गया होगा।

वह घोड़े पर सवार हुआ और पोलकान की सेना की तरफ चल पड़ा। वहॉ जा कर वह उसकी सेना में अपनी तलवार घुमाने लगा और अपने घोड़े से सेना को अपने खुरों के नीचे कुचलने लगा और इस तरह से उसे राज्य के बाहर खदेड़ दिया।

यह देख कर चीन का ज़ार इवान के पास आया और उसको न जानते हुए भी अपने महल में बुलाया। इवान ने कहा — "मैं आपकी प्रजा नहीं हूॅ। मैं आपकी सेवा नहीं करूॅगा।" ऐसा कहते हुए वह वहॉ से चला गया। बाहर खुले मैदान में जा कर उसने अपने घोड़े को छोड़ दिया और खुद महल चला गया।

वहॉ जा कर वह जैसे खिड़की से बाहर आया था वैसे ही फिर से खिड़की से महल के अन्दर चला गया। ब्लैडर अपने सिर के ऊपर ओढ़ लिया और सोने के लिये लेट गया।

ज़ार ने इस जीत के लिये सब लोगों को एक बहुत बड़ी दावत दी जो कई दिन तक चली।

इत्तफाक की बात कि कुछ दिन बाद पोलकान ने उस देश पर एक नयी सेना के साथ फिर से हमला कर दिया और फिर से धमकी के साथ सबसे छोटी राजकुमारी का हाथ मॉगा।

ज़ार ने फिर से अपनी सेना को इकट्ठा किया और उसको पोलकान से लड़ने के लिये भेजा पर नाइट ने पहले की तरह से उसे फिर से हरा दिया। लोताओ बेचारी फिर से अपने पति के पास गयी और फिर से एक बार वही हुआ जैसे पहले हुआ था।

इवान ने फिर से पोलकान को पछाड़ कर उसकी सेना को राज्य के बाहर खदेड़ दिया। इस जीत पर ज़ार ने फिर से उसको अपने महल में आने के लिये बुलावा भेजा पर बिना उसकी प्रार्थना पर ध्यान दिये हुए इवान ने बड़े खुले मैदान में अपना घोड़ा छोड़ा और महल वापस चला गया और जा कर सो गया।

सो ज़ार ने एक इस जीत की खुशी में एक और दावत दी। उसने उस हीरो की जिसने पोलकान को हराया था उसकी बहुत तारीफ की कि वह किस तरह का हीरो था जिसने उसके राज्य को पोलकान से बचाया था।

कुछ समय बाद पोलकान ने तीसरी बार ज़ार के राज्य पर हमला कर दिया। ज़ार की सेना फिर हार गयी। इवान फिर खिड़की से कूदा लड़ाई के मैदान की तरफ भागा अपने घोड़े पर चढ़ा और दुश्मन से लड़ने जा पहुॅचा।

इस बार घोड़े ने आदमी की आवाज में कहा — "ओ किसान के बेटे इवान सुनो, इस बार हमें बहुत मुश्किल काम करना है। जितनी बहादुरी से तुम लड़ सकते हो लड़ो और पोलकान के सामने मजबूती से खड़े रहो नहीं तो तुम और चीनी सेना दोनों मारे जाओगे।"

यह सुन कर इवान ने अपने घोड़े को कोड़ा मारा और पोलकान की सेना के सामने चल दिया। वहॉ जा कर उसने पोलकान की सेना को दॉये बॉये दोनों तरफ से काटना शुरू कर दिया।

जब पोलकान ने देखा कि उसकी सेना हारती जा रही है तो उसको बहुत गुस्सा आ गया और वह इवान के ऊपर अपनी पूरी ताकत के साथ भूखे शेर की तरह टूट पड़ा।

और फिर दोनों के घोड़ों में वह लड़ाई शुरू हुई जिसको देख कर दोनों की सेनाऐं हक्का बक्का रह गयीं। वे दोनों बहुत देर तक लड़ते रहे।

पोलकान ने इवान के बॉये हाथ को घायल कर दिया। इस पर इवान ने अपना एक हथियार पोलकान के ऊपर फेंका जिसने पोलकान का दिल छेद दिया। उसके बाद उसने उसके सिर में मारा और उसकी सारी सेना को राज्य से बाहर खदेड़ दिया।

इवान अब चीन के ज़ार से मिला जो उसके सामने बहुत नीचे तक झुका और पहले की तरह से उसे अपने महल में बुलाया।

उसके बॉयी बॉह पर खून देख कर राजकुमारी लोताओ ने अपना रूमाल उस पर बॉध दिया और उसको महल में ही रहने के लिये कहा पर उसकी किसी भी बात पर कोई ध्यान दिये बिना इवान अपने घोड़े पर चढ़ा और वहॉ से चल दिया। इसके बाद उसने अपना घोड़ा मैदान में छोड़ा और खुद सोने चला गया।

ज़ार ने फिर से एक दावत का इन्तजाम किया। राजकुमारी लोताओ अपने पति के पास गयी और उसको जगाने की कोशिश की पर सब बेकार।

कि अचानक उसके सिर पर सुनहरी बाल देख कर उसको बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि किसी वजह से इवान के सिर पर से उसका ब्लैडर उतर गया था और जब वह उसके पास गयी तो उसके बॉयी बॉह पर अपना बॉधा हुआ रूमाल देखा तो वह समझ गयी कि यह वही था जिसने तीनों बार पोलकान को हराया और तीसरी बार में उसे मार दिया।

वह तुरन्त ही अपने पिता के पास भागी गयी और उसको महल में ले कर आयी। वह बोली — "देखिये पिता जी आप कहते थे कि मैंने एक बेवकूफ से शादी की है। आप इसके बालों की तरफ ज़रा ध्यान से देखिये और इसके घाव की तरफ देखिये जो इसको पोलकान से मिला था।"

तब ज़ार ने देखा कि यह तो वही था जिसने तीनों बार उसका राज्य बचाया था। यह देख कर ज़ार को बहुत खुशी हुई।

जब किसान का बेटा इवान जागा तो बादशाह ने उसको उसके सफेद गोरे हाथों से पकड़ा और उसको उसकी सेवाओं के लिये उसके बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

अब क्योंकि वह खुद काफी बूढ़ा हो चुका था सो उसने अपने सिर से ताज उतार कर इवान के सिर पर रख दिया। इवान राजगद्दी पर बैठा खुशी खुशी राज किया और अपनी पत्नी के साथ बहुत साल तक जिया।

9 सीधा आदमी और उसकी चालाक पत्नी[66]

एक बार की बात है कि रूस के एक गॉव में एक किसान और उसकी पत्नी रहते थे। वे बहुत गरीब थे। उनमें पति तो बछड़े की तरह सीधा था जबकि उसकी पत्नी सॉप की तरह से चालाक थी। वह अपने पति को छोटी छोटी बातों पर बुरा भला कहती रहती थी।

एक दिन डबल रोटी बनाने के लिये वह अपनी पड़ोसन से कुछ मक्का मॉग कर लायी। वह मक्का उसने अपने पति को पिसवाने के लिये चक्की पर ले जाने के लिये दी।

चक्की वाले ने मक्का पीस दी पर उससे उनकी गरीबी की वजह से उसकी पिसाई के कुछ भी पैसे नहीं लिये। किसान अपना आटे से भरा बरतन सिर पर रख कर घर लौटने लगा कि अचानक बहुत तेज़ हवा चल निकली और एक पल में ही बरतन में से उसका सारा आटा उड़ गया।

वह घर गया और सारी बात अपनी पत्नी को बतायी। पत्नी तो यह सुन कर बहुत गुस्सा हो गयी। उसने अपने पति को केवल बहुत

---

[66] The Mild Man and His Cantankerous Wife – a folktale from Russia, Asia.
Taken from the Web Site :
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_8.html
From the Book "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets.

डॉटा ही नहीं बल्कि उसको बड़ी बेरहमी से पीटा भी। वह उसको बराबर धमकी भी देती रही।

आखिर जब वह यह करते करते थक गयी तब उसने उसको हवा के पास जाने के लिये कहा जिसने उनका आटा उड़ाया था और कहा कि वह हवा से या तो उसके बदले में पैसे मॉग कर लाये या फिर उतना ही आटा ले कर आये जितना कि उसके बरतन में था।

बेचारा किसान जिसकी हड्डियॉ अब तक पत्नी की मार से दुख रही थीं रोता हुआ और अपने हाथों को मलता हुआ घर से बाहर चल दिया। पर वह किधर को जाये यह उसको पता नहीं था।

चलते चलते आखिर वह एक बड़े अॅधेरे जंगल में आ गया जिसमें वह इधर उधर घूमता रहा। काफी देर तक इधर उधर घूमने के बाद उसको एक बुढ़िया मिली।

वह बोली — "ओ भले आदमी तुम कहॉ जा रहे हो और यहॉ इस अॅधेरे जंगल में अपना रास्ता कैसे ढूॅढोगे। तुम इस देश में आये ही क्यों हो जहॉ कोई चिड़िया भी नहीं उड़ती और कोई जंगली जानवर भी कभी कभी ही दिखायी देता है।"

आदमी बोला — "ओ मेरी अच्छी मॉ, मुझे यहॉ जबरदस्ती खदेड़ा गया है। मैं कुछ मक्का ले कर उसे पिसवाने के लिये चक्की पर गया था।

जब उसका आटा पिस गया तो मैंने उसको अपने बरतन में भर लिया और घर जाने लगा कि तभी बहुत ज़ोर से हवा चली और वह

मेरे बरतन का सारा आटा उड़ा कर ले गयी। जब मैं बिना आटे के घर पहुँचा और अपनी पत्नी को सब बताया तो उसने मुझे खूब डॉटा और खूब मारा।

फिर उसने मुझे हवा को ढूँढने भेजा और कहा कि मैं उससे कहूँ कि या तो वह मेरा आटा वापस करे या फिर उसके बदले में पैसे दे। इसलिये मैं हवा को ढूँढता हुआ इधर उधर घूम रहा हूँ। मुझे यह भी नहीं पता कि वह मुझे कहाँ मिलेगा।"

बुढ़िया बोली — "आओ मेरे साथ आओ। मैं हवाओं की माँ हूँ। मेरे चार बेटे हैं – पहला है पूर्वी हवा, दूसरा है दक्षिणी हवा, तीसरा है पश्चिमी हवा और चौथा है उत्तरी हवा। अब मुझे यह बताओ कि कौन से हवा ने तुम्हारा आटा उड़ाया है?"

किसान बोला — "माँ दक्षिणी हवा ने।"

तब बुढ़िया उस किसान को उस जंगल में और अन्दर तक ले गयी और एक छोटे से मकान तक ले आयी और बोली — "देखो मैं यहाँ रहती हूँ ओ किसान, तुम यहाँ कम्बल लपेट कर अँगीठी के पास बैठ कर थोड़ा गरम हो मेरे बच्चे अभी आते ही होंगे।"

"पर कम्बल में लिपट कर क्यों?"

"क्योंकि मेरा बेटा उत्तरी हवा बहुत ठंडा है वह जब आयेगा तो उसके आने से तुम जम जाओगे।"

कुछ देर बाद ही उस बुढ़िया के बेटे घर आने लगे। सबसे बाद में आया दक्षिणी हवा। बुढ़िया ने किसान को अँगीठी के पास से

बुलाया और अपने बेटों से कहा — "दक्षिणी हवा मेरे बेटे, तुम्हारे खिलाफ एक शिकायत आयी है। तुम गरीब लोगों को क्यों परेशान करते हो। तुमने इस आदमी के बरतन से इसका आटा उड़ा दिया है। तो या तो इसको उसके बदले में पैसा दो या फिर जैसे तुम चाहो वैसे उसका बदला चुकाओ।"

दक्षिणी हवा ने जवाब दिया — "ठीक है मॉ। मैं इसके आटे के बदले में इसको कुछ दूँगा।"

फिर उसने किसान को बुलाया — "सुनो ओ मेरे छोटे किसान लो यह टोकरी लो। इस टोकरी में वह सब कुछ है जिसकी इच्छा तुम कर सकते हो – पैसा रोटी सब तरीके का खाना पीना।

तुमको इससे बस यह कहना है "ओ टोकरी तुम मुझे यह दो या वह दो।" और यह टोकरी तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर देगी। तुमको तुम्हारे आटे का बदला मिल गया अब तुम घर जाओ।"

किसान ने दक्षिणी हवा को सिर झुकाया और अपने घर की तरफ चल दिया। जब वह अपने घर वापस आया तो उसने वह टोकरी अपनी पत्नी को दे दी — "लो प्रिये यह टोकरी लो। यह टोकरी तुम्हारे लिये है। इसमें तुम्हारे लिये वह सब कुछ है जिसकी इच्छा तुम कर सकती हो। बस इससे वह मॉग लो और यह टोकरी तुम्हें वह सब कुछ दे देगी।"

सो उस भली स्त्री ने वह टोकरी ली और बोली — "मुझे रोटी बनाने के लिये बहुत अच्छा सा आटा दो।"

तुरन्त ही टोकरी ने उसको उतना ही आटा दे दिया जितना उसको चाहिये था। फिर उसने उस टोकरी से कभी यह मॉगा तो कभी वह मॉगा और उस टोकरी ने उसको वह सब कुछ पल भर में ही दे दिया जो भी उसने उससे मॉगा।

कुछ दिनों के बाद उधर से एक कुलीन आदमी गुजरा तो उस भली स्त्री ने अपने पति से कहा कि वह उसको अपने घर शाम को खाना खाने के लिये बुलाये। और अगर वह नहीं लाया तो वह उसको इतना पीटेगी कि वह अधमरा हो जायेगा।

किसान बेचारा अपनी पत्नी की मार से डरता था सो वह गया और उस कुलीन आदमी को शाम के खाने के लिये बुलाने के लिये चला गया।

इस बीच उस भली स्त्री ने उस टोकरी से बहुत सारे तरीके के खाने और पीने की चीज़ें मॉगीं और उनको मेज पर सजा दिया और खुद वह खिड़की के पास बैठ कर अपने हाथ अपने गोद में रख कर अपबे पति और मेहमान का धीरज से इन्तजार करने लगी।

कुलीन आदमी को इस तरह से उस किसान के बुलावे को पा कर बहुत आश्चर्य हुआ। वह हॅसा और किसान के साथ उसके घर नहीं गया।

बल्कि बजाय इसके कि वह खुद किसान के घर जाता उसने अपने नौकरों को जो उसके साथ थे हुकुम दिया कि वे किसान के

साथ उसके घर खाना खाने जायें और उसको आ कर बतायें कि उसने उनके साथ कैसा बरताव किया।

मालिक का हुकुम पा कर कुलीन आदमी के नौकर किसान के साथ उसके घर चले गये।

जब वे उसके मकान में घुसे तो वे तो बहुत ही आश्चर्यचकित रह गये। क्योंकि उसके मकान से तो ऐसा लगता था कि वह बहुत गरीब होगा पर उसके खाने की मेज पर जो खाना लगा था उससे तो वह ऐसा लगता था जैसे वह कोई बहुत बड़ा आदमी हो। वे खाना खाने बैठ गये और बहुत आनन्द से खाना खाया।

पर उन्होंने देखा कि किसान की पत्नी को जब भी कभी भी कोई भी खाना चाहिये होता था तो वह एक टोकरी से मॉग लेती थी और जो वह मॉगती थी वह उसको तुरन्त ही मिल जाता था।

यह देख कर वे सब वहॉ से एक साथ नहीं गये। उन्होंने किसान और उसकी पत्नी के जाने बिना छिप कर अपने एक साथी को घर भेजा ताकि वह जल्दी से जल्दी वैसी ही एक टोकरी ले कर वहॉ आये।

इस पर वह आदमी तुरन्त ही दौड़ा गया और वैसी ही एक टोकरी ले कर वहॉ लौटा जैसी कि उस किसान की पत्नी के पास थी। और जब वह उस टोकरी को ले कर लौटा तो मेहमानों ने चुपके से किसान की टोकरी उठायी और अपनी लायी टोकरी उसकी जगह रख दी।

फिर उन्होंने किसान और उसकी पत्नी से विदा ली और अपने मालिक के पास लौट गये। उन्होंने उसे जा कर बताया कि उसने उनकी कितने अच्छे तरीके से खातिरदारी की थी।

उनके जाने के बाद किसान की पत्नी ने बचा हुआ खाना फेंक दिया और अगले दिन के लिये ताजा खाना बनाने की सोची।

सो अगले दिन वह टोकरी के पास गयी और उससे खाना मॉगना शुरू किया जो उसको चाहिये था पर उसने देखा कि उसकी टोकरी ने तो उसको कुछ भी नहीं दिया।

तो उसने अपने पति को बुलाया और बोली — "ओ बूढ़े सफेद दाढ़ी वाले, यह तुम मेरे लिये किस तरह की टोकरी ले कर आये हो। यह ठीक है कि इसने हमारी एक बार सेवा की है पर ऐसी टोकरी का क्या फायदा जो अब और कुछ नहीं देती।

तुम वापस हवा के पास जाओ और उससे हमारा आटा वापस करने के लिये कहो नहीं तो मैं तुम्हें मार मार कर मार दूँगी।"

सो बेचारा किसान हवा के पास फिर से गया। जब वह हवाओं की मॉ बुढ़िया के पास पहुँचा तो उसने उससे अपनी पत्नी की शिकायत की। बुढ़िया ने कहा कि वह उसके बेटे का इन्तजार करे वह अब जल्दी ही आने वाला होगा।

दक्षिण हवा जल्दी ही आ गया तो किसान ने अपनी पत्नी की शिकायत उससे भी की। हवा बोला — "ओ बूढ़े मुझे बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि तुम्हारी पत्नी बहुत ही खराब

और नीच है फिर भी मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। इसके बाद वह तुम्हें फिर नहीं मारेगी।

तुम यह सन्दूकची लो और घर जाओ और जब तुम्हारी पत्नी तुम्हारी पिटायी करे तो अपने सामने यह सन्दूकची रख लेना और ज़ोर से बोलना "पॉच सन्दूकची से बाहर निकलो और मेरी पत्नी को मारो।" और जब वे उसको खूब मार चुकें तब बोलना "पॉचों सन्दूकची के अन्दर जाओ।"

किसान ने हवा को बहुत नीचे तक सिर झुकाया और अपने घर चला गया।

जब वह घर आया तो वह बोला — "प्रिये देखो अबकी बार मैं तुम्हारे लिये बजाय टोकरी के एक सन्दूकची ले कर आया हूँ।"

यह सुन कर तो वह भली स्त्री और ज़्यादा गुस्से से भर गयी और बोली — "ओह सन्दूकची, वह तो ठीक है पर मैं इसका करूँगी क्या। तुम अपना आटा वापस क्यों नहीं लाये।"

कह कर उसने एक लोहे की सलाख उठा ली और उससे बूढ़े को मारने जा ही रही थी कि बूढ़ा चुपचाप सन्दूकची के पीछे खड़ा हुआ और बोला "पॉच सन्दूकची से बाहर निकलो और मेरी पत्नी को मारो।"

पल भर में पॉच नौजवान उस सन्दूकची में से बाहर निकल पड़े और उसकी पत्नी को मारने लगे। और जब पति ने देखा कि उन्होंने उसकी पत्नी को काफी मार लिया और उसकी पत्नी उससे दया की

भीख माँगने लगी तो वह बोला "पाँचों सन्दूकची के अन्दर जाओ।" तुरन्त ही वे पाँचों सन्दूकची में अन्दर चले गये।

अब किसान ने अपनी टोकरी के नुकसान के बारे में सोचा जिसे कुलीन आदमी के नौकर चुरा ले गये थे तो उसने सोचा कि वह उस कुलीन आदमी के पास जायेगा और अपने नुकसान की भरपाई करेगा। वह उसे लड़ने के लिये चुनौती देगा। सो वह उस कुलीन आदमी के पास पहुँच गया।

वहाँ जा कर उसने उसको लड़ाई की चुनौती दी तो वह आदमी किसान की बेवकूफी पर हँसा फिर भी उसने उसको लड़ाई के लिये मना नहीं किया क्योंकि वह भी कुछ खेल खेलना चाहता था। उसने किसान को मैदान में आने के लिये कहा।

किसान ने भी अपनी सन्दूकची अपनी बगल में दबायी और मैदान में आ पहुँचा और कुलीन आदमी का इन्तजार करने लगा।

कुलीन आदमी अपने कई नौकरों के साथ घोड़े पर सवार हो कर वहाँ आ पहुँचा। और जब वह किसान के पास आया तो उसने अपने नौकरों को मजाक में हुकुम दिया कि वह किसान को मारें।

किसान ने देखा कि वे सब उसकी हँसी उड़ा रहे थे और उसे मार रहे थे। यह देख कर वह कुलीन आदमी से बहुत गुस्सा हो गया और बोला — "आइये जनाब और मेरी टोकरी इसी समय मुझे वापस कर दीजिये नहीं तो आप सबका बहुत बुरा होगा। मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ।"

फिर भी उन्होंने उसकी पिटायी करनी नहीं छोड़ी तो वह चिल्लाया "पॉच सन्दूकची से बाहर निकलो और इन सबको अच्छी तरह से मारो।"

तुरन्त ही उस सन्दूकची से पॉच मजबूत नौजवान बाहर निकल पड़े और उन्होंने कुलीन आदमी के नौकरों की पिटायी करनी शुरू कर दी।

कुलीन आदमी को लगा कि वे तो उन लोगों को मार ही डालेंगे सो वह अपनी पूरी ताकत लगा कर बोला — "रुक जाओ रुक जाओ ओ मेरे अच्छे दोस्त रुक जाओ, सुनो तो। तुम अपने आदमियों को रोको और इनको फिर से सन्दूकची में बन्द करो। मैं तुम्हारी टोकरी अभी देता हूँ।"

इस पर किसान बोला — "पॉचों सन्दूकची के अन्दर जाओ।"

यह सुन कर सन्दूकची में से निकले पॉचों आदमी सन्दूकची के अन्दर चले गये। कुलीन आदमी ने अपने नौकरों को किसान की टोकरी लाने का और उसको किसान के देने का हुकुम दिया। किसान ने अपनी टोकरी ली और अपने घर वापस चला गया।

उसके बाद से वह हमेशा अपनी पत्नी के साथ शान्ति से रहा और गरीब भी नहीं रहा क्योंकि अब उसके पास उसकी टोकरी थी न।

10 शैम्याका का न्याय[67]

एक बार की बात है कि रूस के एक गॉव में आस पास में दो भाई रहते थे। उनमें से एक भाई अमीर था और एक भाई गरीब था।

एक दिन गरीब भाई अपने अमीर भाई से एक घोड़ा मॉगने गया ताकि वह उसके ऊपर जंगल से कुछ लकड़ी काट कर रख कर ला सके। उसके भाई ने घोड़ा दे दिया पर गरीब भाई ने उससे घोड़े का कालर भी मॉगा। इस पर अमीर भाई नाराज हो गया और उसको घोड़े का कालर नहीं दिया।

इस पर गरीब भाई ने उस घोड़े के पीछे स्ले[68] लगायी और उसको जंगल ले चला। वहॉ जा कर उसने इतनी सारी लकड़ी काटी कि घोड़ा उसको मुश्किल से खींच पा रहा था।

---

[67] The Judgment of Shemyaka – a folktale from Russia, Asia.
Taken from the Web Site :
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_14.html
From the Book "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets.
This tale is given in the book "Russian Popular Tales" also, by Anton Dietrich. It is availabale at Internet
["Tale of Shemyaka's Trial" is one of the best-known 17th century Russian novels.]

[68] Sleigh is a wheelless vehicle which is used in icy regions and is drawn by horses or powerful dogs – see its picture above.

जब वह घर आया तो उसने अपने घर का फाटक खोला पर उसका नीचे वाला तख्ता हटाना भूल गया जो उसके इधर उधर के खम्भों में बरफ अन्दर आने से बचाने के लिये लगे हुए थे। घोड़ा उस तख्ते से टकराया तो उसकी पूँछ कट गयी।

अपना काम खत्म होने के बाद गरीब आदमी अपने भाई का घोड़ा वापस करने गया। पर जब उसके भाई ने अपना घोड़ा बिना पूँछ के देखा तो उसने उसको लेने से मना कर दिया और जज शैम्याका के पास जा कर इस बात की शिकायत करने का फैसला किया।

गरीब आदमी को लगा कि अब जज उसको बुला भेजेगा और वह तो अब मुसीबत में पड़ जायेगा। वह बहुत देर तक सोचता रहा। उसके पास देने के लिये कुछ नहीं था सो उसने अपने भाई के साथ पैदल जाने का ही फैसला किया।

जब वे लोग जा रहे थे तो रात हो गयी सो वे एक सौदागर के घर रुके। अमीर भाई रात के खाने के लिये ले जाया गया और उसका ठीक से स्वागत हुआ। पर गरीब भाई को खाने को कुछ भी नहीं मिला और उसको रात को अँगीठी के ऊपर सोने को मिला।

सारी रात वह भूख से करवटें बदलता रहा। और आखिर वह अँगीठी पर से नीचे एक पालने में गिर पड़ा जो उसके बराबर में ही रखा हुआ था। उस पालने में सौदागर का बच्चा था। उसके गिरने

से वह बच्चा मर गया। जब सौदागर को यह पता चला तो वह बहुत नाराज हुआ।

अगली सुबह उनके साथ गरीब भाई को सजा दिलवाने के लिये वह भी जज शैम्याका के पास जाने के लिये तैयार हुआ।

अब ऐसा हुआ कि शहर जाने के रास्ते में तीनों को एक पुल पर से गुजरना था। गरीब भाई इस सबसे इतना ज़्यादा डरा हुआ था कि यह सोचते ही कि शैम्याका उसके साथ जाने क्या करेगा वह अपनी ज़िन्दगी खत्म करने के लिये पुल से नीचे कूद गया।

पर उसी समय एक नौजवान अपने बीमार पिता को नहलाने के लिये नहाने के घर ले जा रहा था। पुल से नीचे कूदते ही वह गरीब भाई उसकी स्ले में जा पड़ा और उसके गिरने से उस नौजवान का बीमार पिता कुचल गया और मर गया।

सो यह नौजवान बेटा भी सौदागर और अमीर भाई के साथ साथ यह शिकायत करने के लिये शैम्याका के पास चल दिया कि इस आदमी ने उसके पिता को मार डाला।

अमीर आदमी जज शैम्याका के सामने पहले आया और उसने शिकायत की कि उसके भाई ने उसके घोड़े की पूँछ खींच ली है।

गरीब भाई ने एक पत्थर लिया उसको एक तौलिये में बाँधा और अपने भाई के पीछे खड़े हो कर उसको अपने हाथ में जज को मारने इरादे से जज के सामने ऊपर उठाया कि अगर उसने उसकी तरफ अपना फैसला न सुनाया तो वह जज को उससे मार देगा।

जज को लगा कि वह पोटली रूबल[69] से भरी हुई थी और अगर उसने उस गरीब भाई की तरफ अपना फैसला सुनाया तो वह उसको वह रूबल से भरा तौलिया दे देगा।

सो उसने अमीर भाई से कहा कि वह अपना घोड़ा अपने भाई के पास ही रहने दे जब तक उसकी पूँछ फिर से बढ़ती है।

इसके बाद सौदागर अपने बच्चे के मरने की शिकायत करने के लिये आया तो गरीब भाई ने फिर से उसी तौलिये को ऊपर उठाया तो जज शैम्याका को फिर से यही लगा कि यह इस मामले के लिये भी मुझे कुछ पैसे देगा।

सो उसने फैसला सुनाया — "ओ सौदागर, तुमको अपनी पत्नी को इस गरीब भाई के घर भेज देना चाहिये जब तक इसके वहाँ बच्चा होता है। जब इसके बच्चा हो जायेगा तो फिर तुम पहले की ही तरह हो जाओगे।"

इसके बाद वह बेटा आया जिसके पिता के ऊपर यह गरीब भाई पुल पर से गिर पड़ा था और इस गिरने की वजह से वह मर गया था। उसने शिकायत की कि इस आदमी ने उसके पिता को कुचल कर मार डाला था।

गरीब भाई ने अपनी पत्थर बँधी पोटली वाला हाथ फिर जज के सामने उठाया तो जज को लगा कि यह आदमी इस मामले के लिये भी मुझे सौ रूबल देगा।

---

[69] Rouble is the currency of Russia.

सो उसने फैसला सुनाया कि वह बेटा उसी पुल पर खड़ा हो जाये और जब वह गरीब आदमी उस पुल के नीचे से गुजरे तो वह भी उसी तरीके से उस गरीब आदमी के ऊपर कूद कर उसको मार दे।

जज की सुनायी सजा के अनुसार गरीब भाई अमीर भाई के पास बिना उसका बिना पूँछ का घोड़ा लेने के लिये आया ताकि वह उसको तब तक रख सके जब तक उसकी पूँछ बढ़ती है।

पर अमीर भाई अपना घोड़ा देने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था सो बजाय अपना घोड़ा देने के उसने अपने भाई को पाँच रूबल, तीन बुशैल[70] मक्का और एक दूध देती हुई बकरी दे कर मामला सिलटाया।

फिर वह गरीब भाई सौदागर की पत्नी लेने के लिये सौदागर के पास गया तो सौदागर भी किसी भी हालत में अपनी पत्नी उसे देने को तैयार नहीं था सो उसने उसको पचास रूबल, एक गाय उसके बछड़े सहित और एक घोड़ी उसके बच्चे के साथ दे कर अपना मामला सिलटाया।

अब वह गरीब भाई उस बेटे के पास गया जिसका पिता उससे मर गया था और बोला — "आओ, जज ने कहा है कि तुम उसी

[70] Bushel is a unit of dry measure containing 4 pecks, equivalent in the US for 35.24 liters and in Great Britain for 36.38 liters (Imperial bushel) – see its picture above.

जगह पर खड़े हो जाओ जहॉ मैं खड़ा हुआ था और मैं उसके नीचे खड़ा होता हूॅ। फिर तुम मेरे ऊपर कूदो और मुझे मार दो।"

बेटे ने सोचा "कौन जानता है कि जब मैं पुल से नीचे कूदूॅ तो मै इसके ऊपर ही गिरूॅ। मैं इसके ऊपर गिरने की जगह नीचे जमीन पर भी तो गिर सकता हूॅ और खुद भी तो मर सकता हूॅ।"

सो उसने उस गरीब भाई से शान्ति से समझौता कर लिया। उसने उसको दो सौ रूबल, एक घोड़ा और पॉच माप मक्का दी और उससे छुटकारा पाया।

11 सोने की चाभी वाले राजकुमार पीटर और राजकुमारी मैगिलीन की कहानी[71]

एक बार की बात है कि फ्रांस में एक ऊँचे कुल में पैदा हुआ राजकुमार वोल्चवान अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसकी पत्नी का नाम था पैट्रोनीडा। उनके एक बेटा था जिसका नाम था पीटर।

जब पीटर छोटा ही था तो उसकी यह इच्छा थी कि उसको अन्दर एक नाइट[72] की ताकत आये और वह लड़ाई में अपने कारनामे दिखाये। सो जब वह बड़ा हुआ तो वह केवल बहादुरी के कारनामे ही करना चाहता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि वहाँ नैपिल्स[73] राज्य से रुइगैन्डुइस[74] नाम का एक नाइट आया। उसने पीटर की बहादुरी देखी तो उससे कहा — "राजकुमार पीटर, नैपिल्स में एक राजा है

---

[71] Story of Prince Peter With Golden Keys and the Princess Magilene – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site :
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Russian_Folktale_15.html
From the Book "The Russian Garland: Being Russian Folk Tales", Edited by Robert Steele. NY: Robert McBride. 1916. 17 tales collected from various booklets.
[My Note: It seems that this story is a short version of some large text as its coherency is not so good.]

[72] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

[73] Naples is a historical town of Italy situated on the south-western shore of the country.

[74] Ruiganduis – name of a Knight

जिसकी मैगिलीन[75] नाम की एक बहुत सुन्दर बेटी है। और यह राजा उन सब नाइट्स को बहुत सारा इनाम देता है जो उसकी बेटी की तरफ से लड़ते हैं।"

यह सुन कर पीटर अपने माता पिता के पास गया और नैपिल्स राज्य जाने के लिये उनका आशीर्वाद माँगा ताकि वह वहाँ जा कर एक नाइट के जैसे बहादुरी के काम सीख सके। और साथ में वहाँ के राजा की सुन्दर बेटी मैगिलीन की सुन्दरता भी देख सके।

बड़े दुख के साथ उन्होंने पीटर को नैपिल्स के लिये विदा किया। उन्होंने उससे कहा कि वह केवल भले लोगों से ही दोस्ती करे। फिर उन्होंने उसको कीमती जवाहरात जड़े तीन छल्ले दिये और एक सोने की जंजीर दी और विदा किया।

जब पीटर नैपिल्स राज्य में आया तो उसने एक होशियार काम करने वाले को एक नाइट की पोशाक और एक हैलमैट बनाने के लिये कहा जिसमें उसने उसको दो सोने की चाभियाँ बाँधने के लिये कहा।

उसके बाद वह टूनामैन्ट की जगह आया और वहाँ आ कर अपना नाम सोने की चाभियों वाला पीटर बताया और दूसरे नाइट्स के पीछे जा कर बैठ गया।

[75] Megilene – name of the Princess of the King of Naples

पहले सर अन्द्री स्किन्तोर[76] मैदान में आया और उसके मुकाबले में आया इंगलैंड के राजा का बेटा हेनरी[77]। अन्द्री ने हेनरी को इतनी ज़ोर से मारा कि वह तो अपने घोड़े से ही गिर पड़ा। फिर एक राजा का बेटा लैंडियोट[78] आया और उसने राजा के बेटे स्किन्तोर को नीचे गिरा दिया।

जब राजकुमार पीटर ने यह देखा तो वह लैंडियोट की तरफ दौड़ा और बहुत तेज़ आवाज में चिल्लाया — "सुन्दर राजकुमारी मैगिलीन और मैजेस्टीज़ अमर रहें और खुश रहें।"

और वह लैंडियोट पर इतनी गुस्से से और इतनी ज़ोर से गिरा कि उसने उसको और उसके घोड़े दोनों को जमीन पर गिरा दिया। और अपना भाला उसके दिल में घुसा दिया।

पीटर के इस काम की राजा ने बहुत तारीफ की और राजकुमारी मैगिलीन और वहॉ बैठे सभी लोगों ने तो उसकी बहुत ही ज़्यादा तारीफ की। इसके बाद वह राजा के बड़े बड़े नाइट्स में गिना जाने लगा।

जब राजकुमारी मैगिलीन ने उसकी वह शान और सुन्दरता देखी तो वह उसके प्यार करने लग गयी। उसने सोच लिया कि वह शादी करेगी तो उसी से करेगी। उसने यह बात अपनी दासी से भी कही।

[76] Andrie Skrintor – name of Knight
[77] Henry – name of the son of the King of England
[78] King's son Landiot

उस दिन के बाद से पीटर राजकुमारी मैगिलीन से रोज ही मिलने लगा। इस बीच अपने प्यार की निशानी के तौर पर उसने राजकुमारी को तीन अँगूठियाँ दीं और उसको साथ ले कर शहर के बाहर चला गया।

वे अपने साथ काफी सारा सोना चाँदी ले कर अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार हुए चले जा रहे थे। वे सारी रात चलते रहे। चलते चलते वे एक बहुत ही घने जंगल में आ पहुँचे जो पहाड़ों में फैला पड़ा था और समुद्र तक चला गया था।

यहाँ आ कर वे आराम करने के लिये रुक गये। राजा की बेटी घास पर लेट गयी। वह बहुत थक गयी थी सो लेटते ही सो गयी। पर राजकुमार पीटर उसके पास बैठ गया और उसको सोते हुए देखता रहा।

जब वह सो रही थी तो उसने देखा कि उसकी सोने की एक जंजीर में एक गाँठ बँधी हुई है। उस गाँठ को खोलने पर उसने देखा कि उसमें तो वे तीन अँगूठियाँ हैं जो उसने उसको दी थीं।

उसने उनको घास पर रख दिया और बस कुछ इत्तफाक ऐसा हुआ कि एक काला रैवन उड़ता हुआ वहाँ आया और उन अँगूठियों को ले कर उड़ कर एक पेड़ पर बैठ गया।

पीटर उस चिड़िया को पकड़ने के लिये पेड़ पर चढ़ा पर जैसे ही वह उसको पकड़ पाता कि वह एक दूसरे पेड़ पर जा कर बैठ

गया। इस तरह से वह एक पेड़ पर से दूसरे पेड़ पर उड़ कर बैठता रहा और फिर समुद्र के ऊपर उड़ गया जहॉ उसने वे अॅगूठियॉ पानी में गिरा दीं। इसके बाद वह खुद एक टापू पर आ कर बैठ गया।

राजकुमार पीटर ने उस रैवन का समुद्र के किनारे तक पीछा किया पर फिर उसने इधर उधर देखा तो उसको उस टापू तक ले जाने के लिये एक मछली पकड़ने वाली नाव मिल गयी। उसने उस नाव में बैठ कर टापू पर जाना चाहा पर उसको उसके पतवार नहीं दिखायी दिये।

पतवार न दिखायी देने पर वह उसको हाथ से ही खे कर टापू की तरफ बढ़ा चला कि तभी अचानक बहुत तेज़ हवा चली और वह उसको टापू की तरफ ले जाने की बजाय खुले समुद्र की तरफ ले गयी।

जब पीटर ने देखा कि वह जमीन से काफी दूर निकल आया है तो वह अपने बच जाने से बहुत नाउम्मीद हुआ और ऑसुओं और लम्बी लम्बी सॉसों के बीच बोला "ओह अपना दुश्मन तो मैं खुद ही हूॅ। मैंने वे अॅगूठियॉ उनकी सुरक्षा की जगह से क्यों निकालीं। मैंने तो अपनी खुशी अपने आप ही बरबाद कर ली।

मैं सुन्दर राजकुमारी को भी ले आया और उसको उस घने जंगल में अकेला छोड़ दिया। अब वहॉ तो जंगली जानवर उसको फाड़ खा जायेंगे। या फिर वह वहॉ रास्ता भूल जायेगी और भूख से

मर जायेगी। मैं तो खूनी हो गया जिसने एक सीधे सादे आदमी का खून बहा दिया।"

यह सोचते सोचते वह बहुत दुखी हो गया और लहरों में डूबने उतराने लगा।

तभी तुर्की देश का एक जहाज़ उधर आ निकला। जब उस जहाज़ के नाविकों ने एक आदमी समुद्र में डूबते उतराते देखा तो उस अधमरे आदमी को उठा कर अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया।

वे तब तक जहाज़ खेते रहे जब तक वे अलैक्ज़ेन्द्रिया[79] नहीं आ गये जहॉ उन्होंने पीटर को तुर्की के पाशा[80] को बेच दिया। पर पाशा ने पीटर को भेंट के तौर पर तुर्की के सुलतान को दे दिया।

तुर्की के सुलतान ने जब पीटर का सुन्दर रूप और खास व्यवहार देखा तो उसको अपना सीनेटर[81] बना लिया। उसके सुन्दर व्यवहार ने उसके लिये सबका प्यार जीत लिया।

अब हम राजकुमारी मैगेलीन के पास चलते हैं। जब राजकुमारी मैगिलीन नींद से जागी तो उसने पीटर को ढूँढा। उसने अपने चारों तरफ देखा पर उसे पीटर तो कहीं दिखायी ही नहीं दिया। वह दुख और नाउम्मीद सी रो पड़ी और जमीन पर गिर पड़ी।

[79] Alexandria is the coastal and a large town of Egypt on its far Northern coast on Mediterranean Sea.
[80] Pasha of Turkey
[81] Senator – a kind of Minister

आखिरकार वह उठी और अपनी पूरी ताकत लगा कर चिल्लायी — "ओ भले राजकुमार पीटर तुम कहाँ गये?" और इस तरह से रोती रोती वह बहुत देर तक इधर उधर भटकती रही।

इस भटकने में उसकी मुलाकात एक नन[82] से हुई तो उसने उससे अपनी एक हलके रंग की पोशाक के बदले में उसकी काले रंग की पोशाक माँगी।

उस काले रंग की पोशाक को पहन कर वह एक बन्दरगाह पर आयी। जहाँ से उसने एक जहाज़ पकड़ा और उस देश आयी जहाँ पीटर के माता पिता रहते थे।

वहाँ आ कर वह एक कुलीन स्त्री सुज़ाना[83] के साथ ठहर गयी। वहाँ उसने पहाड़ों में एक कौनवैन्ट[84] बनाया जिसका उसने नाम रखा "सेन्ट पीटर ऐन्ड पौल"। उसमें उसने एक अस्पताल खोला जिसमें वह अजनबियों को रखती थी। इस तरह मैगिलीन को उसकी दया और अच्छाइयों की वजह से सब लोग चाहने लगे।

और फिर एक दिन पीटर के माता पिता उसको मिलने के लिये आये और उसके लिये तीन अँगूठियाँ ले कर आये। उन्होंने उसको

---

[82] A nun is a member of a religious community of women, typically one living under vows of poverty, chastity, and obedience. She may have decided to dedicate her life to serving all other living beings, or she might be an ascetic who voluntarily chose to leave mainstream society and live her life in prayer and contemplation in a monastery or convent.

[83] Susanna, a noble lady

[84] Convent is a community of persons devoted to religious life under a superior – normally of females. Wherever they live that building is also called Convent. There Superior is called Abbess.

बताया कि उनके रसोइये ने एक मछली ख़रीदी जिसके अन्दर उसको ये तीन अँगूठियाँ मिलीं।

और क्योंकि ये तीनों अँगूठियाँ उन्होंने अपने बेटे पीटर को दी थीं इसलिये उनको डर है कि उनका बेटा पीटर समुद्र में डूब गया है। यह कह कर वे बहुत ज़ोर से रो पड़े।

उधर राजकुमार पीटर तुर्की के सुलतान के दरबार में बहुत दिनों तक रहा। फिर उसने सुलतान से अपने देश जाने की इजाज़त माँगी तो सुलतान ने सोने चाँदी और कीमती जवाहरात की बहुत सारी भेंटें दे कर उसको विदा किया।

पीटर ने फ्रांस का एक जहाज़ पकड़ा। उसने चौदह सन्दूकचियाँ ख़रीदीं उनमें नीचे थोड़ा सा नमक रखा और उसके ऊपर सोना और चाँदी रखा फिर उनके ऊपर नमक रखा और उन्हें बन्द कर दिया। नाविकों से उसने कहा कि उनमें केवल नमक था।

वह अपने देश तक बिना किसी परेशानी के चलता चला गया। जहाज़ ने फ्रांस के पास ही एक टापू पर जा कर लंगर डाला क्योंकि पीटर को समुद्र की बीमारी[85] थी।

वह उस टापू के किनारे पर ही घूम रहा था पर वहाँ वह अपना रास्ता भूल गया सो वह एक जगह जा कर लेट गया और सो गया। नाविक उसको बहुत देर तक उसका नाम पुकारते हुए उसको ढूँढते रहे पर जब वह उनको नहीं मिला तो वे अपने रास्ते चले गये।

[85] Translated for the words “Sea Sickness” – in this sickness a person gets dizzy and vomits a lot.

आखिर वे कौनवैन्ट आये और वहॉ उन्होंने उसकी वे नमक की सन्दूकचियॉ जमा कर दीं।

एक बार कौनवैन्ट में नमक की कमी पड़ी तो मैगिलीन ने उन सन्दूकचियों को खोलने का हुकुम दिया और जब वे खोली गयीं तो उनमें तो बहुत सारा खजाना मिला।

उस टापू पर जिस पर पीटर रह गया था वहॉ उसको कुछ और नाविक मिल गये। वे उसको कौनवैन्ट ले गये जहॉ वह राजकुमारी मैगिलीन के अस्पताल में रख दिया गया। वहॉ वह एक महीने रहा पर मैगिलीन को नहीं पहचान पाया क्योंकि उसका चेहरा हमेशा ही एक काले परदे से ढका रहता। पीटर वहॉ रोज रोता। इत्तफाक से राजकुमारी मैगिलीन भी पीटर को नहीं पहचान सकी।

एक दिन मैगिलीन अस्पताल में आयी और पीटर को रोते हुए देखा तो उसने उससे उसके रोने की वजह पूछी। पीटर ने उसके साथ जो कुछ भी हुआ था वह सब उसको बता दिया।

तब मैगिलीन उसको पहचान गयी और उसके पिता वोल्चवान और माता पैट्रोनीडा को यह कहते हुए बुला भेजा कि उनका बेटा सही सलामत था। उसके माता पिता जल्दी ही कौनवैन्ट दौड़े चले आये।

राजा की बेटी ने तब उनका अपनी शाही पोशाक में स्वागत किया। पीटर ने जब अपने माता पिता को देखा तो वह उनके पैरों

पर गिर पड़ा फिर उनके गले लग कर रोया। वे भी उसके साथ बहुत रोये।

लेकिन पीटर उठा उनके हाथ चूमे और बोला — "मेरे मालिक और पिता और मेरी मॉ यह लड़की नैपिल्स के राजा की बेटी है जिसके लिये मैं इतनी दूर आया।"

उसके बाद उनकी शादी हो गयी और वे बहुत दिनों तक सुख से रहे।

Some Books of Russian Folktales in Hindi

1 Roos Ki Lok Kathayen-1 / by Sushma Gupta
2 Roos Ki Lok Kathayen-2 / by Sushma Gupta
3 Roos kI Lok Kathayen-3 / by Sushma Gupta
4 Roos Ki Lok Kathayen-4 / by Sushma Gupta
5 Roosi Lok Kathayen. New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited.
Hindi Translation Pragati Prakashan, 1960. 160 p. Available at the Web Site : https://www.scribd.com/doc/110410668/roosi-lok-kathayein-Russian-Folk-Tales-Hindi
6 Heere Moti – Soviet Bhoomi Ki Jatiyon Ki Lok Kathayen.
New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited. 2010. 143 p.
Available at the Web Site :
https://archive.org/details/HeereMoti-Hindi-CollationOfSovietFolkTales

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**